दिसम्बर 1999

मूल्य 18/-

साधना सिद्धि विज्ञान

चण्डी विशेषांक

- शास्त्रोक्त दुर्गा पूजन
- अक्षय कवच महापूजा
- गर्भ रक्षा प्रयोग
- शहस्त्र चण्डी प्रयोग
- होम्योपैथिक चिकित्सा
- लक्षण विज्ञान

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥

- जर्मन होमियोपैथिक औषधियों के द्वारा गम्भीर एवं असाध्य रोगों का निदान
- विगत बारह वर्षों में देश विदेश के लाखों रोगियों द्वारा पुनः स्वास्थ्य प्राप्ति
- हानि रहित होमियोपैथिक चिकित्सा पद्धति द्वारा सन्तानहीन दम्पतियों का बिना शल्यक्रिया के सफल इलाज
- होमियोपैथिक चिकित्सा के क्षेत्र में बारह वर्षों की कठोर साधना द्वारा अनुभूत अचूक औषधियों से जननेन्द्रिय सम्बन्धी गम्भीर बीमारियों की सफल चिकित्सा

साधना होम्यो क्लीनिक

शॉप नं. 25, सुभाष मार्केट 6 नं. बस स्टाप, शिवाजी नगर, भोपाल
दूरभाष : 554925, 271116

परामर्श का समय

मध्यान्ह : 12 बजे से 3 बजे तक
सायं : 6 बजे से 9 बजे तक

विशेष : कृपया परामर्श हेतु पूर्व से समय लेकर ही आयें ।

साधना सिद्धि विज्ञान

वर्ष 01 | अंक 02 | माह-दिसम्बर 1999

- निखिलम् शरणम् गच्छामि 2
- सम्पादक की कलम से 3
- गुरु वाणी 4
- शास्त्रोक्त दुर्गा पूजन 5
- देवी महिमा 10
- दुर्गा चरित्रम् 13
- शतचण्डी अनुष्ठान 19
- शास्त्रोक्त हवन विधि 24
- गर्भ रक्षा प्रयोग 28
- मूर्ति रहस्य 31
- क्षमा प्रार्थना 34
- अक्षय कवच महापूजा 37
- स्तनों की बीमारियाँ : होम्योपैथिक निदान 42
- सवाल जवाब 51
- महाविद्या कवच 53
- सिद्धि कुञ्जिका स्त्रोत 55
- लक्षण विज्ञान 56
- योग 60
- ऋग्वेद में देवी महिमा 65
- स्त्रियों के लक्षण 67
- दीर्घ जीविता रहस्यम् 71

प्रेरणास्त्रोत
आदि गुरु श्री शंकराचार्य जी

सम्पादक
श्री अरविन्द

कार्यकारी सम्पादक
पं. लोकेश दीक्षित

उप सम्पादक
अजय सिंह

कार्यकारी विभाग
श्री अशोक सिसोदिया, अनिल सक्सेना, अवधेश, आत्माराम

प्रकाशक स्वामित्व एवं मुद्रक
डॉ. श्रीमती साधना सिंह
द्वारा
सहयोग ऑफसेट
227, हरेगोपाल कॉम्पलेक्स,
जोन-1, एम.पी.नगर,
भोपाल से मुद्रित एवं
साधना सिद्धि विज्ञान
3 प्लाट नं. 210 जोन-1
एम.पी.नगर, भोपाल से प्रकाशित

सभी विवादों के लिये न्याय क्षेत्र भोपाल मान्य होगा

मूल्य एक प्रति 18/-

वार्षिक सदस्यता 180/- (डाक व्यय सहित)

सम्पर्क

साधना सिद्धि विज्ञान

शॉप नं. 3 प्लाट नं. 210 जोन-1, एम. पी. नगर भोपाल-462011. दूरभाष : (0755) 576346, 591143

निखिलम् शरणम् गच्छामि

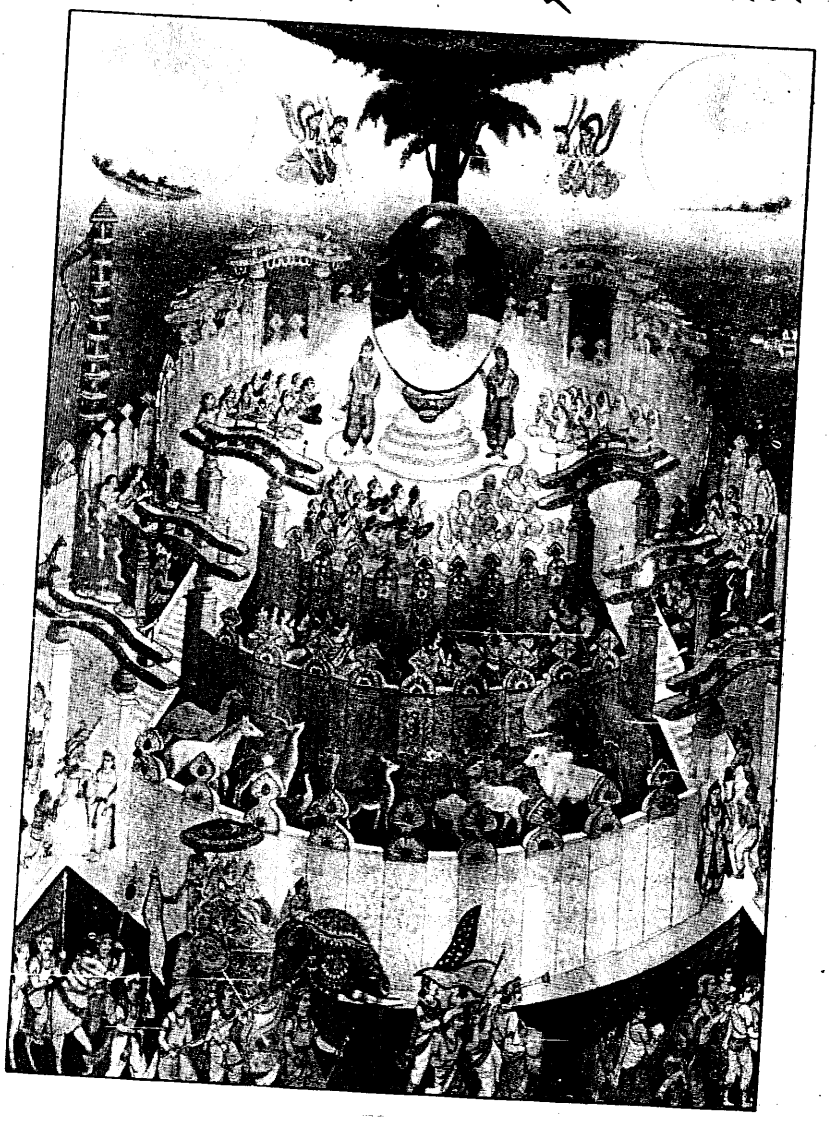

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परम् ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

वेदान्तार्थ-तदाभास-क्षीरनीर-विवेकिनम् ।
नमामि भगवत्पादं परमहंस-धुरन्धरम् ।।

डॉ. साधना सिंह

सम्पादक की कलम से

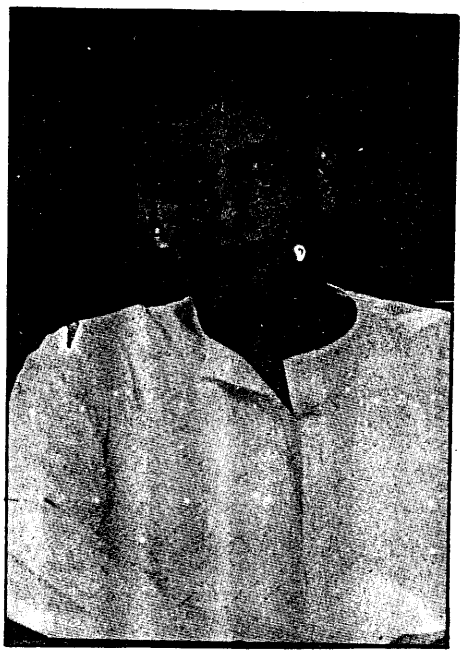

इस संसार में न तो साधकों की कमी है न ही ज्ञानियों और तपस्वियों की। आप आज जो कह या लिख रहे हैं उससे कई गुना ज्यादा कोई न कोई व्यक्ति किसी न किसी स्वरूप में भूतकाल में कर चुका होगा परन्तु प्रत्येक क्रिया श्रृंखलाबद्ध तरीके से ही सम्पन्न हुई थी। "साधना सिद्धि विज्ञान" से पहले भी अनेकों बार आप शक्ति विशेषांक पढ़ चुके होंगे या स्वयं शक्ति की साधना कर चुके होंगे परन्तु जन साधारण में अनेकों ऐसे व्यक्ति भी हैं जिनको बौद्धिक तौर पर या मानसिक तौर पर या फिर आध्यात्मिक स्तर पर शक्ति की आराधना करनी है। ऐसे ही जिज्ञासुओं को ध्यान में रखकर चण्डी विशेषांक का समायोजन किया गया है। जो व्यक्ति स्वयं माँ भगवती को समर्पित हो गया है या फिर जिसने शक्ति साधक के रूप में अत्यधिक ज्ञान अर्जित कर लिया है उनके लिये तो अनेकों ग्रंथ भी महत्व नहीं रखते, परन्तु जन साधारण में शक्ति चेतना का प्रवाह आज भी नितांत आवश्यक बना हुआ है। साधना सिद्धि विज्ञान के प्रथम अंक **रुद्र विशेषांक** की आपार सफलता के पश्चात् चण्डी विशेषांक का निर्माण किया गया है। हमारी तरफ से यह कोशिश की गई है कि यह विशेषांक जन साधारण में शक्ति के महत्व को समझा सके। इसीलिये भाषा को अत्यंत ही सरल और सामान्य रखा गया है। क्लिष्ट भाषा कार्य के संपादन को कम कर देती है। जिस प्रकार तुलसी दास जी ने रामायण को सामान्य भाषा में लिखकर जन-जन चेतना में विकसित करने का अद्भुत कार्य किया उसी प्रकार साधना सिद्धि विज्ञान पत्रिका सभी साधनाओं, देव शक्तियों एवं पूजा पद्धतियों को जन-जन तक पहुँचाना चाहती है।

दो शब्द

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री विषय विशेषज्ञों के विवेक, सम्बन्धित क्षेत्र में उनके विशेष अनुभव तथा शास्त्र सम्मत है। पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य आध्यात्मिक चेतना जागृत कर पाठकों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना है तथाकथित बुद्धिमानों के तर्क कुतर्कों में उलझकर विवाद उत्पन्न करना कदापि नहीं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री यदि ऐसे बुद्धिमानों व तार्किकों की कसौटी पर खरी न उतरे तो वे इसे काल्पनिक समझकर भूल जाँय। हमारा उद्देश्य साधना, जप, तप. योग, ध्यान, प्राणायाम जैसी सनातन पद्धतियों की उपयोगिता तथा जीवन में इसकी महत्ता को पाठकों तक पहुँचाना है ताकि वे इनका अधिक से अधिक लाभ ले सकें।

पत्रिका में प्रकाशित लेख दुर्लभ ग्रंथों पर आधारित हैं सभी लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। पत्रिका के स्वामी व प्रकाशक का किसी विवाद से कुछ लेना देना नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का निपटारा भोपाल न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा। बहुत से ऐसे लेख भी पत्रिका में प्रकाशित किये गये हैं जो लेखकों के स्वयं के अनुभव हैं जिसकी आलोचना करना व्यर्थ है। प्रकाशित साधना व प्रयोग आदि की सफलता/असफलता के लिये पत्रिका परिवार जिम्मेदार नहीं होगा।

सम्पादक

गुरु वाणी

आने वाला समय भारतवर्ष के लिये अत्यंत ही गौरवशाली दिखाई पड़ रहा है। अतिशीघ्र भारतवर्ष पुनः एक बार धर्म गुरु के रूप में विश्व में आध्यात्मिक चेतना की प्रचण्ड ज्वाला प्रवाहित करेगा और तब मेरे द्वारा शक्तिपात किये गये, दीक्षा प्रदान किये गये एवं धर्म कार्यों में लगाये गये शिष्य ही मार्गदर्शक बनेंगे। मेरा प्रत्येक शिष्य अपने आप में सम्पूर्ण है वह दीक्षा, प्रयोग और अनुष्ठान के द्वारा प्राप्त सभी परा शक्तियों को अपने आप में समाहित किये एक पूर्ण विद्रोही व्यक्तित्व बन चुका है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में उसकी सफलता निश्चित है। एक गुरु के रूप में यह मेरी भविष्यवाणी है, वरदान है एवं आशीर्वाद है। अब वह अंधकारमय समय समाप्त हो रहा है जब वेदों को, वेद सिद्धांतों को, सनातन धर्म की अनुष्ठान, यंत्र, मंत्र प्रणालियों को दुष्ट शक्तियों से भरे हुये व्यक्ति अपमानित और हेय दृष्टि

से देखते थे।

पश्चिमी जगत के समस्त वैज्ञानिक वेदों के महत्व को समझ चुकें हैं। हमारी मंत्र शक्ति के प्रभाव को अच्छी तरह परख चुकें हैं एवं विज्ञान मय मनीषी भी अब इस स्तर तक पहुँच चुकें हैं कि सूक्ष्म शक्तियों के लिये उन्हें वेदो, उपनिषदों और अन्य प्राच्य ग्रंथों का सहारा लेना पड़ रहा है। एक के बाद एक खोज इन ग्रंथों के महत्व को पश्चिमी जगत की बुद्धि ठीक कर रही है। बुद्धि के माध्यम से ही सही विज्ञान से आगे की स्थिति जिसे आप अविज्ञान कहते हैं प्रारम्भ होती है। अविज्ञान अनंत है, विज्ञान सदैव सीमित रहेगा। हर काल में विज्ञान की सीमा तो बदलें जायेगी परन्तु अविज्ञान फिर भी अनंत ही होगा। शक्तिहीन ही सिर झुकाकर चलते हैं, उन्हों की वाणी निम्न स्वर लिये होती है। वे ही द्वंद में जीते हैं, तर्क और कुतर्क में उलझे रहते हैं यह सब खेल मात्र शक्तिहीन अपनी निष्कृष्टता को ढँकने के लिये सम्पन्न करते हैं। मेरे शिष्यों को शक्ति पर हमेशा गर्व रहा है। आने वाला युग इन्हीं शक्ति सम्पन्न साधकों के द्वारा सिद्ध किया जायेगा। ये ही विज्ञान की सीमाओं को बढ़ायेंगे और जीवन में हर प्रकार की गुलामी की जंजीर तोड़कर खड़े होंगे। मैं अपने शिष्यों को बंद दिमाग वाला नहीं बनाना चाहता। न ही उन्हें भगवा पहनाकर पुस्तकों, मठों और परिवार विशेष का दास बनाना चाहता हूँ। मेरा उद्देश्य जीवित जागृत और चैतन्य संस्थानों का निर्माण करना है। हाँ, मनुष्य रूपी संस्थान। जो दूसरों को रोशनी प्रदान कर सके न कि सिर्फ अपने जीवन को ही साधन रहें।

शास्त्रोक्त दुर्गा पूजन

डॉ. साधना सिंह

वैदिक धर्म में शक्ति उपासना का विशेष महत्व है। पौराणिक ग्रंथों ने भी माँ जगतजननी के शक्ति स्वरूप की उपासना पर बल दिया है। अन्य किसी धर्म में नारी स्वरूप की

उपासना का इतिहास नहीं मिलता किन्तु सनातन धर्म नारी को शक्ति का रूप मानकर हमेशा से उनकी पूजा को महत्व देता आ रहा है। शास्त्रों में तो यहाँ तक कहा गया है कि- **''यत्र नरियेषु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''** अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहीं देवता निवास करते हैं। माँ शब्द ही अपने आप में इतना विस्तृत है कि सम्पूर्ण सृष्टि इसी में समाहित है। माँ का उच्चारण करते ही हृदय में एक निश्छलता व पवित्रतता का भाव जागृत होता है, वासना नष्ट होती है और मन शिशुवत हो जाता है। माँ ही अपने गर्भ द्वारा जीव को इस धरा पर अवतरित करती है और प्रारम्भिक ज्ञान देती है तथा स्तनपान कराकर उसका पालन-पोषण करती है, उसकी सभी प्रकार से रक्षा करने के लिये हर क्षण सचेष्ट रहती है। यदि बालक जरा सा भी रुदन कर दे तो माँ सब कुछ भूलकर उसे अपने आँचल में छिपा लेती है तथा खुद प्रचण्ड रूप धारण कर हर विपत्ति का नाश करने को उद्यत हो उठती है। जरा सोचिये कि एक शिशु की माँ जब अपने बच्चे के लिये इतना कुछ कर सकती है तो फिर सम्पूर्ण जगत की माँ जिसे हम जगतजननी कहते हैं उसके लिये कोई भी कार्य असम्भव नहीं है। वह तो इतनी करुणामयी है कि अपने पुत्रों (भक्तों) की पुकार अनसुनी कर ही नहीं सकती। बस जरूरत है तो सिर्फ उसे एक बार हृदय से पुकारने की। बस उसे एक बार बाल सुलभ निश्छलता से पुकारने की देर है फिर जीवन में बाधा, परेशानी, समस्या, पीड़ा, कष्ट, दुःख, रोग, शत्रु आदि रह ही नहीं सकते।

माँ भगवती हमारे रोम-रोम में विद्यमान है वह कवच के रूप में हमारे शरीर की बाहरी शत्रुओं से रक्षा करती है। वह राक्षसों का नाश करने के लिये कभी चण्डी का रूप धारण कर लेती है तो कभी महाकाली का। शास्त्र साक्षी है कि जब भी धरा पर अत्याचार व अन्याय बढ़ा है माँ दुर्गा अपने किसी न किसी रूप में प्रकट होकर असुरों के संहार का कारण बनी। माँ भगवती की आराधना तो स्वयं त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ने भी की थी। सरस्वती स्वरूप में उन्होंने ऋषि-मुनियो का उद्धार किया। समस्त पापों का विनाश करने वाली तथा ऋद्धि-सिद्धि, धन-धान्य, पुत्र आदि प्रदान करने वाली तथा सभी प्रकार की विपत्तियों का नाश करने वाली माँ भगवती की श्रद्धा भक्ति पूर्वक आराधना करने से मनुष्य इस लोक में नाना प्रकार के सुख भोगकर अन्त में मोक्ष को प्राप्त होता है इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है।

पूजन कैसे करें ?

साधक को चाहिये कि वह नवरात्रि के शुभ अवसर पर अथवा किसी भी शुभ तिथि व शुभ मुहूर्त में स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर आसन पर बैठें। पूजा स्थल को स्वच्छ कर के एक बाजोट में लाल वस्त्र बिछाकर उस पर माँ भगवती दुर्गा का चित्र स्थापित करें।

पवित्रीकरण -

सर्वप्रथम बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से पुष्प द्वारा अपने ऊपर जल छिड़कें तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभयन्तरः शुचिः ॥

आचमन-

अब क्रमशः निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुये आचमनी में जल लेकर तीन बार आचमन करें -

ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।
ॐ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।
ॐ क्लीं शिवतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

दिग्बन्धन -

आचमन के उपरान्त बायें हाथ में चावल लेकर दायें हाथ से उसे ढँककर निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता ।
ये भूता विध्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभे ॥

उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करने के बाद हाथ के चावलों को चारों दिशाओं में उछाल दें

गणपति आह्वान -

अपने समक्ष विध्नहर्ता भगवान् गणपति का चित्र अथवा सुपारी को गणपति का रूप मानकर स्थापित कर दें तथा हाथ में अक्षत व पुष्प लेकर दोनों हाथ जोड़कर गणपति का ध्यान करें। निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विध्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यःपठेत श्रृणुयादपिः ॥

उक्त मंत्रोच्चार के साथ भगवान गणपति को अक्षत व पुष्प अर्पित करें।

कलश स्थापन -

कलश स्थापित करने से पूर्व जहाँ कलश स्थापित करना है उस स्थान को दाहिने हाथ से स्पर्श करें। निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री पृथ्वी यक्ष पृथ्वीम् दृग्वहं पृथिवी माहि ग्वं सीः ।

अब उसी स्थान पर अक्षत रखकर उस पर कलश स्थापित करें। अब कलश पर कुंकुम, अक्षत व पुष्प चढ़ाकर दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये सभी देवी देवताओं का ध्यान करें -

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्र समाश्रितः ।
मूल तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृता ॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्त द्वीपा वसुन्धराः ।
ऋग्वेदोऽय यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्णवः ॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।
अत्र गायत्री सावित्री शांतिः पुष्टिकरी तथा ॥
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ।

ध्यान -

अब निम्न मंत्र का उच्चारण करत हुये माँ भगवती का ध्यान करें -

रक्ताम्भोधिस्थं पोतोल्लसदरूण सरोजाधिरूढ़ः कराब्जः ।
पाशं को दण्डं भिक्षद् भवगुण मणि मत्यंकुशं पञ्चबाणान् ॥
विभ्राणास्त्रक्कपालं त्रिनयनलसिता पीन वक्षोरूहाढ्या ।
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राण शक्तिः परात्रः ॥

अब हाथ में अक्षत व पुष्प लेकर माँ जगदम्बा का आह्वान करें। निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

आह्वान-

ॐ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्प निषर्दिनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकर प्रिये ॥
सर्व तीर्थमयंवारि सर्वदेव समन्वितम् ।
इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवी गणैः सहः ॥
दुर्गे देवि समागच्छ सानिध्यमहि कल्पय ।
बलिं पूजां गृहाणत्वमष्टाभि शक्तिभिः सह ॥

जल स्नान -

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए माँ भगवती को जल से स्नान करायें -

साध्वीनामग्रतो गण्ये साधुसंघ समादृते ।
सर्वतीर्थ मयं तोयं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम ॥

वस्त्र-

अब मूर्ति को स्वच्छ कपड़े से पोंछकर वस्त्र अथवा मौली चढ़ायें। निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

सर्वभूषादिके सौम्ये लोक लज्जा निवारिणे
मयोपपादिते तुभ्यं गृह्यतां वाससी शुभे ॥

(वस्त्रं समर्पयामि)

अब क्रमशः निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुये माँ भगवती को कुंकुम, अक्षत, पुष्प व धूप दीप आदि अर्पित करें -

कुंकुम-

कुंकुम कालिपदं दिव्यं कामिनी कामसंभवम् ।
कुं कुं मेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥

(कुंकुम समर्पयामि)

अक्षत -

अक्षतान धवलान् देवि शालीयांस्तण्डलांस्तथा ।
अनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥

(अक्षातानि समर्पयामि)

पुष्प-

पद्म शंखज पुष्पादि शतपत्रैविचित्रताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ॥

(पुष्पाणि समर्पयामि)

धूप-दीप -

पुष्पान्ते धूपं दीपं च निवेदयामि नमः ।

अब निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये माँ जगदम्बा को नैवेद्य अर्पित करें -

शर्करा घृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमं ।
उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रति गृह्यताम् ॥

(नैवेद्यं निवेदयामि)

माला पूजन -

अब जिस माला से जप करना है उसके सुमेरु पर कुंकुम, अक्षत व पुष्प चढ़ाते हुये निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये हाथ जोड़कर

अंतिम आश्रय

जो जगन्माता न केवलं साधारणेषु सर्वेषु सुप्तेषु जाग्रर्ति, अति तु सुप्तेऽपि जगन्नाथे जागर्ति

अर्थात केवल साधारण सब जीवों के ही नहीं, बल्कि जगत्पिता के सोते रहने पर भी जो अपने बच्चों की रक्षा और कल्याण के लिये दिन रात सदा-सर्वदा जागती रहती है, जिसका इसी प्रसङ्ग के कारण चण्डीपाठ सप्तशती के एक ध्यान श्लोक में वर्णन है- यामस्तौत्स्वषिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥

और सङ्कट के समय में हम और किसका आश्रय लें। उसी जगन्माता और जगद्गुरु के श्रीचरणों के शरणागत होकर, उन्हीं श्री चरणों को पकड़कर, हमें अपने हृदयोद्गार और प्रार्थना को पेश करना है।

प्रार्थना करें -

ॐ माँ माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृहणामि दक्षिणे करे ।
जप काले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥
गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मकृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥

अब निम्न मंत्र की कम से कम 11 या 21 माला जप करें।

॥ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे ॥

अब जप पूरा होने के बाद क्षमा प्रार्थना करें निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥
मंत्र हीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया दत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेति यथा योग्यं तथा कुरु ॥

तत्पश्चात् माँ भगवती की आरती करें -

आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ जय ॥
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमदको ।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥ जय ॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।
रक्त-पुष्प गल माला कण्ठन पर साजै ॥ जय ॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
सुर-नर-मुनि-जनसेवत, तिनके दुखहारी ॥ जय ॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति ॥ जय ॥
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥ जय ॥
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे ।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥ जय ॥
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी ।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ जय ॥
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूं ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥ जय ॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तनकी दुःख हरता, सुख सम्पति करता ॥ जय ॥
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥ जय ॥
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती ।
(श्री)मालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योति ॥ जय ॥
(श्री) अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे॥ जय ॥
जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ जय ॥

विनाश कारक कर्म

विश्व में विनाश कारक कर्म करने वाले व्यक्तियों के निम्नलिखित लक्षण हैं –

1. वह विद्वानों से द्वेष करता है।
2. अपने कर्म से विद्वानों का विरोध करता है।
3. विद्वानों के धन को हड़पना चाहता है।
4. बुद्धिजीवियों की हत्या या उनका शोषण करता है।
5. विद्वानों की निन्दा करके अपने अहंकार को सन्तुष्ट करता है।
6. विद्वानों की प्रशंसा को अपना अपमान समझता है।
7. उत्सव, यज्ञ, धार्मिक अनुष्ठानों में विद्वानों का अपमान करता है।
8. विद्वानों के धनाभाव को उनकी हीनता समझता है।
9. बुद्धिमान को ऐसे लक्षणों वाले से दूर ही रहना चाहिए।

शत्रु आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता यदि आप पर भगवती दुर्गा की कृपा हो

पं. लोकेश दीक्षित

भगवती दुर्गा शक्ति स्वरूपा है, उनके शरीर के सभी अंश विभिन्न देवताओं के तेज से बने हैं। उनके हाथों में सुशोभित अलौकिक अस्त्र-शस्त्र भी देवताओं द्वारा प्रदत्त शक्तियाँ हैं वैसे तो माँ भगवती के सैकड़ों, हजारों नाम और स्वरूप हैं पर जब शक्ति उपासना की बात आती है तो माँ दुर्गा का तेजस्वी व अलौकिक प्रचण्ड रूप ही आँखों के सम्मुख उपस्थित होता है।

शास्त्र साक्षी हैं कि जब-जब देवताओं के ही वरदान से शक्ति अर्जित कर असुरों ने अत्याचार व उत्पात मचाया तथा देवताओं पर आक्रमण कर स्वर्ग में अधिकार करना चाहा तब-तब सभी देवताओं ने मिलकर माँ दुर्गा का आह्वान किया और उन्होने ही उन असुरों का संहार किया।

शक्ति स्वरूपा माँ दुर्गा के अवतरण के सम्बन्ध में एक कथा इस प्रकार मिलती है कि रम्भ नामक राक्षस ने एक बार भीषण तपस्या की और बहुत बड़ा यज्ञ करके अग्निदेव से प्रतापी पुत्र होने का वरदान प्राप्त किया। उस वरदान के फलस्वरूप महिषासुर नामक राक्षस उत्पन्न हुआ। महिसाषुर ने स्वयं भी ब्रह्मा जी की कठोर तपस्या की और उनसे अपना शरीर इच्छानुसार छोटा बड़ा करने, किसी भी पशु-पक्षी या मनुष्य का रूप धारण करने और युद्ध में किसी भी देव, दानव व मानव से पराजित न होने का वरदान प्राप्त किया। ब्रह्मा जी से वरदान पाकर असुर महिषासुर मदमस्त हो गया और उसने देवराज इन्द्र सहित सभी

देवताओं से उनके अधिकार और शक्तियाँ छीन ली। धरती व स्वर्ग पर असुरों का राज्य हो गया। अपनी शक्ति के मद में चूर असुर देवताओं, ऋषि-मुनियों तथा निर्दोष प्राणियों पर अत्याचार करने लगे। देवता उनके भय से छिपते फिर रहे थे। तब सभी देवताओं ने त्रिदेवों के पास जाकर उनसे दानवों की इस विनाश लीला को समाप्त करने की प्रार्थना की। अब ब्रह्मा

जी के वरदान की मर्यादा को भी बनाये रखना था सो सभी देवों ने तय किया कि चूंकि महिषासुर को देवता, दानव व मनुष्य से पराजित न होने का वरदान प्राप्त है अत: उसके विनाश के लिये शक्ति को नारी रूप में अवतरित किया जाय। तब सभी देवताओं ने माँ दुर्गा की स्तुति की। उस समय भगवती की प्रेरणा से ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा अन्य देवता अत्यंत क्रोधित हुये तथा उनके मुख से परम तेज की ज्वालायें निकलने लगी। सभी देवताओं से निकले तेज ने एक शक्ति पुंज का रूप लिया और उस शक्ति पुंज से भगवती दुर्गा प्रकट हुयी जिनका प्रकाश तीनों लोकों में व्याप्त प्रतीत हुआ।

यद भूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम् ।
याम्येन चाभवन केशा बाहवो विष्णु तेजसा ॥

भगवान शिव का जो तेज था उससे देवी का मुख प्रकट हुआ। यमराज के तेज से उनके सिर में बाल निकल आये तथा श्री हरि विष्णु के तेज से उनकी भुजायें उत्पन्न हुयीं। इसी प्रकार चन्द्रमा के तेज से दोनों स्तनों का और इन्द्र के तेज से मध्यभाग (कटि-प्रदेश) का प्रादुर्भाव हुआ। वरुण के तेज से जङ्घा और पिण्डली तथा पृथ्वी के तेज से नितम्ब भाग प्रकट हुआ। ब्रह्मा के तेज से दोनों चरण तथा सूर्य के तेज से उनकी अंगुलियां प्रकट हुयी। उस देवी के दाँत प्रजापति के तेज से और तीनों नेत्र अग्नि के तेज से प्रकट हुये। उनकी भौहें संध्या के तथा कान वायु के तेज से प्रकट हुये। इसी प्रकार अन्यान्य देवताओं के तेज से उस कल्याणमयी देवी का आविर्भाव हुआ। समस्त देवताओं के तेज पुंज से प्रकट हुयी देवी को देखकर महिषासुर के सताये हुये देवता

वे व्यक्ति जिन्होंने सन्यासी जीवन को अंगीकार कर लिया है या फिर गृहस्थ जीवन की पूर्णता के बाद सन्यस्त हो चले हैं उनका देवी पूजन निष्काम होना चाहिए। निष्कामता ही सन्यास की परिभाषा है। मन में लालसाओं की उपस्थिति होने पर सन्यास अखण्ड नहीं रह सकता। ऐसी स्थिति में माँ भवानी का पूजन मानसिक रूप से किया जाता है और इस पूजन में यंत्र, तंत्र एवं भौतिक वस्तुओं यहाँ तक कि देवी प्रतिमा की भी आवश्यकता नहीं होती है। कन्दराओं या फिर हिमालय की गुफा में तप कर रहे साधक के लिए वहाँ जो कुछ भी उपलब्ध है उसी को वह पूजन सामग्री समझकर आदि शक्ति को हृदय भाव से समर्पित करता है। सिन्दूर न होने की स्थिति में वह मंत्रों के द्वारा मुद्रा के रूप में सूक्ष्म आह्वान करता है तो वहीं कपूर न होने की स्थिति में जल के द्वारा ही आरती सम्पन्न कर लेता है। माँ अपने भक्तों की भावनाओं को भलीभांति समझती है और जहाँ भक्त है वहीं भगवान है।

श्री अरविन्द

बहुत प्रसन्न हुये तथा सबने मिलकर उन्हें अपने-अपने अमोघ अस्त्र-शस्त्र भी प्रदान किये ।

शूलं शूलानिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाक धृक् ।
चक्रं च दन्त्तवान कृष्णः समुत्पाद्यं स्वचक्रतः ॥

अर्थात पिनाकधारी भगवान शंकर ने अपने शूल से एक शूल निकालकर उन्हें दिया फिर विष्णु जी ने भी अपने चक्र से चक्र उत्पन्न करके भगवती को अर्पित किया। इसी प्रकार भगवती दुर्गा को ब्रह्मा ने कमण्डल, चन्द्रमा ने सभी वस्त्र आभूषण, यमराज ने कालदण्ड, वरुण ने शंख व पाश, पृथ्वी ने खड्ग तथा तलवार, वसु ने नागपाश, प्रजापति ने स्फटिक मणियों की माला तथा देवराज इन्द्र ने वज्र अर्पित किया। इस प्रकार भगवती दुर्गा ने सभी देवी देवताओं की शक्ति से सम्पन्न होकर महिषासुर का वध किया ।

इस प्रकार देवी देवताओं द्वारा आराध्य शक्ति स्वरूपा माँ दुर्गा की आराधना करने से शत्रुओं का नाश हो जाता है। चाहे शत्रु कितना भी ताकतवर हो जिसे भगवती की कृपा प्राप्त हो उसका कभी अहित नहीं हो सकता ।

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥

अर्थात जो भक्ति पूर्वक देवी का स्मरण करता है उसका निश्चय ही अभ्युदय होता है और माँ भगवती उसकी रक्षा करती है इसमें कोई संदेह नहीं है ।

पूजन कैसे करें ?

साधक को चाहिये कि वह स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूजा स्थल में उत्तर या पूर्व की ओर मुख करके बैठें। अपने सम्मुख बाजोट अथवा चौकी पर माँ भगवती का चित्र तथा दुर्गा यंत्र स्थापित करें । तत्पश्चात् पवित्रीकरण व विनियोग आदि से आरम्भ करते हुये जल, अक्षत. पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से माँ भगवती तथा यंत्र का पूजन करें। फिर निम्न मंत्र की ।। माला जप करें ।

।।ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।।

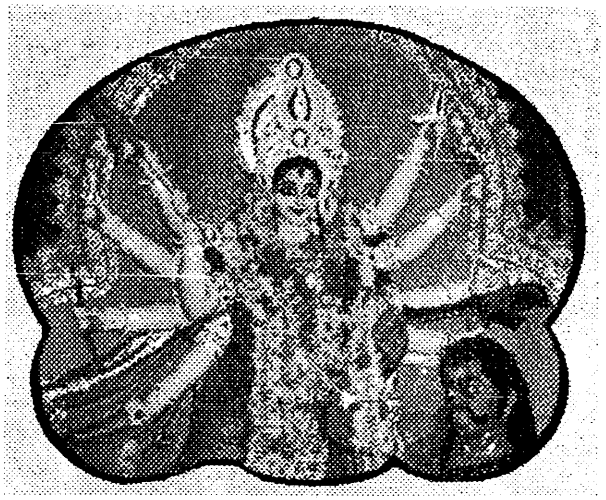

गृहस्थ जीवन में विचर रहे स्त्री-पुरुषों को माँ भवानी का पूजन पूर्ण रूप से राजसिक विधि से करना चाहिए क्योंकि वे सकाम पूजन करने में ही सक्षम होते हैं। एक गृहस्थ के जीवन में अनेकों कठिनाइयाँ होती हैं उसे अनेकों वस्तुओं की प्राप्ति हेतु लालसा होती है अतः उसके लिए इस पुस्तक में वर्णित शास्त्रोक्त वैदिक पूजन ही श्रेष्ठ है। वह जिन वस्तुओं से माँ का अनुष्ठान करेगा। वहीं वस्तुऐं सहस्त्र गुना प्रभाव लिये उसके पास लौटकर आवेंगी। गृहस्थ जीवन अपने आपमें अति उत्तम जीवन है और प्रत्येक साधक को आदि शक्ति माँ भवानी से मांग करने का जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त होता है। जो साधक अष्टभुजा धारी माँ से मांग सकता है उसे फिर जीवन में दो भुजा धारी निम्न मानव जाति से मांगने की जरुरत नहीं पड़ती।

गृहस्थ को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि दो या चार सन्तानों का पिता बनने के साथ-साथ उसे अष्ट भुजाधारी आदि शक्ति माँ भवानी का पुत्र बनना भी जीवन की सफलता के लिये परम आवश्यक है।

श्री अरविन्द

दुर्गा चरित्रम

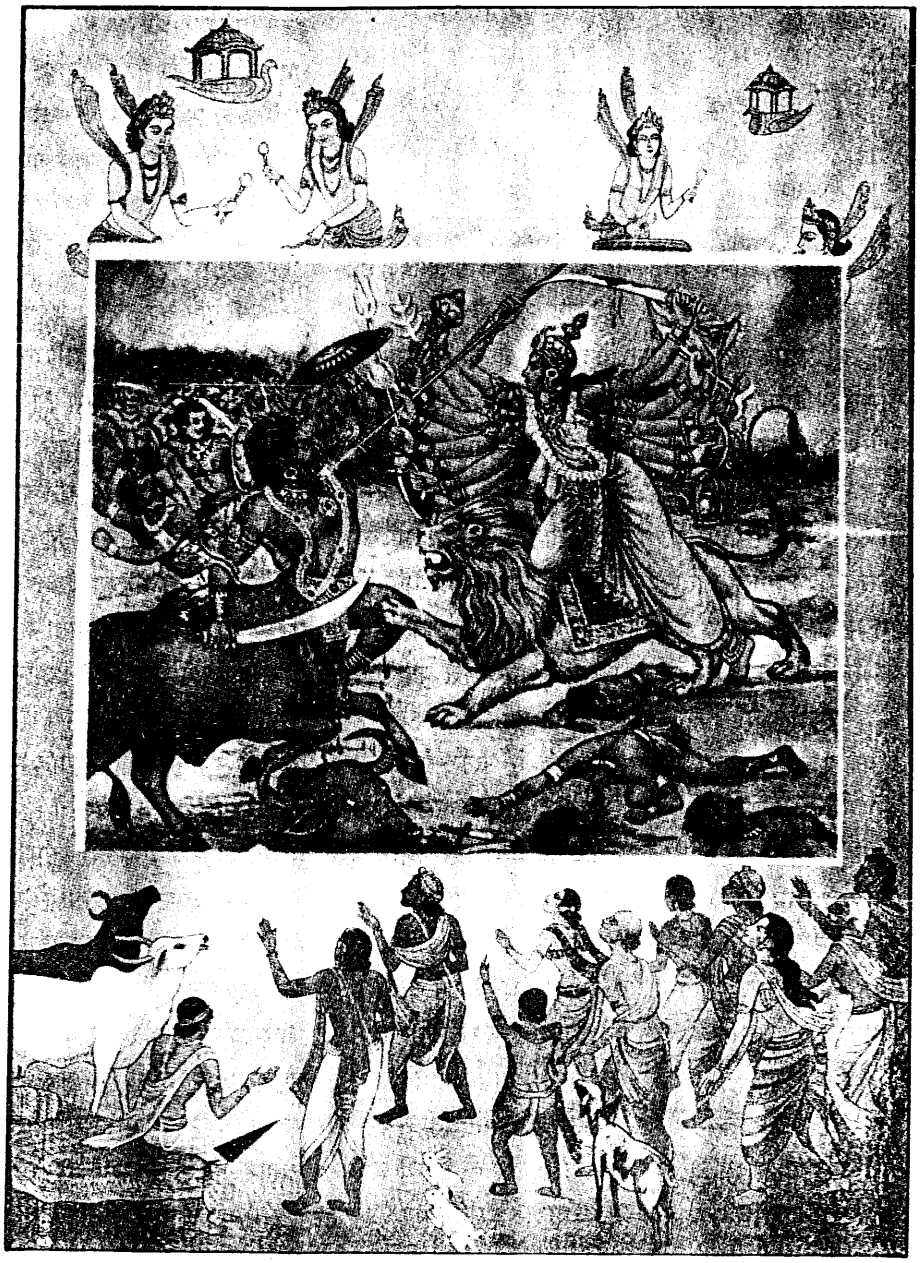

परम आदरणीय आदि शक्ति माँ भगवती को ऋषि-मुनि नहीं समझ सके तो उनके सम्पूर्ण स्वरूप और उनकी परम शक्ति को समझना मनुष्य के वश की बात तो कदापि नहीं है। माँ भगवती वह परम शक्ति है जिनके पाश में विष्णु भी शेषनाग की शैय्या पर योगनिद्रा में निमग्न हो जाते हैं तो वहीं त्रिपुर सुन्दरी के स्वरूप में वह निराकार शिव को भी अपनी लीला के द्वारा साकार स्वरूप लेने के लिये बाध्य कर देती है। विष्णु की नाभि से उदित कमल पर विराजमान ब्रह्मा भी भगवती की स्तुति करते हुये उनके द्वारा निर्मित संसार की रक्षा के लिये प्रार्थना करते रहते हैं।

परम शक्ति स्वरूपा माँ भगवती के सहस्त्र स्वरूपों में मनुष्यों और देवताओं के लिये रक्षा स्वरूप में वह दुर्गा के रूप में उपस्थित होती हैं। मनुष्य तो मनुष्य देवता भी

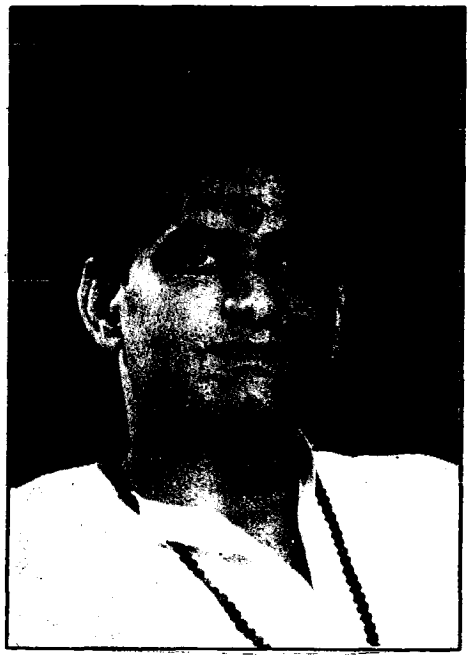

कभी-कभी अपनी शक्ति के उन्माद में आ जाते हैं और यही उन्माद जब असुरों द्वारा तोड़ा जाता है तब सभी देवता, मनुष्य, ऋषिगण उस परमशक्ति दुर्गा को याद करते हैं जो कि उनकी रक्षा असुरों से करके पुन: सृष्टि चक्रों को व्यवस्थित कर सके। दुष्ट शक्तियों का विनाश एवं अपने भक्तों की रक्षा ही दुर्गा का प्रमुख स्वरूप है। दुर्गा सप्तशती के प्रथम अध्याय में मेघा ऋषि ने राजा सूरथ और समाधि को माँ भगवती की इसी महिमा का बोध कराया है। भगवान विष्णु जब शेष शैय्या पर माँ भगवती की योग माया के सानिध्य में योग निद्रा में निमग्न थे तब उनके कर्ण के मैल से ही मधु और कैटभ नामक दो असुरों का उदय हुआ। असुर शक्तियाँ नकारात्मक ऊर्जाओं का भण्डार होती हैं एवं उनका एकमात्र कार्य सम्पूर्ण व्यवस्था में उलट-पुलट के साथ-साथ उत्पात पैदा कर देना होता है। आसुरी शक्तियों का तात्पर्य उन शक्तियों से है जो कि सहजीविता में विश्वास नहीं रखती है एवं अन्य शक्तियों को नष्ट करके अपनी प्रभुसत्ता स्वीकार कराने की प्रवृत्ति से भरी होती है। एकांगी प्रवृत्ति ही राक्षसीपन का द्योतक है। इन्हीं के प्रतीक मधु-कैटभ ब्रह्माण्ड के सभी नियमों को ताक में रखते हुये ब्रह्माण्ड के रचियता ब्रह्मा जी का वध करने को तैयार हो गये। ऐसी स्थिति निर्मित होते देख ब्रह्मा जी अपने स्तवन में कहने लगे हे माँ भगवती तुम ही विष्णु की अनुपम शक्ति हो, तुम ही स्वाहा, तुम ही स्वधा और तुम्हारे ही अक्षय कवच में सभी देवी-देवताओं, ऋषि-मुनि, इन्द्र इत्यादि सुरक्षित एवं जीवन यापन कर रहे हैं। माँ भगवती ही परम जननी है। उन्होने ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को जन्म दिया है और उन्हीं की महाविद्या से ब्रह्माण्ड में नाना प्रकार की गति-विधियाँ सम्पन्न हो रही हैं। माँ भगवती ही उन परम शक्तियों की स्वामिनी हैं जिनका उपयोग अति शक्तिशाली आसुरी शक्तियों के विनाश के लिये विभिन्न अस्त्रों में किया जाता है। वही इस ब्रह्माण्ड की जननी है, वही इस ब्रह्माण्ड की रक्षिणी भी है। ब्रह्मा जी द्वारा की गई स्तुति से प्रसन्न होकर देवी ने भगवान विष्णु के समस्त शरीर से निकलकर ब्रह्माजी को दर्शन प्रदान किये जिसके पश्चात् भगवान विष्णु ने योग निद्रा से जागकर इन दोनों असुरों के साथ 5000 वर्षों तक युद्ध किया। इसके पश्चात् भी जब विष्णु जी भी इन्हें परास्त नहीं कर पाये तब माँ भगवती के महामाया रूप ने असुरों की बुद्धि भ्रष्ट कर दी जिसके फलस्वरूप वे स्वयं विष्णु से वरदान मांगने के लिये आग्रह करने लगे और तब जाकर इन असुरों के वरदान स्वरूप भगवान विष्णु ने इन्हें अपनी जांघ पर रखकर इन दोनों का मस्तक अपने चक्र से क़ाट डाला।

कहने का तात्पर्य यह है कि विष्णु को भी युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिये माँ भगवती ने ही प्रेरित किया एवं उन्हीं के महामाया स्वरूप ने असुरों की बुद्धि को भी नष्ट कर दिया। ब्रह्मा तो निर्माण कर सकते हैं एवं विष्णु जगत के पालनहार हैं परंतु त्रिगुणात्मक शक्ति की प्रतीक माँ भगवती इस समस्त प्रबंधन को चलाती हैं, उसकी रक्षा करती हैं, उसे शांति प्रदान करती हैं। अन्यथा तो समस्त ब्रह्माण्ड उत्पातों से ग्रसित हो जायेगा। मनुष्य का जीवन ही उत्पातों से परिपूर्ण नहीं होता बल्कि उत्पात तो ब्रह्माण्ड में भी होते हैं। आसुरी शक्तियाँ केवल शरीर स्वरूप में नहीं समझी जा सकती। ब्रह्माण्ड में यह धूमकेतु के रूप में ग्रहों के समीकरण को बिगाड़ सकती हैं ग्रहों की आयु पूर्ण होने के पूर्व उन्हें नष्ट कर सकती है ठीक इसी प्रकार मनुष्य के जीवन में यह आसुरी शक्तियाँ लोप, दुराचार, शत्रु, कुबुद्धि इत्यादि के रूप में प्रकट होती है। जिस प्रकार दुर्गा सप्तशती में वर्णित समाधि नामक वैश्य के जीवन में उसके लोभी स्त्री एवं पुत्रों ने धन के लालच में उसे घर से निकाल दिया था एवं राजा सूरथ भी स्वयं अपने स्वजनों के द्वारा प्रताड़ित एवं भीतर घात से रंक हो गये। इन दोनों का सब कुछ चले जाने पर भी मोह खत्म नहीं हो रहा था और इसी मोह से ग्रसित होकर जब ये उत्पात विहीन जीवन की आकांक्षा से मेधा ऋषि के आश्रम में आये तब मेधा ऋषि ने ही माँ दुर्गा के स्वरूप का जो वर्णन किया उसी के द्वारा इनका मोह भंग हुआ और पुन: ये शक्तिशाली

हुये। देवी ही पराविद्या है, विज्ञान तो मानव बुद्धि की श्रेणी में आता है परन्तु अविज्ञान स्वरूपा देवी की स्तुति ही मनुष्य को मोह बंधनों से मुक्त करती है। देवी शक्ति की आराधना के बिना मोक्ष प्राप्ति भी सम्भव नहीं है। जिसकी स्तुति स्वयं ब्रह्मा करते हैं उनकी स्तुति मनुष्यों के लिये कितनी कल्याणकारी है यह समझाने की जरुरत नहीं है।

दुर्गा सप्तशती के द्वितीय अध्याय में वैदिक ऋषियों ने माँ भगवती के महिषासुर मर्दिनी स्वरूप का वर्णन किया है। इस स्वरूप में वह अपने हाथों में अक्षमाला, फर्सा, गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढाल, शंख, घण्टा, मधुपात्र, शूल, पाश और चक्र धारण करती हैं। ब्रह्माण्ड का संचालन कुछ इस प्रकार है कि उसमें सुर और असुर दोनों शक्तियों का वास है एवं इसका प्रबंधन भी इस प्रकार है कि असुर शक्तियाँ अत्यधिक प्रबंधन में रखी जाती हैं। अगर जरा सी भी चूक हुई तो वे इतनी शक्तिशाली हो जाती हैं कि समूचे संस्थान को ही विनाशित कर सकती है। ठीक इसके विपरीत देव शक्तियाँ स्वयं ही अत्यधिक प्रबंधनशील होती हैं। ये दीर्घकालिक शक्तियाँ हैं परन्तु इनमें भी विकृति या समायोजन बिगड़ने की सम्भावनायें निर्मित होती रहती है। जब तक देव शक्तियाँ स्व प्रबंधित रहती हैं सब कुछ ठीक चलता है परन्तु इनमें आपसी द्वंद असुरी शक्तियों को शक्तिशाली होने का मौका दे देती है। इसी प्रकार की स्थिति बनने पर इन्द्र जो कि देवताओं के नायक हैं महिषासुर नामक महाबली असुर से पराजित हो गये। इनके पराजित होते ही महिषासुर ने सम्पूर्ण देव शक्ति व्यवस्था को ही उलट कर रख दिया। पृथ्वी पर तो क्या अन्य ग्रहों पर भी सूर्य का तेज हीन हो गया। अग्नि क्षीण हो गई। सम्पूर्ण जल व्यवस्था जो कि इन्द्र के द्वारा संचालित है अव्यवस्थित हो गई एवं इसी प्रकार वायु, चन्द्रमा, यम, वरुण सबके सब शक्तिहीन हो गये। स्वर्ग का प्रबंधन भी असुरों के हाथ में आ गया एवं समस्त ब्रह्माण्ड कुछ समय के लिये उत्पातों से ग्रसित हो गया। ऐसी स्थिति में देवों को आदि शक्तियों का ख्याल आया और जब वे स्वयं शक्तिहीन हो गये तब उन्होने ब्रह्मा, विष्णु और महेश के सामने जाकर अपनी व्यथा सुनाई। उनकी इस व्यथा को देखकर आदि शक्तियों के शरीर से जो क्रोध रूपी तेज उत्पन्न हुआ उसके समिश्रण से ही माँ दुर्गा महिषासुर मर्दिनी के स्वरूप में प्रकट हुई। उनका यह स्वरूप इतना तेजमान था कि तीनों लोक दिव्य प्रकाश से कौंध उठे। शिव के तेज से देवी के मुख की उत्पत्ति हुई। तो वहीं यमराज के तेज से देवी की चार भुजायें उत्पन्न हुयी। चन्द्रमा का तेज उनके स्तनों पर आरुढ़ हुआ। इन्द्र की शक्ति से देवी के कटि भाग का प्रादुर्भाव हुआ। वरुण के तेज से जंघा और पिण्डली विकसित हुई एवं पृथ्वी के तेज से नितम्ब भाग प्रकट हुआ। ब्रह्मा के तेज से दोनों चरण और सूर्य के तेज से अंगुलियाँ उत्पन्न हुई। वसुओं के तेज से हाथों की अंगुलियाँ तो वहीं कुबेर के तेज से देवी की नासिका प्रकट हुई अग्नि ने तीनों नेत्रों को प्रकट किया। प्रजापति के तेज से दाँतों का उद्भव हुआ। वायु के तेज से कर्ण उत्पन्न हुये एवं संध्या के तेज से भौंहों की संरचना हुई। उपरोक्त वर्णन ही आकृति विज्ञान एवं ज्योतिष विज्ञान का आधार है। वैदिक ऋषियों द्वारा देवी स्वरूप का दर्शन ही सभी ज्ञान और विज्ञान को आधार प्रदान करता है। किसी भी व्यक्ति की नासिका को देखकर आप उस पर महालक्ष्मी की कृपा बता सकते हैं तो वहीं वक्षस्थल के द्वारा आप यह भी आभास कर सकते हैं कि चन्द्रमा जन्म कुण्डली में उच्च स्थान पर बैठा है या निम्न स्थान पर। भौंहों की आकृति उसके दर्शन, ज्ञान और दृष्टांत शक्ति का सूचक है। आँखों की तीव्रता शरीर में मौजूद अग्नि की प्रदीप्तता बता सकती है।

महिषासुर जैसे राक्षस का वध करने के लिये सभी देवताओं की एक साथ स्तुति से जो तेजमय देवी स्वरूप उत्पन्न हुआ था उसे श्रेष्ठ शस्त्रों से सुसज्जित भी देवताओं ने ही किया विष्णु ने भगवती को चक्र अर्पण किया, शंकर ने शूल प्रदान किया, वरुण ने शंख रूपी शस्त्र प्रदान किया जिसके दिव्य घोष से वायु मण्डल में उपस्थित ध्वनि के ऊपर आरूढ़ सूक्ष्म असुरी शक्तियों का नाश हो जाता है। अग्नि ने वह शक्ति दी जिसमें अशुद्ध से अशुद्ध शरीर एवं तत्व भी भष्म होकर निर्विकार हो जाता है। वायु ने उन दिव्य बाणों एवं धनुष को प्रदान किया जिसके द्वारा पंचभूत निर्मित असुरी शक्त्यिों के शरीर का भेदन सम्भव हो पाता है। सूर्य ने देवी के प्रत्येक रोम को अपने प्रकाश से तेजमय बना दिया। देवराज इन्द्र जो कि वज्र के स्वामी हैं और जिसके प्रहार से खण्ड-खण्ड हो जाने की प्रक्रिया सम्पन्न होती है देवी को प्रदान किया। ब्रह्मा ने दिव्य कमण्डल दिया जिसका जल समस्त बीजों से युक्त होता है। काल ने ढाल और तलवार प्रदान की। इस प्रकार अनेक देवी देवताओं ने अपनी सम्पूर्ण दिव्य शक्तियों से देवी को शस्त्रयुक्त, सौन्दर्ययुक्त, आभूषणयुक्त स्वरूप प्रदान किया। महिषासुर उस असुरी शक्ति का प्रतीक है जिसके विनाश के लिये इन समस्त दिव्य शक्तियों का एक जुट होना अत्यधिक आवश्यक था। आसुरी शक्तियाँ

अति तीव्रता के साथ विकसित होती हैं एवं कुछ ही समय में वे सर्वव्याप्त और अति शक्तिशाली हो जाते हैं। अगर रोग रूपी आसुरी शक्ति किसी एक मानव को प्रभावित कर दे तो देखते ही देखते समस्त मानव समाज, समस्त योनियाँ सभी कुछ उसके द्वारा प्रदूषित हो जाती है। ऐसी शक्तिशाली रोगरूपी आसुरी शक्ति को पराजित करने के लिये मनुष्य को अपनी सभी ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, बाह्येन्द्रिय व्यवस्थाओं को सामूहिक रूप से एक जुट करके युद्ध करना पड़ता है। अन्यथा अलग-अलग रूपों में युद्ध करने पर तो पराजय निश्चित ही है।

देवी के इस भव्य स्वरूप को देखकर महिषासुर ने अपने सेनापति चामर को असंख्य सुसज्जित सेना के साथ युद्ध के मैदान में भेजा परन्तु देवी और उनके वाहन सिंह ने कुछ ही क्षणों में आसुरी शक्तियों का उसी प्रकार विनाश किया जिसके वे योग्य थे। क्षण भर में ही महादैत्यों का सर्वनाश हो गया। दुर्गा सप्तशती का द्वितीय अध्याय देवी के उस स्वरूप और चरित्र को वर्णित करता है जिसमें कि समस्त सुर शक्तियों का समायोजन समाया है एवं सभी एक लक्ष्य पर आधारित होकर समग्रता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। यह रहस्य ही अस्तित्व के दीर्घकाल का आधार है।

दुर्गा सप्तशती का तृतीय अध्याय देवी के उस स्वरूप का वर्णन करता है जिसमें कि वह दुष्टों को उसी प्रकार दण्ड देती है जिस प्रकार उनकी दुष्ट प्रवृत्ति होती है। वह दिव्य बाणों से उन्हें भेदती हैं तो वहीं तलवार से उन्हें विभाजित भी करती है। वज्र के द्वारा खण्ड-खण्ड भी करती हैं। गदा की चोट से धराशायी करती हैं तो वहीं अग्नि के द्वारा भष्म भी कर देती हैं। आसुरी

अधर्मो पार्जितैरर्थैर्यः करोत्यौर्ध्वदेहिकम।
न स तस्य फलं प्रेत्य भुंक्तेऽर्थस्य दुरागमात्॥

जो मनुष्य अधर्म से धन कमाता है और यह सोचता है कि उसने यज्ञ, दान आदि नीतिसम्मत कार्यों को करके, उस अधर्म से मुक्त होकर परलोक में सुख भोगेगा, वह भारी भ्रम में होता है। अधर्मकृत अर्थोपार्जन से भौतिक उपलब्धि प्राप्त की जा सकती है पर वह संस्कार प्राप्त नहीं किया जा सकता जो चेतना और आत्मा की शुद्धि करता है। इस कारण से उसे यज्ञ-दान आदि कर्मों का फल भी प्राप्त नहीं होता।

शक्तियाँ अत्यंत ही मायावी स्वरूपों में प्रकट होती हैं जीवन में वे कभी अभिशाप के रूप में साधकों की साधना को अवरोधित करती हैं, काम और क्रोध के रूप में पतोन्मुखी बनाती हैं तो कभी-कभी बुद्धि पर आसुरी प्रवृत्ति आरूढ़ होने की स्थिति में विनाश की कगार पर मनुष्य को ले जाती है। इन सबसे निपटने के लिये भिन्न-भिन्न तरीकों की जरूरत पड़ेगी। बुद्धि को आसुरी शक्तियों से मुक्त कराने के लिये ज्ञान आवश्यक है तो वहीं कर्मों को पवित्र मार्ग पर ले जाने के लिये गुरु कृपा की आवश्यकता होगी। देवी और असुरों के बीच युद्ध में असुरों की पराजय को देखकर समस्त ऋषि-महर्षि इनके भव्य स्वरूप का स्तवन करने लगे तो वहीं गंधर्व और अप्सरायें गान और नृत्य करने लगी।

दुर्गा सप्तशती के तृतीय अध्याय में महिषासुर उस आसुरी शक्ति का प्रतीक है जो कि स्वरूप बदलने की क्रिया में अति सिद्ध है। मानव कभी-कभी स्वरूप के चक्रव्यूह में फँसकर वास्तविक शत्रु को पहचान नहीं पाता। वास्तविक शत्रुता इतनी सूक्ष्म होती है कि आप एक शरीर नष्ट करो तो वह शीघ्र ही किसी और स्वरूप में आपके सामने उपस्थित हो जाती है। उदाहरण के लिये आप किसी रोग को दबाने के लिये तेज औषधि का उपयोग करते हैं जिससे तात्कालिक लाभ तो मिल जाता है परन्तु यह रोग रूपी शत्रु शरीर में पुनः किसी अन्य जटिल समस्या के रूप में उपस्थित होकर आपको कष्ट प्रदान करने लगता है। ऐसी स्थिति में शत्रु का विनाश समग्रता के साथ ही सम्भव होगा। यह समग्रता माँ भगवती की कृपा से ही सम्पन्न हो पायेगी। जिस प्रकार माँ भगवती ने महिषासुर के विभिन्न स्वरूपों के साथ-साथ उसके मुख्य स्वरूप का भी ह्रास किया उसी प्रकार जीवन में साधक को भी अवरोध के मूल स्त्रोत का ही विनाश करना होगा तभी वह सिद्धि प्राप्त कर पायेगा।

दुर्गा सप्तशती के चतुर्थ अध्याय में देवी के समस्त स्वरूपों एवं उनकी समस्त शक्तियों का एक साथ स्तुतिगान

ऋषि-मुनियों एवं देव शक्तियों ने किया है। उनके परम स्वरूप के सामने सभी देवगण पूर्ण मनोरथ के साथ नतमस्तक हुये हैं। एवं उन्हें एक स्वर में सभी वेदों का आधार स्वरूप माना है। देवगणों एवं ऋषि-मुनियों ने दुर्गा सप्तशती के चतुर्थ अध्याय में उनके रक्षेश्वरी स्वरूप एवं पूर्ण मातृत्व को स्वीकार कर उनसे वरदान स्वरूप यह वर मांगा कि जब-जब हम विपत्तियों में फँसे तब आप निश्चित स्वरूप धारण करके हमारी रक्षा करें।

दुर्गा सप्तशती के पंचम अध्याय में एक बार पुन: देवी ने असुरों द्वारा प्रताड़ित, पराजित एवं तिरस्कृत देवताओं की रक्षा की है। शुम्भ-निशुम्भ नामक असुरों के कारण उत्पातमय स्थिति निर्मित हो जाने की अवस्था में जब सभी देवताओं ने हिमालय पर जाकर माँ पार्वती के सामने उनका स्तुतिगान किया तब पार्वती जी के शरीर कोष से अम्बिका देवी के रूप में माँ दुर्गा का प्रादुर्भाव हुआ एवं इसके पश्चात् माँ पार्वती देवी का शरीर काले रंग का हो गया और वे हिमालय में रहने वाली कालिका देवी के नाम से विख्यात हो गयी। माँ अम्बिका देवी के स्वरूप में उन्होने अत्यंत ही दिव्य एवं मनोहर स्त्री स्वरूप धारण किया। प्रत्येक मनुष्य एक जैसा शरीर लिये हुये हैं। परन्तु उनकी श्रेणियों में फर्क केवल दृष्टांत के कारण ही सम्भव हो पाता है। श्रेष्ठ मुनिगण, ऋषि, ज्ञानी, देवी के इस स्वरूप को देखकर नतमस्तक होते हैं तो वहीं असुरी शक्तियाँ जिनका उद्गम ही भोगवादी संस्कृति पर टिका हुआ है देवी के इस स्वरूप को देखकर वासनामय हो जाते हैं। आसुरी शक्तियों एवं भोगवादी संस्कृति का चोली दामन का साथ है। संसार का प्रत्येक कष्ट केवल भोगवादी सोच का ही परिणाम है। भोगवादी सोच ही संचय की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है। आप अच्छा भोजन देखते हैं तो उसे अति में ग्रहण करने की इच्छा के कारण रोग ग्रस्त हो जाते हैं। वहीं धन पर आधिपत्य जमाने के लिये नाना प्रकार के दुष्कर्म करते हैं परन्तु अंत में केवल पतन ही प्राप्त होता है। लिप्तता की यही प्रवृत्ति मनुष्य को साक्षात् असुरों में परिवर्तित करती है एवं इसी प्रवृत्ति का नाश करने के लिये देवी ने अपने अम्बिका स्वरूप को भक्तों के सामने प्रकट किया है। भोगी प्रवृत्ति के असुर देवी के इस स्वरूप पर अधिकार जमाने के लिये अपनी प्रवृत्ति स्वरूप अग्रसर हुये।

दुर्गा सप्तशती के छठवें अध्याय में माँ दुर्गा ने चण्ड-मुण्ड के सेना नायक धूम्रलोचन का क्षण भर में विनाश कर दिया एवं देवी के मुख से निकला हुं शब्द का उच्चारण मात्र ही असुरों की समस्त सेना को भष्म करने के लिए काफी था। क्रोध एवं अपनी आकांक्षाओं को बलपूर्वक प्राप्त करना दुष्ट शक्तियों की विशेषता है।

दुर्गा सप्तशती के सप्तम अध्याय में माँ भगवती के काली स्वरूप का दर्शन होता है। माँ भगवती का काली स्वरूप वह स्वरूप है जिसमें वह असुरों का सम्पूर्ण नाश करने के लिये अत्यंत ही विकरालता लिये हुये होती है। जिस प्रकार जहर जहर को मारता है, लोहा लोहे को काटता है उसी प्रकार विकट शत्रु का नाश करने के लिये विकराल स्वरूप भी धारण करना पड़ता है। भक्तों की रक्षा के लिये माँ भगवती किसी भी स्वरूप को धारण कर सकती है। युद्ध भूमि में निशुम्भ का वध करने वाली महाकाली जो कि कल्याणमयी चण्डी के शरीर से प्रकट हुई थी। जब माँ भगवती के सामने इन दोनों का शीश लेकर उपस्थित हुई तब उन्हीं के वरदान स्वरूप चामुण्डा के नाम से इस संसार में प्रतिष्ठित हुई। दिव्य शक्तियाँ कभी भी अकेली नहीं चलती उनके साथ अनेकों उप शक्तियाँ भी समाहित होती हैं। इन उप शक्तियों का कार्य मुख्य शक्ति के द्वारा निमित्त लक्ष्य को प्राप्त करना होता है।

दुर्गा सप्तशती के आठवें अध्याय में देवी ने अपने समस्त स्वरूपों को एक साथ भक्तजनों के सामने प्रदर्शित करते हुये अपने विराट स्वरूप का दर्शन कराया है। चण्ड-मुण्ड के वध से क्रोधित होकर आसुरी शक्तियों के राजा शुम्भ ने रक्त बीज नामक असुर को अपनी समग्र सेना के साथ युद्ध भूमि में भेजा। रक्तबीज उस विकट नकारात्मक शक्ति का प्रतीक है जिसके प्रत्येक कण-कण में स्वयं उत्पन्न होने की प्रवृत्ति होती है। मनुष्य भी अपने जीवन में कभी-कभी ऐसी आसुरी शक्तियों से साक्षात्कार करता है। आज के युग में अनेकों ऐसे रक्त सम्बन्धी रोग हैं जिनकी मात्र एक बूंद ही किसी भी शरीर को रोग युक्त करने में सक्षम हैं। इस नकारात्मक प्रवृत्ति की शक्तियों को किस प्रकार से नष्ट किया जाय इसका वर्णन दुर्गा सप्तशती के आठवें अध्याय में वर्णित है। रक्तबीज का वध करने के लिये माँ भगवती ने अपने अनेकों स्वरूपों को प्रकट किया एवं प्रत्येक स्वरूप ने रक्तबीज की समस्त सेना का विनाश कर दिया। अंत में चण्डिका देवी ने रक्तबीज को शूल से मारा और माँ काली ने अपने मुख से उसका समस्त रक्त चूस लिया। इस प्रकार रक्तबीज रक्तहीन होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और मृत्यु को प्राप्त हो गया।

दुर्गा सप्तशती के नौवें अध्याय में माँ भगवती ने अपने समस्त स्वरूपों के साथ थल के साथ-साथ नभ में भी असुरों के साथ घोर संग्राम करते हुये शुम्भ-निशुम्भ का वध करके संसार को दैत्यों से मुक्त कराया इस महासंग्राम में सभी देवियों ने एक साथ शुम्भ और निशुम्भ से युद्ध किया। किसी ने उसे बाण से भेद दिया तो देवी के किसी स्वरूप ने उसे भष्म कर दिया इस प्रकार समस्त स्वरूपों ने एक केन्द्रित लक्ष्य पर समस्त दिशाओं से शक्ति प्रहार करते हुये लक्ष्य को प्राप्त किया। देवियाँ शक्ति स्वरूपा हैं वे एक साथ होकर भक्तों की रक्षा करती हैं तो वहीं विशेष स्वरूप में प्रकट होकर युद्ध करती हैं जरूरत पड़ने पर सभी स्वरूप अलग-अलग विभक्त होकर संसार का प्रबंधन व्यवस्थित करती हैं इत्यादि-इत्यादि।

कहने का तात्पर्य यह है कि आदि शक्ति माँ भगवती का त्रिणुणमयी रूप ही इस संसार में उपस्थित प्रत्येक तत्व को जन्म देता है। उसकी रक्षा करता है एवं उसे विकसित भी करता है।शक्ति की इसी परम महिमा के आगे दुर्गा सप्तशती के दसवें अध्याय में शुम्भ का वध होता है एवं एक बार पुनः सम्पूर्ण भव सागर व्यवस्थित होकर चलायमान होता है। शुम्भ के वध के पश्चात् आकाश गंगा में उल्कापात के द्वारा मचा हुआ उत्पात समाप्त हो जाता है। वायु पुनः गतिशील हो जाती है। आकाश एक बार निर्मल दिखाई पड़ने लगता है नदियों का मार्ग स्वयं ही ठीक हो जाता है और सूर्य की प्रभा एक बार पुनः दिखाई पड़ने लगती है। इस प्रकार प्रत्येक देव शक्ति का अवरोधित मार्ग व्यवस्थित हो उठता है। अंत में दुर्गा सप्तशती के ग्यारहवे अध्याय में एक बार पुनः भक्तों द्वारा विनय किये गये कार्य का संपादन करने के पश्चात् देवी अपने मूल स्वरूप में स्थापित होकर मुख-मण्डल पर दिव्य मुस्कान बिखेरती हुई भुवनेश्वरी स्वरूप में देवताओं, गंधर्व, अप्सराओं एवं ब्रह्मा, विष्णु और शिव की स्तुतियाँ स्वीकार करने लगती हैं। दुर्गा सप्तशती के इन समस्त अध्यायों के पाठ से भक्तगणों को शक्ति तत्व सिद्ध होता है जिसके फलस्वरूप वे अपने समस्त जीवन में आने वाली कठिनाइयों, उत्पात, रोग, व्यथा, शत्रु, मोहन, मारण, स्तम्भन इत्यादि पर विजय प्राप्त करते हुए मोक्षगामी गति प्राप्त करते हैं।

दुर्गा सप्तशती इतनी विलक्षण और रहस्यात्मक है कि इसका प्रत्येक स्तवन आपको प्रत्येक बार एक विशेष ज्ञान की अनुभूति कराता है। अनुभूति को शब्दों में प्रकट करना अत्यंत ही दुष्कर कार्य है। देवी अनंता है उनका स्वरूप अनंत है, उसे मात्र दर्शन के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। साधक सम्पूर्ण जीवन दुर्गा सप्तशती का पाठ कर सकता है और प्रत्येक दिन देवी के विशेष स्वरूप का आत्म साक्षात्कार कर सकता है। उनका प्रत्येक स्वरूप अमृतमयी है। वे ही ऋषियों को स्थापित करती हैं ज्ञानियों को ज्ञान प्रदान करती हैं उन्हीं की शक्ति विभिन्न स्वरूपों में शक्ति साधकों में देखने को मिलती है। समस्त ब्रह्माण्ड शक्तिमय है, शक्तिहीन के लिये देवी की शरण में जाना अत्यधिक आवश्यक है। शक्ति ही सामर्थ प्रदान करती है एवं सामर्थ की विभिन्न श्रेणियाँ मनुष्य को ऋषि-मुनि, तपस्वी, ज्ञानी, विज्ञानी, अविज्ञानी, देव इत्यादि श्रेणियों में प्रतिष्ठित कराती है।

कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा
मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्चैषा
विश्वमातादिविद्योम्॥

काम (क), योनि (ए), कमला (ई), वज्रपाणि-इन्द्र (ल), गुहा (ह्रीं)। ह, स-वर्ण, मातरिश्वा-वायु (क), अभ्र (ह), इन्द्र (ल), पुनः गुहा (ह्रीं)। स, क, ल-वर्ण और माया (ह्रीं), यह सर्वाम्मिका जगन्माता की मूल विद्या है और यह ब्रह्मरूपिणी है।

शिवशक्त्यभेदरूपा, ब्रह्मा-विष्णु-शिवसत्मिका, सरस्वती-लक्ष्मी-गौरीरूपा, शुद्ध-मिश्र-शुद्धोपासकात्मिका, समरसीभूत शिवशक्त्यात्मक ब्रह्मस्वरूप का निर्विकल्प ज्ञान देनेवाली, सर्वतत्वात्मिका, महात्रिपुरसुन्दरी - यही इस का मंत्र का भावार्थ है। यह मंत्र सब मंत्रों का मुकुटमणि है और मंत्रशास्त्र में पञ्चदशी कादि श्रीविद्या के नाम से प्रसिद्ध है। इसके छः प्रकार के अर्थ अर्थात् भावार्थ, वाच्यार्थ, सम्प्रदायार्थ, कौलिकार्थ, रहस्यार्थ और तत्वार्थ 'वरिवस्या रहस्य' आदि ग्रंथों में इसके और भी अनेक अर्थ दर्शाये हैं। श्रुति में भी ये मंत्र इस प्रकार से अर्थात् कवचित् स्वरूपोच्चार, कवचित् लक्षणा और लक्षित लक्षणा से और कहीं वर्ण के पृथक-पृथक अवयव दर्शाकर जानबूझकर विश्रृंखलरूप कहे गये हैं। इससे यह मालूम होगा कि ये मंत्र कितने गोपनीय और महत्वपूर्ण हैं।

शतचण्डी अनुष्ठान एवं अष्टशती महायंत्र

आम भक्तगणों के लिये देवी के सहस्त्र स्वरूपों को समझना अत्यंत ही कठिन होता है। माँ त्रिपुर सुन्दरी के सूक्ष्म स्वरूप को समझना तो केवल ऋषियों के वश की ही बात है निराकार शक्ति स्वरूप में पूजन आम भक्तगणों के लिये इसीलिए अत्यंत ही दुष्कर होता है। वे पूजन तो कर लेंगे परन्तु हृदय में भक्ति और श्रद्धा का उत्पादन आवश्यकतानुरूप नहीं हो पाता जिसके फलस्वरूप पूजा आधी-अधूरी रह जाती है। इसी विषम स्थिति को ध्यान में रखकर हमारे ऋषियों ने देवी के विभिन्न स्वरूपों को मूर्तियों के रूप में स्थापित किया है। प्रत्येक मूर्ति का स्वरूप अति सूक्ष्मता के साथ किया गया है। इन स्वरूपों के द्वारा आम जन अत्यधिक श्रद्धा के साथ पूजन कर जीवन में लाभ प्राप्त करते हैं। इससे कुछ ऊपर शक्ति साधकों का क्षेत्र प्रारम्भ होता है जो कि देवी के विभिन्न स्वरूपों को यंत्रों के द्वारा प्रतिष्ठित करते हैं। मुख्य रूप से देखा जाय तो प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति एवं चैतन्य यंत्र विशेष में रत्ती भर भी फर्क नहीं है। यंत्र बीज स्वरूप होते हैं तो वहीं मूर्ति वृक्ष स्वरूप। बीज में भी वही गुण सूक्ष्मता के साथ स्थापित होते हैं जो कि मूर्ति में दिखाई पड़ते हैं। जिस प्रकार बीज को भूमि में स्थापित कर देने पर वृक्ष की प्राप्ति होती है उसी प्रकार यंत्र विशेष के मंत्र युक्त विधि विधान पूजन से शक्ति साधक आमजनों से परिष्कृत श्रेणी में आते हैं एवं उन्हें त्रुटिरहित शक्तिसिद्ध करने की प्रक्रिया ज्ञात होती है। इससे ऊपर का क्षेत्र ब्रह्मज्ञानियों का है जो कि निष्काम भाव से माँ त्रिपुर सुन्दरी के अनंत स्वरूपों के साथ-साथ उनके मूल स्वरूप की निरंतर स्तुति करते रहते हैं। इस स्थिति में जीवन की प्रत्येक गतिविधि शक्ति को समर्पित होती है एवं ब्रह्म ज्ञानी का एकमात्र कार्य त्रिपुर सुन्दरी की सेवा में लीन होना होता है

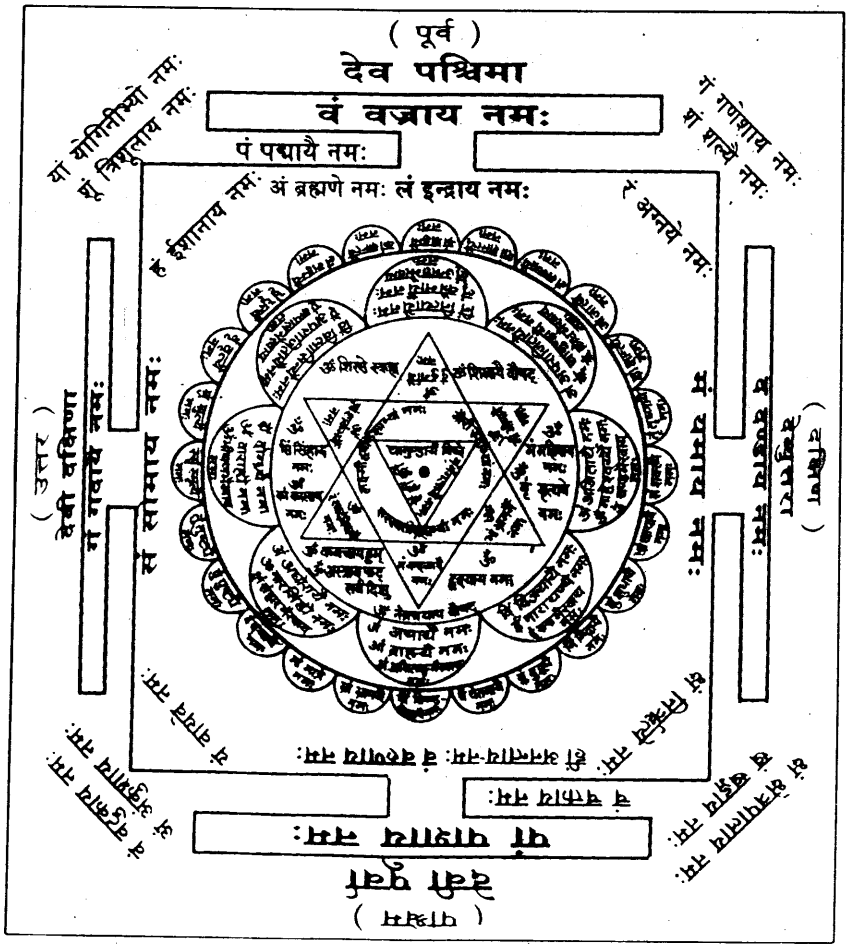

परन्तु माँ त्रिपुर सुन्दरी के समस्त स्वरूपों को एक साथ आह्वान करके केन्द्रीयकृत करने की विधि भी मौजूद है एवं इस विधि को शतचण्डी विधान कहते हैं। इस विधान में शतचण्डी महायंत्र की स्थापना मंत्रोच्चार के द्वारा देवी के स्वरूपों का आह्वान एवं हवन इत्यादि के द्वारा उनकी कृपा प्राप्त कर विशेष जन कल्याण के कार्य सम्पन्न कराये जाते हैं।

द्वैत एवं अद्वैत के अद्भुत सामन्जस्य तथा होमियोपैथी व योग के बेजोड़ समिश्रण द्वारा विविधि रोगों के सरल व सहज उपचार की विधि को जन-जन तक पहुँचाने के लिये संकल्पित

साधना पब्लिकेशन की तीन अमूल्य एवं उत्कृष्ट कृतियाँ

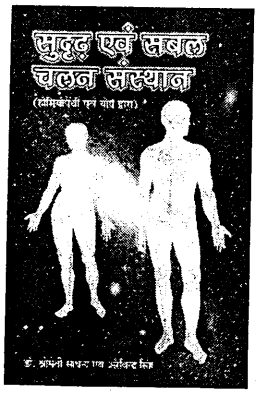

शीघ्र प्रकाशित होने जा रही है

इन पुस्तकों में आप पायेंगे सम्पूर्ण चलन तंत्र में होने वाली विविधि व्याधियों की विस्तृत जानकारी, होमियोपैथी व योग की मदद से उनका शमन, स्वस्थ व आकर्षक शिशु का जन्म तथा उसके सम्पूर्ण विकास के कारगर उपाय, श्वसन तंत्र में होने वाली विभिन्न गम्भीर व सामान्य बीमारियों का सरल इलाज, प्राणायाम की विभिन्न विधियाँ तथा उसके लाभ और वह भी अत्यन्त बोधगम्य भाषा में जिसे आम पाठक समझ सकें और किसी बीमारी से पीड़ित होने पर उसके कारणों को समझ कर उसका निदान कर सकें ।

आज ही अपनी प्रतियाँ सुरक्षित करा लें

हमारा पता

साधना सिद्धि विज्ञान

शॉप नं. 3 प्लाट नं. 210, जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल-462011. दूरभाष : 576346, 591143

विधि :

सर्वप्रथम शतचण्डी अनुष्ठान के लिये साधक को किसी चैतन्य एवं पवित्र दुर्गा धाम या शिवालय चुनना चाहिये। इसके पश्चात् वैदिक विधि के अनुसार एक सुन्दर मण्डप का निर्माण करना चाहिये। मण्डप के निर्माण में किसी भी धातु का प्रयोग कदापि न करें। बांस एवं लकड़ियों के साथ-साथ घास-फूस निर्मित छत को स्थापित करने के लिये रस्सियों का उपयोग किया जाना चाहिए। मण्डप भूमि के लेपन के लिये केवल गाय का गोबर ही उपयोग किया जाता है। मण्डप इस प्रकार से हो कि उसमें दरवाजा एवं वेदी भी मौजूद हो। मण्डप के चारों ओर आम के पत्तों की वंदनवार बंधी होनी चाहिए एवं शीर्ष पर लाल रंग का ध्वज भी स्थापित करना चाहिए। वन्दनवार में आम्र पत्र खण्डित कदापि नहीं होने चाहिये। हवन कुण्ड मण्डप के मध्य में स्थापित करना चाहिये। समस्त अनुष्ठान का संचालन दस ब्राह्मणों के द्वारा करवाना चाहिए एवं इन ब्राह्मणों का कर्मकाण्ड में प्रकाण्ड होना अत्यधिक आवश्यक है।

कहने का तात्पर्य यह है कि केवल जन्म से ही ब्राह्मण न हो अपितु इनके कर्म भी ब्राह्मणमय हों। विशेष रूप से इन ब्राह्मणों में दुर्गा सप्तशती पाठ को जपने की दक्षता हो। आयोजक को प्रत्येक ब्रह्मण को उचित दक्षिणा, भोजन, वस्त्र इत्यादि प्रदान करने चाहिए। शतचण्डी अनुष्ठान के समय आयोजकों के साथ-साथ ब्राह्मणों को भी पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये भूमि पर शयन करना चाहिये। प्रत्येक ब्राह्मण को प्रतिदिन मार्कण्डेय पुराण के अनुसार चण्डिका स्तवन दस-दस बार पाठ करना चाहिए एवं इसके अलावा सम्पुट युक्त नवार्ण मंत्र का जाप भी 1000 बार प्रत्येक दिन करना आवश्यक है। शहस्त्र चण्डी अनुष्ठान का आयोजक इस प्रकार प्रदेश करना चाहिये कि इसमें सम्पन्न किये जाने वाले 100 पाठों का समापन अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी या पूर्णिमा के दिन हो। इस अनुष्ठान में यजमान के लिये 9 कुमारियों का पूजन करना अत्यधिक आवश्यक है एवं इन बालिकाओं की उम्र 2 से 10 वर्ष के बीच ही होनी चाहिए। इन बालिकाओं का पूजन 9 कुमारियों का पूजन कहलाता है। 9 कुमारियों के पूजन के समय बालिकाओं को उनके नाम से सम्बोधित न करके क्रमशः कुमारी, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिनी, कालिका, शाम्भवी, दुर्गा, चण्डिका और सुभद्रा के नाम से पुकारा जाना चाहिये। मंत्रोच्चार के समय इन्हीं नामों का उपयोग करना चाहये। चयन की गई बालिकाओं हीनाङ्गी(कम अंगों वाली), अधिकाङ्गी अर्थात अधिक अंगों वाली, कोढ़ी, फोड़ों वाली, कुरूप, अंधी, कुबड़ी, दासी से उत्पन्न हुई रोगिणी, रोम वाली नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार की कन्यायें 9 कुमारी पूजन में वर्जित हैं। अब अगर आयोजक का उद्देश्य इस अनुष्ठान में सम्पूर्ण मनोरथ प्राप्ति है तो उसे ब्राह्मण कन्याओं का पूजन करना चाहिये। यश प्राप्ति के लिये क्षत्रिय कन्याओं का, तो वही धन प्राप्ति के लिये वैश्य कन्याओं का और पुत्र प्राप्ति के लिये शूद्र कन्याओं का पूजन करना चाहिए। कन्याओं के पूजन में पूजन सामग्री के अलावा उन्हें भोजन, वस्त्र एवं द्रव्य इत्यादि भी अर्पित करना चाहिये। इनका आवाहन करने के निमित्त शंकरजी का कहा हुआ मंत्र बतलाया जा रहा है- मैं मंत्राक्षरमयी, लक्ष्मीरूपिणी, मातृरूपधारिणी तथा साक्षात् नव दुर्गास्वरूपिणी कन्या का आवाहन करता हूँ। इस समय कुमारी आदि कन्याों के पूजन का मंत्र बतलाया हूँ - हे कौमारि ! हे जगदम्ब ! तुम जगत् की पूजनीया, वन्दनीया और सर्वशक्तिस्वरूपिणी हो, मेरी की हुई पूजा को अङ्गीकार करो, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। मैं त्रिपुररूपिणी, त्रिपुर की आधारभूता, तीन वर्ष की अवस्थावाली, ज्ञानमयी, त्रिभुवनवन्दिता भगवती त्रिमूर्ति की पूजा करता हूँ। जो कलारूपिणी होने पर भी कलातीत है, उस करुणाभरे हृदयवाली शिवारूपा कल्याणजननी भगवती कल्याणी का मैं पूजन करता हूँ। अणिमा आदि गुणों की आश्रयभूता, अकारादि अक्षरमयी, अनन्तशक्तिसम्पन्ना लक्ष्मीरूपा रोहिणी की मैं आराधना करता हूँ। जो इच्छानुसार विचरण करने वाली, सुन्दरी, कान्तिमयी, कालचक्रमयी, कामदायिनी और करुणा करने में उदार है, उस कालिका भवानी की मैं पूजा करता हूँ। जो अत्यन्त कुपित, वीरभाव से युक्त, चण्ड, मायाविनी तथा चण्ड-मुण्ड नामक दैत्यों का नाश करने वाली है उस प्रचण्ड पराक्रमवाली चण्डिका देवी की मैं अर्चना करता हूँ। सदा आनन्द देने वाली शान्तिमयी, सर्वदेववन्दिता, सूर्य भूतमयी, लक्ष्मीरूपा शाम्भवी की मैं आराधना कर रहा हूँ। दुर्गम और दुष्कर कार्य में सांसारिक कष्टों को नष्ट करने वाली, दुर्गतिनाशिनी दुर्गा की मैं भक्तिपूर्वक पूजा करता हूँ। जिसकी सोने की सी आभा है, जो परम सुन्दरी तथा सुख-सौभाग्य को देनेवाली है, उस कल्याणजननी सुभद्रा देवी की मैं पूजा करता हूँ। इन पुराणोक्त मन्त्रों द्वारा कन्याओं का पूजन करना चाहिये। इति कुमारी-पूजा।

सप्तशती महायंत्र का स्थापन एवं पूजन

मण्डप के भीतर सर्वप्रथम वेदी पर सुन्दर सर्वतोभद्रमण्डल

उस पर ब्राह्मणों द्वारा बताई विधि के अनुसार कलश स्थापन करें एवं इस कलश के ऊपर माँ भगवती पार्वती का आह्वान करें एवं उनके समक्ष नवार्ण मंत्र द्वारा आवरण देवताओं का पूजन करें फिर अपने सम्प्रदाय के अनुसार ॐकार पीठ, पूर्ण पीठ और काम पीठ का अर्चन करें। पीठ की पूर्वादि दिशाओं में गणेश, आदि चारक की स्थापना करें। उनके नाम इस प्रकार हैं। गणेश, क्षेत्रपाल, दो पादुकायें और तीन बटुक। आग्नेय कोण से प्रारम्भ कर चारों कोणों में जया, विजया, जयंती और अपराजिता देवियों की आराधना करें। यंत्र के पूर्व कोण में सरस्वती सहित ब्रह्मा नैर्ऋत्य में लक्ष्मी सहित विष्णु और वायव्य कोण में उमा सहित शिव की स्थापना करें। षटकोण चक्र के मध्यवृत्ति मध्यबीज में श्री महालक्ष्मी, दायीं तरफ हीं महाकाली एवं बायीं तरफ ऐं महालक्ष्मी का आह्वान करें। उत्तर दिशा में सिंह और दक्षिण में महिष का स्थापन करें। छः कोणों में क्रमानुसार नंदजा, रक्त दंतिका, शाकम्भरी, दुर्गा, भीमा और भ्रामरी स्थापित करें। इन देवियों की पूजा करते समय उपयोग किये गये मंत्र में इनके नामों के अनुस्वारसहित प्रथम वर्ण और प्रणव विशिष्ट नाम मंत्रों को अवश्य उपयोग करना चाहिये। उदाहरण के लिये "ॐ दुं दुर्गायै नमः" फिर अष्ट दलों में क्रमशः ब्राह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री और चामुण्डा की विधि पूर्वक मंत्रोच्चार के साथ पूजा करें।

तत्पश्चात् अष्ट कमल दल के किञ्जलकों में पूर्वादिक्रम से विष्णु माया आदि 24 देवियों की आराधना करें। प्रत्येक दल में तीन किञ्जल्क होते हैं।

1. विष्णुमाया	2. चेतना	3. बुद्धि
4. निद्रा	5. क्षुधा	6. छाया
7. शक्ति	8. तृष्णा	9. क्षान्ति
10. जाति	11. लज्जा	12. शान्ति
13. श्रद्धा	14. कान्ति	15. लक्ष्मी
16. घृति	17. वृत्ति	18. स्मृति
19. दया	20. तुष्टि	21. पुष्टि
22. माता	23. भ्रान्ति	24. चिति

- ये ही चौबीस देवियाँ हैं।

शतचण्डी विधान में इस प्रकार यंत्र में स्थापित प्रत्येक देवी देवता की पूजा 4 दिन तक करनी चाहिये। उनमें भी प्रथम दिन सप्तशती स्त्रोत का पाठ, दूसरे दिन दो पाठ, तीसरे दिन तीन और चौथे दिन चार पाठ प्रत्येक ब्राह्मण करें। पाँचवे दिन हवन होना चाहिए।

हवन विधि :

हवन कुण्ड में अग्नि का स्थापन पूर्ण वेदोक्त तरीके से ब्राह्मणों को सम्पन्न करना चाहिए। इसके पश्चात् अग्नि में तीन बार मधु में भिगोये हुए हविष्य, द्राक्षा, केला, मातुलिङ्ग, ईख, नारियल, तिल, जातीफल, आम तथा अन्य मधुर द्रव्यों से दस आवृत्ति सप्तशती के प्रत्येक मन्त्र पर हवन करें और एक सहस्त्र नवार्ण मन्त्र से भी हवन करें। फिर आवरण-देवताओं के लिये उनके नाममन्त्रों द्वारा हवन करके यथोचितरूप से पूर्णाहुति दें। तत्पश्चात् ब्राह्मणवृन्द देवताओं सहित अग्नि का विसर्जन करके यजमान को कलश के जल से अभिषिक्त करें। यजमान प्रत्येक ब्राह्मण को भोजन करावे और उन्हें दक्षिणा देकर आशीर्वाद लें। इस प्रकार करने पर जगत् अपने वश में होता है और सभी उपद्रव नष्ट हो जाते हैं।

। इति शतचण्डी विधिः ।

शतचण्डी अनुष्ठान शक्तिसाधकों के लिये परम अस्त्र है परन्तु इस परम अस्त्र का उपयोग केवल जन कल्याण के लिये ही किया जाता है। अन्य स्थितियों में यह पूर्ण रूप से कीलित है। शतचण्डी महायंत्र एवं शतचण्डी अनुष्ठान के द्वारा साधक ब्रह्माण्ड की समस्त शक्तियों को केन्द्रित करने में समर्थ होता है। प्रत्येक शतचण्डी अनुष्ठान में देवी हवनकुण्ड में किसी न किसी स्वरूप में प्रकट होकर साकार दर्शन अवश्य प्रदान करती हैं और इस प्रकार के अनुष्ठान से साधक का जीवन दिव्यता एवं शक्ति से परिपूर्ण हो जाता है।

शास्त्रोक्त हवन विधि

किसी भी पूजा जप आदि के बाद हवन का विशेष महत्व है। हवन का अर्थ है विभिन्न देवी देवताओं को उनके नाम अथवा मत्रों का उच्चारण करते हुये अग्नि में आहुतियाँ देना। हवि (हवन सामग्री) के रूप में घृत, शर्करा, अन्न तथा विविधि सुगन्धित जड़ी-बूटियों का प्रयोग किया जाता है। हवन के लिये सामान्यत: आम की समिधा (लकड़ी) का उपयोग अग्नि को प्रज्जवलित करने के लिये किया जाता है तथा हवन सामग्री के रूप में सामान्यत: काली तिल, जौ, घी, गुड़ और अष्टगंध आदि का मिश्रण प्रयुक्त होता है।

हवन कैसे करें -

सर्वप्रथम यज्ञ भूमि को गाय के गोबर से लीपकर हवन वेदी का निर्माण करें फिर स्नानादि से निवृत्त होकर पूर्वाभिमुख हो आसन पर बैठें।

पवित्रीकरण -

बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अंगुलियों से पूजन सामग्री तथा अपने ऊपर जल छिड़कें। निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपिवा।
य: स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभयन्तर: शुचि: ।
ॐ पुण्डरीकाक्ष: पुनातु: ।

आचमन-

अब आचमनी में जल लेकर क्रमश: निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुये तीन बार आचमन करें।

ॐ केशवाय नम: । ॐ माधवाय नम: ।
ॐ गोविन्दाय नम: ।

विनियोग -

उक्त मंत्र का उच्चारण करने के उपरांत हाथ धो लें। फिर हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का उच्चारण करते हुये जल को भूमि पर छोड़ दें -

ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि: सुतलं छन्द कूर्मोदेवता आसने विनियोग: ।

अब निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये आसन पर जल छिड़कें।

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनं ॥

यस्या: स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया । यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता । यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्षया ।यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा । एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका । एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका । अत एवोच्यते अज्ञेयानन्ता लक्ष्याजेका नैकेति ॥

जिसका स्वरूप ब्रह्मादिक नहीं जानते इसलिये जिसे अज्ञेया कहते हैं, जिसका अन्तं नहीं मिलता इसलिये जिसे अनन्ता कहते हैं, जिसका लक्ष्य देख नहीं पड़ता इसलिये जिसे अजा कहते हैं, जो अकेली ही सर्वत्र है इसलिये जिसे एका कहते हैं, जो अकेली ही विश्व रूप में सजी हुई है इसलिये जिसे नैका कहते हैं, वह इसीलिये अज्ञेया, अनन्ता, अजा, एका और नैका कहलाती हैं।

भूत शुद्धि -

अब भूत शुद्धि के लिये बायें हाथ में पीली सरसों लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये दाहिने हाथ से चारों ओर छिड़क दें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ।
ये भूता विध्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

रक्षा द्वीप -

भूमि पर अक्षत रखकर उस पर घी का दीपक प्रज्जवलित करें फिर गंध, अक्षत पुष्पादि से दीपक का पूजन निम्न मंत्रों के द्वारा करें -

भोदीप त्वंब्रह्मरूप सन्धकारनिवारक ।
उमां मयाकृतां पूजां गृहणंस्तेज प्रवर्धय ॥

अब निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये हवन वेदी में अग्नि स्थापित करें -

ॐ अग्निंदू तं पुरोदधे हव्यवाहमुप्वुवे ।
देवाँ देवाँऽआसादयादिह ॥

अब निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये अग्नि को प्रज्जवलित करें -

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स ।

ॐ सूजेथामयंच अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्
विश्वदेवा यजमानश्चसीदत ।

अब मृगी मुद्रा से स्रुवा पकड़कर (कलम की तरह) निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुये घी से आहुति दें -

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजपतये नमम ।
ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदं इन्द्राय नमम ।
ॐ अग्नये स्वाहा, इदं सोमाय नमम ।
ॐ सोमाय स्वाहा इदं अग्नाये मम ।
ॐ भूः स्वाहा, इदं अग्नये नमम ।
ॐ भवः स्वाहा, इदं सूर्याय नमम ।
ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय नमम ।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं वायवे नमम ।
ॐ विष्णवे स्वाहा, इदं विष्णवे नमम ।
ॐ श्रिये स्वाहा, इदं श्रिये नमम ।
ॐ षोडश मातृभ्यः स्वाहा, इदं मातृभय नमम ।

अब अलग-अलग प्रकार की समिधा (लकड़ी) घी में डुबोकर

> गृहस्थ साधक की मानसिक स्थिति अनेक भागों में विभाजित होती है । यही गृहस्थ जीवन की गति है परंतु इस गति के चलते हुए वह अपने सभी दायित्वों का निर्वाह सफलतापूर्वक करने में तभी समर्थ हो पाता है जब वह माँ की आराधना के लिए कुछ न कुछ समय निकाल पाये । ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण शास्त्रीय एवं वेदोक्त पूजन का कार्य थोड़ा सा कठिन जान पड़ता है अतः साधक को किसी तत्वज्ञानी व्यक्तिगत से पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित दुर्गा यंत्र प्राप्त करके उसे अपने पूजन गृह में स्थापित करना चाहिए जिसके द्वारा उसके घर, औद्योगिक संस्थान इत्यादि में आदि शक्ति का स्त्रोत निरंतर दिव्य ऊर्जा प्रवाहित करता रहे । प्रत्येक सनातन धर्म से सम्बन्धित वंश वृक्ष में परिवार कल्याण के लिए आराधना गृह का होना अति आवश्यक है एवं आराधना गृह की सम्पूर्णता प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य यंत्र की उपस्थिति में ही सम्भव हो पाती है । यंत्रों के द्वारा पूजन भावनाओं के सम्प्रेषण को अति तीव्र बना देता है ।
>
> **श्री अरविन्द**

उनके सम्मुख उल्लिखित मंत्रोच्चार करते हुये आहुतियाँ दें -

अर्क समिधा से - *ॐ सूर्याय स्वाहा, इदं सूर्याय नमम ।*
पलाश समिधा से- *ॐ चन्द्रमसे स्वाहा इदं चन्द्रमसे नमम ।*
खैर समिधा से - *ॐ भौमाय स्वाहा, इदं भौमाय नमम ।*
अपामार्ग की समिधा से - *ॐ बुधाय स्वाहा, इदं बुधाय नमम ।*
पीपल समिधा से - *ॐ ब्रहस्पतये स्वाहा, इदं ब्रहस्पतये नमम ।*
गूलर समिधा से - *ॐ शुक्राय स्वाहा,इदं शुक्राय नमम ।*
दूर्बा समिधा से - *ॐ राहवे स्वाहा, इदं राहवे नमम ।*
कुशा से - *ॐ केतवे स्वाहा, इदं केतवे नमम ।*

यदि सभी प्रकार की समिधा उपलब्ध न हो सके तो केवल घी से ही अलग-अलग सभी मंत्रों का उच्चारण करते हुये आहुतियाँ दें सकते हैं ।

संकल्प -

अब हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प मंत्र का उच्चारण करें -

श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रसन्नतार्थं च त्रितापात सर्वाबाधा प्रशमनार्थं ग्रहकृत, राजकृत, दोष निवारणार्थं सर्व विधमनोरथ

कामना सिद्धार्थं श्री दुर्गा देवी प्रीतये दुर्गा सप्तशती मन्त्रैर्यथाविधि हवनं च करिष्ये।

अब भगवान गणेश जी को निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये 108 आहुतियाँ दें -

//ॐ गं गणपतये स्वाहा //

अब ''ह्रीं अम्बिकायै स्वाहा'' इस मंत्र का उच्चारण करते हुये गौरी की 108 आहुतियाँ दें। उपरोक्त विधि से आहुतियाँ देने के पश्चात् देवी दुर्गा के तीनों कवचों का पाठ करें। फिर

''ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै बिच्चे स्वाहा''

उपरोक्त मंत्र से 108 आहुतियाँ दें।

दुर्गा सप्तशती का पाठ करते समय प्रत्येक श्लोक के अंत में भी आहुति देने का विधान है। अध्याय की समाप्ति पर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये पाँच आहुतियाँ दें -

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा।
ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाम स्वाहा॥
ॐ व्यानाय स्वाहा।

अंत में दूर्बा, कुशा अथवा ताम्बूल या पुष्प से जल लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये अग्नि का सींचन करें -

आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शन्नतमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

पूर्णाहुति -

नारियल में छिद्र कर घी भरकर लाल वस्त्र लपेटकर उस पर पान, सुपारी आदि रखकर (ॐ पूर्णाहुत्यै नमः) इस मंत्र से पूजन कर खड़े होकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये अग्नि में छोड़ें -

ॐ मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कवि समाजमति थिंजनानामास न्नापात्रंजनयन्त देवा स्वाहा। ॐ पूर्णाद्रव्विपर - त्रसुपूर्णा पुनरापत। व्वस्ने वव्वि कीणावहा इष मूर्ज्ज शतक्रतो स्वाहा।

अंत में माँ भगवती की आरती करें।

जगजननी जय, जय!(माँ! जगजननी जय, जय!)
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय, जय जगजननी।
तू ही सम-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सूर-भूपा॥ जगजननी.
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनंदराशी॥ जगजननी.
अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी।
कर्त्ता विधि, भर्ता हरि, हर सँहारकारी॥ जगजननी.
तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया॥ जगजननी.
राम, कृष्ण तू, सीता, वृजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा॥ जगजननी.
दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा॥ जगजननी.
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।
तु ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू॥ जगजननी.
सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा॥ जगजननी.
तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना॥ जगजननी.
मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे॥ जगजननी.
शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी।
भेदप्रर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी॥ जगजननी.
हम अति दीन दुखी मा! विपत-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥ जगजननी.
निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजे।
करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजे॥ जगजननी.

गर्भपात के भय से मुक्ति दिलाकर तेजस्वी बालक के जन्म का मार्ग प्रशस्त करता है

गर्भ रक्षा प्रयोग

मातृप्त नारी जीवन का सबसे सुखद पहलू है यूँ तो हमारे शास्त्र भी संतति उत्पत्ति को एक अनिवार्य संस्कार या कर्म बताते हैं किन्तु नारी के जीवन की तो सम्पूर्णता ही माँ बनने में है शिशु की किलकारियाँ जिस आंगन में न गूंजे जिस माँ को अपने पुत्र को अपने वक्षस्थल से लगाकर उस पर मातृत्प की वर्षा करने का सौभाग्य प्राप्त न हो उसका जीवन तो बंजर जमीन की ही भांति है।

प्राय: हर दम्पति का यही सपना होता है कि उसकी स्वस्थ, सुन्दर व दिव्य संतान हो और उन्हें संतान का भरपूर सुख मिले। प्रत्येक माँ का यह सपना होता है कि उसकी कोख से ऐसी संतान जन्म ले और अपने तथा अपने माता-पिता का नाम रौशन करे। जरा सोचिये कितनी सुखद घड़ी होती होगी वह जब वे अपने बच्चे को वात्सल्य से पुकारते होंगे और बच्चा दौड़कर उनकी गोद से समा जाता होगा। उस समय माता-पिता में उत्पन्न होने वाले ममत्व एवं वात्सल्य भाव की कल्पना मात्र से ही मन भाव विभोर हो जाता है।

ठीक उसके विपरीत यह भी कड़वी सच्चाई है कि आज ऐसे दम्पत्तियों की संख्या भी कम नहीं है जिनकी जीवन रूपी बगिया में पुत्र रूपी फूल नहीं खिला। यद्यपि आज जब विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है और नित नये अविष्कार किये जा रहे हैं और यहाँ तक कि ''परखनली शिशु'' भी पैदा किये जा रहे हैं तथापि ऐसे लोगों को प्रतिशत भी कम नहीं है जो संतान के जन्म को ईश्वर की कृपा मानते हैं मैं यह नहीं कहना चाहते कि ''विधि का विधान'' एक रूढ़ि है हम तो स्वयं ईश्वरीय सत्ता के महत्व को स्थापित करना चाहते हैं किन्तु यह भी सत्य है कि मानव जीवन पाकर इस धरा पर हम जो कष्ट झेलते हैं वह हमारे अपने कर्मों का फल है।

एक धारणा यह भी है कि जीवन में उत्पन्न होने वाली बाधाओं, विपत्तियों का मूल कारण पूर्व जन्म में उसके द्वारा किये गये बुरे कर्म हैं। यह बात काफी हद तक सत्य भी है क्योंकि शिशु के जन्म लेने से पूर्व अथवा गर्भावस्था के समय माता-पिता द्वारा किये गये बुरे कर्मों की छाप शिशु में स्पष्ट परिलक्षित होती है।

अधिसंख्य स्त्रियों की समस्या यह होती है कि वह गर्भ तो धारण कर लेती हैं किन्तु गर्भस्थ शिशु का सम्पूर्ण विकास होने से पूर्व ही गर्भपात हो जाता है। बार-बार गर्भपात होना दम्पतियों के लिये एक बहुत बड़ी विडम्बना है इससे न सिर्फ उस महिला के स्वास्थ्य में गिरावट आ जाती है और रक्त की कमी आ जाती है बल्कि बार-बार गर्भपात से गर्भधारण की क्षमता समाप्त हो जाती है और कभी-कभी तो स्थिति यहाँ तक पहुँच जाती है कि अत्यधिक रक्तस्त्राव के कारण उस महिला के जीवन को भी खतरा उत्पन्न हो जाता है।

गर्भ रक्षा प्रयोग - एक ऐसा अमोघ साधन है जिससे गर्भिणी स्त्री न केवल गर्भपात के भय से मुक्त हो जाती है बल्कि वह श्रेष्ठ व उच्चकोटि की संतान को उत्पन्न करने में सक्षम होती है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिये लाखों रुपये फूंकने की भी जरुरत नहीं

पड़ती बल्कि बहुत ही सीमित सामग्री की सहायता से कोई भी दम्पत्ति यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं।

गर्भ रक्षा यंत्र-

8	15	2	7
6	3	12	11
14	9	8	1
4	5	10	13

यह गर्भ रक्षा के लिये अमोघ यंत्र है। जिस स्त्री को बार-बार गर्भपात हो जाता हो उसके पास प्राण प्रतिष्ठित "गर्भ रक्षा यंत्र" रखने अथवा कमर में बाँधने से सभी तरह के दो मिट जाते हैं तथा गर्भ की रक्षा होती है और पूर्ण काल में प्रसव होता है।

यंत्र धारण करने के साथ-साथ गर्भिणी को गर्भावस्था के दौरान सात्विक भोजन लेना चाहिये तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये।

यंत्र का निर्माण कैसे करें ?

साधक को चाहिये कि वह स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र पहन कर पहले से शुद्ध पूजा स्थल पर बैठें। सामने बाजोट पर भोजपत्र रखकर उस पर अष्टगंध से उक्त यंत्र बनायें तथा उसे धूप दीप आदि दिखायें। यंत्र लिखते समय मौन रहना उचित है। यंत्र अपने घुटने पर रखकर लिखना वर्जित है।

प्राण प्रतिष्ठा-

यंत्र को अपने सम्मुख रखकर धूप, दीप, पुष्प, कुंकुंम, अक्षत आदि से उसकी पूजा करें तथा निम्नानुसार प्राण प्रतिष्ठा मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ आं क्रों ह्रीं असि उ सा य र ल व श ष स हं स गर्भ रक्षा यंत्रस्य त्व ग्र शास्त्र मांसमेदोऽस्थिमज्जा शुक्राणि घातवः गर्भरक्षा यंत्रस्य काय वाड़ मनश्चक्षुः श्रोत्र घ्राण मुख

यः सर्वभूतप्रशमे निविष्टः सत्यो मृदुर्मानकृच्छुद्धभावः।
अतीव स ज्ञायते ज्ञातिमध्ये महामणिर्जात्य इव प्रसन्नः॥

जो सभी को सुख पहुँचाने की चिन्ता करता है, जो सभी के लिये प्रयत्नशील है, जो सत्य बोलने वाला, भावुक, दूसरों को सम्मान देने वाला एवं पवित्र विचारों वाला है, वह उत्तम पुरुष दुर्लभ मणि के समान मूल्यवान है।

जिह्वा सर्वाणि इन्द्रियाणि शब्द स्पर्श रस गंध, प्राणायान समोनोदान व्याना: सर्वे प्राणा: ज्ञान दर्शन प्राणश्च इहेव आशु आगच्छत-आगच्छत संवोषट् स्वाहा। अत्र तिष्टत-तिष्टत ठः ठः स्वाहा। उपरोक्त प्राण प्रतिष्ठा यंत्र का जाप कम से कम सात बार करें। यंत्र को अपवित्र न होने दें तथा उसकी नियमित पूजा अर्चना करें।

गर्भ रक्षा प्रयोग-

यह प्रयोग नवरात्रि अथवा किसी भी शुभ तिथि को सम्पन्न किया जा सकता है। साधक को चाहिये कि वह स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें तत्पश्चात् उत्तर अथवा पूर्ण की ओर मुख करके आसन पर बैठ जाये। अपने सम्मुख बजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर गर्भरक्षा यंत्र स्थापित कर दें। यंत्र में अक्षत, कुंकुंम, पुष्प आदि चढ़ायें साथ ही गणपति पूजन व गुरु पूजन तथा भगवती दुर्गा का पूजन सम्पन्न करें धूप, दीप आदि जला लें।

अब दोनों हाथ जोड़कर माँ भगवती की प्रार्थना करें -

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेने च॥
सर्वबाधा विनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥

अब निम्न यंत्र की सात या नौ माला जप करें।

। ॐ यं हं रं: ।

ततपश्चात् यंत्र को गर्भिणी के पास रख दें अथवा उसकी कमर में बाँध दें।

मूर्ति रहस्य

प्रतिक्षण पंचेन्द्रिय कर्मों में लिप्त मनुष्य के लिये निराकार एवं सूक्ष्म आदि शक्ति भवानी का पूजन कर पाना कठिन हो जाता है। पंचेन्द्रिय कर्मों की संलग्न लिप्तता मनुष्य में वृद्धि और तर्क की प्रधानता बढ़ा देती है। ये ग्रंथियाँ यंत्रवत कार्य करने के लिए समस्त शरीर को निरंतर प्रेरित करती रहती हैं। ऐसी स्थिति में अगर आदि शक्तियाँ मनुष्य के द्वारा इन्द्रियों के माध्यम से मस्तिष्क में प्रक्षेपित नहीं होती है तो व्यक्ति विशेष का ईष्ट में ध्यान लगाना अत्यधिक दुष्कर हो जाता है।

वैदिक ऋषियों के साथ भी यही समस्या खड़ी हुई है। मंत्र दृष्टाओं और वैदिक ऋषियों ने तो अपनी दिव्य इन्द्रियों से आदि शक्ति माँ भवानी के सूक्ष्म से सूक्ष्म और गुप्त से गुप्त रहस्य एवं लीलाओं को समझ लिया एवं प्रज्ञा शक्ति के द्वारा माँ आदि शक्ति के विभिन्न स्वरूपों के तेज गुण और सौन्दर्य का भली भांति दृष्टांत किया परंतु इन दृष्टांतों और देवी के विहंगम स्वरूप को वे जन साधारण तक कैसे पहुँचाये उनके सामने यह समस्या विकराल रूप में खड़ी हुई। वैदिक ऋषियों ने अपने ब्रह्म ज्ञान से यह भी जान लिया कि पृथ्वी लोक में नाना प्रकार के दु:खों का जड़मूल से निवारण माँ आदि शक्ति की शरण में ही हो सकता है अत: इस समस्या के समाधान के लिये उन्होने पुन: माँ आदि शक्ति के मूल स्वरूप रूपी स्त्रोत से ही प्रार्थना की और अपनी समस्या के निवारण के लिये देवी को उन स्वरूपों में प्रकट होने के लिये आह्वान किया जिसके द्वारा जनमानस भी उनकी स्तुति में लीन होकर कल्याण को प्राप्त कर सके। इस प्रकार दुर्गा सप्तशती में वर्णित अति गोपनीय मूर्ति रहस्य का प्रादुर्भाव हुआ। मूर्ति रहस्य में वर्णित माँ आदि शक्ति के विभिन्न स्वरूप स्वयं माँ भवानी द्वारा प्रदर्शित किये गये हैं जिससे कि जनमानस अपनी सुविधानुसार देवी को रक्त के प्रत्येक कण में आत्मसात करके पृथ्वी लोक में मौजूद नाना प्रकार के रोग, कष्टों एवं दु:खों से मुक्ति प्राप्त करता हुआ जीवन में सम्पूर्ण भौतिक सुखों की प्राप्ति के साथ-साथ कल्याण को प्राप्त कर सके। मूर्ति रहस्य में वर्णित देवी के 6 स्वरूप ही मूर्ति निर्माण कला में मुख्य रूप से प्रचलित है एवं इन्हीं रहस्यों के अनुसार निर्मित देवी की प्रतिमा में प्राण प्रतिष्ठा वैदिक रूप में सम्भव हो पाती है। देवी के ये दिव्य स्वरूप ही साधक चाहे वह स्त्री हो या पुरुष के अंदर देवी कला विकसित करते हैं। देवी कला से युक्त साधक अत्यंत ही सुदर्शन, सम्पूर्ण अंगों का विकास लिए, स्पष्ट वाणी, विचार एवं आरोग्य के साथ इस पृथ्वी पर मन मोहनी छटा विखेरता रहता है।

कुरुपता, अविकसित शरीर, असंतुलित चेहरा, चलायमान मानसिक प्रवृत्ति, हमेशा ज्वरों से ग्रसित रहना, जीवन में घोर दरिद्रता, स्त्री कष्ट, शासन के द्वारा प्रताड़ित किया जाना, बन्दी स्वरूप जीवन व्यतीत करना एवं मृत्यु के समय अथाह कष्ट झेलना इन सब विपरीत कर्मों को एक गृहस्थ व्यक्ति देवी के अद्भुत 6 स्वरूपों की स्तुति वन्दना एवं पूजा उपासना से भी दूर कर सकता है। मूर्ति रहस्य को आत्मसात करने वाला व्यक्ति न सिर्फ पृथ्वी लोक अपितु तीनों लोक में सुख भोगता है।

नंदा देवी - ऋषि कहते हैं कि नंदा देवी की उत्पत्ति नंद से हुई है यदि उनकी भक्ति पूर्वक स्तुति और पूजा की जाय तो वे साधक को तीनों लोकों में प्रतिष्ठित कर देती हैं। उनके श्री अंगों की कांति स्वर्ण के समान उत्तम है। वे हमेशा सुनहरे रंग के सुन्दर वस्त्रों में दर्शन देती है। उनका आभामण्डल स्वर्ण के समान चमकीला है। वह स्वर्ण से निर्मित उत्तम आभूषणों को ही धारण करती हैं एवं उनकी चार भुजाओं में कमल, अंकुश, पाश और शंख शुसोभित है। वे ही लक्ष्मी, श्री, इन्दिरा, कमला एवं रुक्माम्बुजासना (स्वर्णमय कमल के आसन पर विराजमान) आदि नामों से पुकारी जाती हैं।

रक्तदन्तिका - रक्तदन्तिका स्वरूप में माँ आदिशक्ति हमेशा लाल रंग के वस्त्र धारण करती हैं एवं उनका शरीर भी लाल रंग का है। उनके समस्त अंगों में सुशोभित आभूषण भी लाल रंग के हैं। यहाँ तक कि उनके दिव्य स्वरूप में अस्त्र, शस्त्र, नेत्र, सिर के बाल, तीखे नख और दाँत सभी रक्त वर्ण के हैं इसीलिए वे रक्तदन्तिका कहलाती हैं। रक्तदन्तिका देवी सभी भयों को समग्र रूप में दूर करती हैं। जिस प्रकार स्त्री अपने पति के प्रति अनुराग रखती है उसी प्रकार देवी अपने भक्तों पर माता की भांति स्नेह रखते हुये उनकी सभी मनोकामनाऐं पूर्ण करती हैं। देवी रक्तदन्तिका का आकार वसुधा की भांति विशाल है। उनके दोनों स्तन सुमेरु पर्वत के समान है। वे लम्बे, चौड़े, अत्यंत स्थूल एवं बहुत ही मनोहर है। कठोर होते हुए भी अत्यंत कमनीय है तथा पूर्ण आनंद के समुद्र हैं। सम्पूर्ण मनोकामना रूपी अमृत धारा इन्हीं स्तनों के माध्यम से भक्तों को प्राप्त होती है। वे चार भुजाओं में खड्ग, पान पत्र, मूसल और हल धारण किये हुए हैं। इन्हीं देवी के तेज से सम्पूर्ण चराचर जगत व्याप्त है।

भगवान के बिना भगवती ?

भगवान् के बिना सिर्फ भगवती की उपासना करने का जो फल या परिणाम होगा, उसके बारे में श्रीलक्ष्मीनारायण हृदय नाम के उपासना ग्रंथ में स्पष्ट कहा गया है कि ऐसी उपासना से-

'लक्ष्मीः क्रुध्यति सर्वदा'

अर्थात जिस भगवान को छोड़कर केवल भगवती की उपासना की गयी है वह भगवान रुष्ट नहीं होता, बल्कि उसे छोड़कर जिस भगवती की उपासना की गयी है वही देवी जगन्माता रुष्ट हो जाती है। फिर इससे बढ़कर भयंकर अनर्थ क्या हो सकता है।

जो साधक प्रतिदिन माँ रक्तदन्तिका का स्तवन करता है उसे वे प्रेम पूर्वक संरक्षण देती हैं एवं इस चराचर जगत में सम्पूर्ण भोगों को भोगता हुआ अंत में साधक देवी के साथ सामुज्य प्राप्त करता है। रक्तदन्तिका ही, रक्त चामुण्डा और योगेश्वरी देवी कहलाती हैं।

शाकम्भरी स्वरूप देवी - शाकम्भरी देवी का शरीर नीले रंग की आकर्षक कांति लिये हुए हैं। उनके नेत्र नील कमल के समान एवं नाभि नीची है तथा त्रिवली (तीन रेखायें) से विभूषित उदर (मध्यभाग) सूक्ष्म है। उनके दोनों स्तन अत्यंत ही कठोर, सब ओर से बराबर, ऊँचे, गोल स्थूल तथा परस्पर सटे हुए हैं। वे परमेश्वरी कमल में निवास करने वाली हैं और हाथों में बाण से भरी मुट्ठी, कमल, शाक-समूह तथा प्रकाशमान धनुष धारण करती हैं। वह शाक समूह अनंत मनोवांछित रसों से युक्त तथा क्षुधा, तृषा और मृत्यु के भय को नष्ट करने वाला व फूल, पल्लव, मूल आदि एवं फलों से सम्पन्न शाकम्भरी स्वरूप ही शताक्षी तथा दुर्गा इत्यादि रूपों में वर्णित है। उमा, गौरी, सती, चण्डी, कालिका, पार्वती भी वे ही हैं। वे उपने साधकों को शोक से रहित, दुष्टों का दमन करने वाली तथा पाप और विपत्ति को शांत करने वाली देवी हैं। इनकी स्तुति, ध्यान, जप, पूजा और शीघ्र ही साधक को अमृत रूपी फल प्रदान करता है।

भीमा देवी स्वरूप - भीमा देवी का वर्ण नील है। उनकी दांढे और दांत चमकते रहते हैं। उनके नेत्र अत्यंत विशाल एवं स्वरूप स्त्री का है। स्तन गोल और स्थूल

स्त्री का मातृस्वरूप

- हमारे शास्त्र तो यहाँ तक पहुँचे हुए हैं कि वे इतना ही नहीं कहते कि जगन्माता भगवती को जगदगुरु मानो और पूजो, परन्तु वे कहते हैं कि स्त्री मात्र को जगन्माता और जगदगुरु मानो और पूजो-

'सर्वस्त्रीनिलया' जगदम्बामयंपश्य
स्त्रीमात्रमविशेषतः ॥

इत्यादि अनेक प्रमाणों से यह सिद्धांत स्थिर होता है कि स्त्रीमात्र जगदम्बा भगवती चर और प्रत्यक्ष रूप है, अतः उसके प्रति मनुष्य को अत्यन्त मान, आदर और सत्कार की भावना रखनी चाहिये।

माता का गुरुत्व

मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव।
मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद ॥

इत्यादि मंत्रों में माता को ही सबसे पहला स्थान दिया गया है। इसका भी यही कारण है कि माता ही आदिगुरु है और उसी की दया और अनुग्रह के ऊपर बच्चों का ऐहिक, पारलौकिक और पारमार्थिक कल्याण निर्भर रहता है।

हैं। वे अपने हाथों में चंद्रहास नामक खड्ग, डमरू, मस्तक और पान पात्र धारण करती है। वे ही एकवीरा, काल रात्रि तथा कामदा के नामों से प्रसिद्ध होती हैं। इनकी पूजा आराधना एवं ध्यान से गुप्त से गुप्त सिद्धियाँ, महाबल, शिव रहस्य एवं वरदान प्राप्त होते हैं।

भ्रामरी देवी - भ्रामरी देवी स्वरूप की कांति विचित्र (अनेक रंग की) है। वे अपने तेजो मण्डल के कारण दुर्धर्ष दिखाई देती हैं। उनका अंग राग भी उनके रंग का है तथा वे विचित्र आभूषणों से विभूषित हैं। चित्र भ्रमण, पाणि और महामारी आदि नामों से उनकी महिमा का गान किया जाता है। इनकी पूजा अर्चना साधक को अनेकों महामारी से बचाती है एवं जीवन के सभी आयामों में सफलता प्रदान करती है। इस प्रकार दुर्गा सप्तशती के मंत्रों में वर्णित मूर्ति रहस्य के पाठ से ही मनुष्य सात जन्मों में उपार्जित ब्रह्म हत्या जैसे घोर पापों से मुक्त हो जाता है। देवी सर्वरुपमयी हैं तथा सम्पूर्ण जगत देवीमय है। अतः मैं उन विश्व रूपी परमेश्वरी को नमस्कार करता हूँ।

॥ इति मूर्ति रहस्यम् सम्पूर्णम् ॥

मूर्ति रहस्य में वर्णित माँ आदि शक्ति का स्वरूप पूर्ण रूप से मातृ दर्शन के रूप में ही लेना चाहिए। साधक के मन में एक माँ के प्रति जो आदर और सात्विक भाव होता है उसी को धारण करके इसका पाठ करना चाहिए किसी भी प्रकार का स्त्री दोष मन में धारण करके माँ की पूजा अर्चना घोर पाप है। साधक के मन में जितना बाल्य स्वरूप स्थापित होगा उतना ही फल उसे मूर्ति रहस्य का प्राप्त होगा।

एक बात विशेष तौर पर समझ लेनी चाहिए कि पृथ्वी लोक में शरीर धारण करने की स्थिति में मात्र बाल्य अवस्था ही वह अवस्था है जब मनुष्य अबोध होता है और अबोध अवस्था में परम चेतना एवं प्रेममयी मातृ शक्ति का साक्षात सानिध्य सहज ही प्राप्त होता रहता है। इस दुर्लभ बाल्यावस्था को प्राप्त करने के लिए ही मंत्र दृष्टा, तंत्र दृष्टा, कर्मकाण्डी एवं अनेकों प्रकार की पद्धतियों का इस्तेमाल करने वाले साधक प्रतिक्षण लालायित रहते हैं। जिस व्यक्ति में बाल्यावस्था किसी न किसी रूप में हमेशा विद्यमान रहती है वही प्रेम, वात्सल्य और अनुराग जीवन भर प्राप्त करता रहता है देवी, परम कृपावान है परंतु आँखों में दृष्टिदोष एवं मन में कलुषित काम भावना और कुकर्मों के कारण ही मनुष्य देवी कृपा से दूर होता जाता है। परमहंस स्वरूप व्यक्तित्व की विशेषता यही है कि उनमें पुनः अबोध बालक के समान लिंग भेद समाप्त हो जाता है इसी परम निर्मलता के कारण स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कलकत्ता स्थित दक्षिणेश्वर काली मंदिर में माँ काली के सानिध्य को सम्पूर्ण जीवन प्राप्त किया। निर्मल साधकों के लिये देवी कला की प्राप्ति उनके लिये मात्र खिलौना बनकर रह जाती है। दुर्लभ से दुर्लभ सिद्धियाँ उनके इर्द-गिर्द नर्तन करती हैं परंतु वह उनमें लिप्त हुये बगैर प्रतिक्षण माँ का सानिध्य पाने की ही चेष्टा करते हैं। ऐसी स्थिति में सिद्धियाँ उनके लिये खिलौने की भांति कोई महत्व नहीं रखती है।

प्रतिदिन सम्पादित कर्मों को शुद्ध करने के लिए क्षमा प्रार्थना

मनुष्य रूपी देह में निवास करने वाली आत्मा के पूर्ण चेतनामय होने पर भी उसे प्रतिदिन अनेकों कर्म सम्पन्न करने पड़ते हैं। इन कर्मों में से कुछ कर्म अनचाहे में ही विपरीत फल देते हैं तो फिर कुछ कर्म बुद्धि और तर्क की उपस्थिति के कारण ही इस प्रकार सम्पन्न हो जाते हैं कि उनके लिए क्षमा याचना अत्यधिक आवश्यक हो जाती है। कर्मों की श्रृंखला हमें विरासत में भी प्राप्त होती है और इसके साथ जीवन में काल और परिस्थिति के अनुकूल शरीर को बनाये रखने के लिए अनेकों कर्म न चाहते हुए भी करने पड़ते हैं।

मनुष्य देह के रूप में कर्मों से मुक्ति पाना लगभग असम्भव है विशेषकर गृहस्थ जीवन में तो अनेक अनचाहे कर्मों के बोझ से मनुष्य दबा रहता है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वह गृहस्थ छोड़कर वन की तरफ भाग जाये। मातृ रूपी आदि शक्ति माँ भवानी के अनंत चेतनामय नेत्र अपने बालक रूपी भक्त को सदैव निहार रहे होते हैं और जिस प्रकार माँ अपने बालक की सभी गल्तियों को क्षमा कर देती है ठीक इसी प्रकार मातृ शक्ति का उपासक चाहे उसे पूजा आती हो या न आती हो, मंत्रों का उच्चारण वह ठीक से नहीं कर सकता, न ही वह विसर्जन एवं अन्य क्रियाओं से परिचित है पर फिर भी अगर वह हृदय से माँ के समक्ष अपने अपराधों के लिये क्षमा प्रार्थना करता है तो भी उसे उतना ही फल प्राप्त होता है जितना कि एक कर्मकाण्डी साधक को।

यह एक सच्ची घटना है माँ- दुर्गा के मंदिर में पुजारी प्रतिदिन नेवैद्य पूर्ण कर्मकाण्ड के साथ अर्पित करता था और माँ सूक्ष्म स्वरूप में उसे ग्रहण करती थी परंतु एक दिन किसी कारणवश पुजारी स्वयं माँ को नेवैद्य अर्पित करने मंदिर में नहीं जा पाया तब उसने अपने बालक से कहा कि आज तुम यह नैवेद्य ले जाकर माँ के चरणों के समक्ष अर्पित करो। अबोध बालक ने बिना कर्मकाण्डीय क्रिया को सम्पन्न किये नेवैद्य ले जाकर माँ के चरणों में अर्पित किया एवं पूर्ण हृदय से माँ का आह्वान करते हुए प्रसाद ग्रहण करने का अनुग्रह किया कुछ ही क्षणों में थाली में रखा सम्पूर्ण नेवैद्य खाली हो गया। यह बात जब बालक ने जाकर पुजारी से

बताई तो वह हतप्रभ हो गया एवं उसे एहसास हुआ कि **बिना पूर्ण हृदय भाव से किया गया कर्मकाण्ड मात्र यंत्रवत प्रक्रिया है परंतु हृदय भाव से किया गया एक आह्वान सभी कर्मकाण्डों से उत्तम होता है।**

देवी का सानिध्य केवल भक्ति भाव के साधकों को ही मिलता है। भक्ति और श्रद्धा दुर्लभ तत्व है इन तत्वों के विकसित होने पर देवी साक्षात प्रकट हो जाती है और भक्त और इष्ट के बीच फर्क समाप्त हो जाता है। बुद्धिमान एवं तर्कवादी मनुष्य अध्यात्म का स्वाद जीवन पर्यन्त नहीं चख पाते। मातृ स्वरूप में जगदम्बा को प्राप्त करने के लिए साधक को बाल्य स्वरूप धारण करना पड़ता है यही आदि शक्ति माँ भवानी को प्राप्त करने का मूल तत्व है। बाल्य सुलभ साधक माता से कुछ भी नहीं छुपाता और माता भी उसकी बड़ी से बड़ी गलतियाँ उसके बाल्य स्वरूप के कारण माफ कर देती हैं। मातृ पूजन से ही आँखों में वह पवित्रता उत्पन्न होती है जिसके फलस्वरूप प्रत्येक स्त्री में साधक को मातृ दर्शन ही होते हैं। माँ काली के परम भक्त स्वामी रामकृष्ण परमहंस को काली इतनी सिद्ध थीं कि जब वे मूर्ति का श्रृंगार करते थे तो मूर्ति स्वयं शरीर धारण कर लेती थी और यहाँ तक कि विवाहित होने के पश्चात् भी वे अपनी पत्नी को 14 वर्ष की उम्र से माँ पुकारने लगे थे। परमहंस अवस्था में साधक माँ की प्रत्येक मूर्ति में उनके विशिष्ठ अंश का दर्शन करने में समर्थ होता है तो वहीं अगर एक वर्ष तक अखण्ड रूप में दुर्गा सप्तशती का पाठ किया जाय तो प्रत्येक स्त्री में भी चाहे वह किसी भी योनि की क्यों न हो मातृ स्वरूप के साक्षात दर्शन होने लगते हैं। दुष्ट से दुष्ट प्रवृत्ति की स्त्री साधक के सामने आते ही प्रेम और वात्सल्य की मूर्ति बन जाती है उसके अंदर भी प्रेम और वात्सल्य की धारा निर्मित होने लगती है।

स्त्रियों का अनादर करने वाले, उनको ताड़ना देने वाले, उनका शोषण करने वाले, स्त्री के पैसों पर मौज करने वाले और स्त्री को सिर्फ भोग्या समझने वाले पुरुषों का सर्वनाश निश्चित होता है। नाना प्रकार के गुप्त रोग, त्वचा सम्बन्धित तकलीफें, कठिन वृद्धावस्था एवं विधुर जीवन देवी के कोप का ही कारण है। पुरुषों में शिवत्व की कमी (नपुंसकता), श्रीहीनता, जीवन में स्त्री के द्वारा कष्ट, बदनामी, कलंक यह सब कहीं न कहीं उसके चाहे और अनचाहे कर्मों का प्रतिफल है जिसके द्वारा मातृ शक्ति का अनादर एवं अपमान हुआ हो। वे पुरुष या परिवार जिसमें स्त्री भ्रूण की हत्या की जाती है, अकाल मृत्यु एवं शस्त्राघात या फिर यांत्रिक दुर्घटना के कारण मृत्यु को प्राप्त होते हैं। सभी ऋषियों, परमहंसों एवं वेद पुरुषों ने अगर ब्रह्मचर्य का पालन किया है तो सिर्फ उसका एकमात्र उद्देश्य समग्रता के साथ मातृ शक्ति को माँ स्वरूप में अपनाना ही है। मातृ शक्ति का पूजन मात्र मानसिक या कर्मकाण्डी नहीं होता है। आपकी समस्त इन्द्रियाँ मातृ शक्ति के आदर स्वरूप क्रियान्वित होनी चाहिए। साधक का व्यवहार एवं आचरण बाल्य स्वरूप होना चाहिए। बाल्य स्वरूप निष्काम पूजन का द्योतक है। बालक की जिद के सामने माँ पिघलती है और येन, केन, प्रकारेण उसकी इच्छा पूर्ति करती है। मातृ पूजन केवल पुरुषों का ही विषय नहीं है स्त्रियाँ भी मातृ पूजन के द्वारा सम्पूर्ण कलामय होती है। रूप, रंग, ऐश्वर्य, पुत्र, सफल गृहस्थ जीवन, मनचाहा पति, सदा सुहागिन जीवन मातृ पूजन के द्वारा ही सम्भव है। वक्ष स्थलों का विकास चेहरे पर लालिमा लिये हुए कांति, स्त्री कष्टों से निवारण मातृ पूजन के द्वारा ही सम्भव है।

आज के युग में स्त्रियों का नाना प्रकार के रोगों से ग्रसित होना, गर्भपात, गर्भाशय का स्थान च्युत होना, वक्षस्थलों का अविकसित होना, उम्र से पहले वृद्धावस्था को प्राप्त करना इत्यादि समस्याओं के मूल में कहीं न कहीं मातृ शक्ति के प्रति अनादर भाव ही है। मातृ शक्ति पूजन ब्रह्माण्डीय प्रक्रिया है। आप उस परम शक्ति का पूजन कर रहे हैं जिसके द्वारा आकाश गंगा, तारे, नक्षत्र इत्यादि का निर्माण हुआ है। यह अद्वेत चेतनामयी शक्ति जो कि सदैव जन्म देने को तत्पर है तुच्छ मनुष्य को अपना तथाकथित अहम त्यागकर उसके प्रति सदैव श्रद्धावान होना चाहिए।

जीवन में ज्ञान, अनुभव, प्रेम एवं समस्त सृजन प्रक्रिया उसी का अंश है। इसी परम शक्ति के प्रति श्रद्धाभाव रखते हुए नीचे वर्णित क्षमा प्रार्थना का पाठ कम से कम रात्रि को निवृत्त होने के पश्चात् अवश्य करें।

सनातन वैवाहिक मंत्र

हमारे वैवाहिक मंत्रों से ही स्पष्ट है कि स्त्री को अपने पति के घर में सर्वोत्तम अधिकार दिया जाता है क्योंकि विवाह करने वाला पुरुष अपनी धर्मपत्नी से कहता है-

'सम्राज्ञी भव'

मेरे घर की रानी या महारानी नहीं बल्कि सम्राज्ञी अर्थात् सार्वभौमिक चक्रवर्तिनी बनो। इसमें स्त्री को अपने पति के घर में कोई हीन पदवी नहीं मिलती बल्कि सर्वोत्तम पदवी ही मिलती है।

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति माँ मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे ॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥
कामेश्वरी जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥

परमेश्वरी ! मेरे द्वारा रात-दिन सहस्त्रों अपराध होते रहते हैं । यह मेरा दास है - यों समझकर मेरे उन अपराधों को तुम कृपापूर्वक क्षमा करो । परमेश्वरी ! मैं आवाहन नहीं जानता, विसर्जन करना नहीं जानता तथा पूजा करने का ढंग भी नहीं जानता । क्षमा करो । देवि ! सुरेश्वरी ! मैने जो मंत्रहीन, क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन किया है, वह सब आपकी कृपा से पूर्ण हो । सैकड़ों अपराध करके भी जो तुम्हारी शरण में जा 'जगदम्ब' कहकर पुकारता है, उसे वह गति प्राप्त होती है जो ब्रह्मादि देवताओं के लिये भी सुलभ नहीं है । जगदम्बिके ! मैं अपराधी हूँ, किन्तु तुम्हारी शरण में आया हूँ । इस समय दया का पात्र हूँ । तुम जैसा चाहो, करो । परमेश्वरी ! अज्ञान से, भूल से अथवा बुद्धि भ्रान्त होने के कारण मैंने जो न्यूनता या अधिकता कर दी हो, वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होओ । सच्चिदानन्द स्वरूपा परमेश्वरी ! जगन्माता कामेश्वरि ! तुम प्रेमपूर्वक मेरी यह पूजा स्वीकार करो और मुझ पर प्रसन्न रहो । देवि ! सुरेश्वरि ! तुम गोपनीय से गोपनीय वस्तु की रक्षा करने वाली हो । मेरे निवेदन किये हुए इस जप को ग्रहण करो । तुम्हारी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो ।

अनर्थकं विप्रवासं गृहेभ्यः पापैः सन्धिं परदाराभिमर्शम् ।
दम्भं स्तैन्यं पैशुन्यं मद्यपानं न सेवते यः स सुखी सदैव ॥

जो अकारण किसी के यहाँ नहीं जाते, जो दुष्टों एवं पापियों की संगति नहीं करते, जो परस्त्रीगमन नहीं करते, जो अहंकारी नहीं हैं, जो क्रोध नहीं करते, जो परनिन्दा नहीं करते, जो मदिरासेवी, चोर अथवा लम्पट नहीं हैं - वे मनुष्यों में श्रेष्ठ, सदा सुखी रहते हैं ।

य ईर्ष्युः परवित्तेषु रूपे वीर्ये कुलान्वये ।
सुखसौभाग्यसत्कारे तस्य व्याधिरनन्तकः ॥

जो पराये धन, रूप बल, पराक्रम, सुख-सौभाग्य, कुल, आदर आदि को देखकर ईर्ष्या करता है, वह सदा दुःखी ही रहता है; क्योंकि उसके दुःखों का अन्त उसकी ईर्ष्या ही नहीं होने देती ।

अधिष्ठान और शक्ति

भगवान् शक्ति के अधिष्ठान हैं, इसलिये अधाररूपी ईश्वर बिना शक्ति रह ही नहीं सकती, और जिसके अन्दर इच्छाशक्ति, क्रियाशक्ति, ज्ञानशक्ति, इन तीनों शक्तियों का समावेश है उस अपनी शक्ति के बिना ईश्वर भी कुछ नहीं कर सकता । इसलिये भगवान् और शक्ति परस्पर Complementary और Supplementary है ।

आद्या शक्ति महापूजा

● श्री अरविन्द

साधक को एक बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि शब्दिक रूप में धर्म एक अत्यंत ही घटिया और ओछा शब्द है। इस शब्द ने अध्यात्म के स्थान पर मात्र अधर्म, युद्ध, हिंसा, घृणा, नफरत इत्यादिं नकारात्मक प्रवृत्तियों एवं संकीर्ण मानसिकता को ही जन्म दिया है। अपने आपको धर्म से जोड़ने वाले व्यक्तित्व उनके जमीनीपन का परिचायक है। वह प्रक्रिया जिससे कि ऊर्जा निम्नगामी हो मानव समाज के लिए कदापि हितकर नहीं हो सकती और न ही अन्य प्राणियों के लिए। अध्यात्म का एकमात्र लक्ष्य ऊर्जा को ऊर्ध्वगामी बनाना एवं मनुष्य को संकीर्ण और खण्ड-खण्ड वाली सोच के प्रवृत्ति चक्र से मुक्ति दिलाना है।

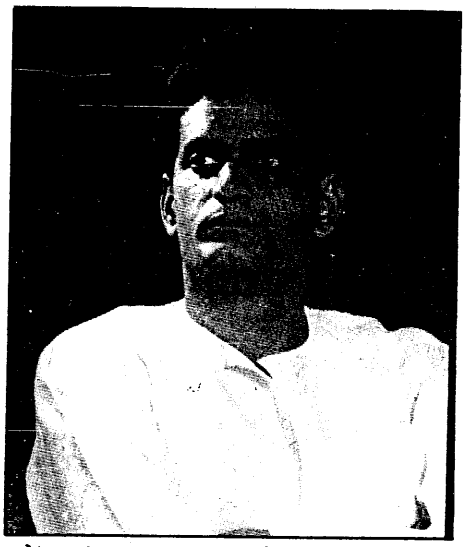

वेद द्दष्टाओं ने कभी भी व्यक्ति पूजा को महत्व नहीं दिया है। किसी भी वेद में व्यक्ति विशेष को पूजने के लिये नहीं कहा गया है, बस कहा गया है तो उस व्यक्ति को नमन करने के लिए और उसके प्रति श्रद्धा रखने के लिये जो कि वास्तव में सद्‌गुरु हो। यहाँ पर भी सद्‌गुरु के सद्‌गुरु रूपी उस शिवत्व के प्रति साधक को सदैव ऋणी रहने के लिये कहा गया है जो कि उसका परिचय ईष्ट अर्थात ब्रह्माण्डीय दिव्य ऊर्जाओं से करवाता है। इसके साथ ही वेद एक मार्गीय नहीं है। एकांगी पूजन सदैव साधक को पथ भ्रष्ट एवं अंत में योनियों के चक्कर में ही भटकाता है। एकांगी प्रक्रिया नाम की कोई चीज नहीं होती है, यह तो मानव निर्मित धर्म और अधकचरी पूजा प्रवृत्ति का द्योतक है। वेदों में आदि मातृ शक्ति को भी पूजा गया है तो वहीं ब्रह्मा की भी उपासना, शिव की भी उपासना है एवं इनके साथ जगत पालक विष्णु और महालक्ष्मी के साथ-साथ अन्य दिव्य देवताओं इत्यादि की भी पूजा अर्चना है। वेदोक्त पूजन में सभी देवता स्थापित किये जाते हैं, समस्त शक्तियों का आह्वान किया जाता है। सभी को समान आदर प्रदान किया जाता है। मानव निर्मित धर्म एवं अध्यात्म में बस यही मूल फर्क है। ऐसा कोई भी महामंत्र नहीं है जिसके मात्र जाप से जीवन के सभी आयाम पूर्ण होते हैं। आप स्त्री को माँ स्वरूप में भी देखते हैं तो वहीं बहन स्वरूप में भी, उससे प्रेम करते हैं एवं पत्नी स्वरूप में जीवन भर के सहयोगी बनते हैं तो

वहीं पुत्री स्वरूप में स्वयं कन्यादान भी करते हैं। एक स्त्री पुत्री भी होती है, बहन भी होती है, पत्नी भी होती है, तो वहीं माता या परदादी, दादी इत्यादि भी हो सकती है। इसके अलावा और भी अनेकों या फिर असंख्य स्वरूप में ही व्यक्ति विशेष का जीवन सम्पन्न होता है। प्रत्येक सम्बन्ध में व्यवहार भी सम्बन्धों के अनुकूल ही होता है। वेद जब महापूजा की बात करते हैं तब मंत्र द्दष्टा और हमारे ऋषि मुनि आदि शक्ति भवानी को अनेकों स्वरूप में द्दष्टा बनकर उसके दिव्य द्दष्टांत को निहारते हुए परमानंद में खो जाते हैं। शिव की पूजा शक्ति पूजा के बिना अधूरी है। *वास्तव में जो शिवत्व का पिपासु होगा उस पर तो आदि शक्ति की कृपा स्वयं ही बरसेगी। वेदोक्त पूजन में कहीं भी खण्डता दिखाई नहीं पड़ती। यह ब्रह्माण्डीय या फिर पराब्रह्मण्डीय पूजन है पूजन का अर्थ नमन एवं दुर्लभ प्रेममयी अमृत कोष की स्थापना करना ही है।* जिस प्रकार शिशु अबोध अवस्था में सर्वप्रथम 'माँ' शब्द पुकारता है और उसके मुख से निकले माँ महामंत्र के कारण ही माँ के वक्षस्थल से अमृतरूपी दुग्ध की धारा निकल पड़ती है। ठीक इसी प्रकार साधक जब अपने समस्त अधकचरे ज्ञान, व्यर्थ के दम्भ और अहम के साथ-साथ अन्य तथाकथित मानवीय बुद्धि और तर्क इत्यादि को त्यागकर पूर्ण श्रद्धा के साथ आदि शक्ति भवानी से पूजन, स्तुति इत्यादि के द्वारा सम्बन्ध स्थापित करता है तो फिर आदि शक्ति भवानी जो कि समस्त जग की निर्मात्री है, जिसकी कोख से असंख्य देवियाँ एवं ब्रह्मा, विष्णु और महेश का भी जन्म हुआ है भक्त को इतना वात्सल्य देती है कि वह इस प्रथ्वी लोक के समस्त कष्टों और दुखों से मुक्त हो जाता है। जिस प्रकार एक स्त्री चाहे वह किसी भी योनि की

क्यों न हो अपने नवजात शिशु को समस्त ऊर्जा मात्र दुग्ध के द्वारा ही प्रदान कर देती है ठीक उसी प्रकार आदि शक्ति माँ भवानी से प्रकट हुई दिव्य एवं मनोरम प्रकाश रूपी अमृत धारा साधक को शिशु के समान मस्त एवं सभी चिंताओं से मुक्त बना देती है। जिस साधक पर माँ भगवती की कृपा होती है उस पर तो शिव का वश भी नहीं चलता तो फिर उनके गणों जैसे कि राक्षस, वेताल, भूतप्रेत, डंकनी-शंकनी इत्यादियों की क्या मजाल है। इस पृथ्वी लोक में माँ भगवती की सेवा साधक को समस्त सुखों एवं ऐश्वर्य, से लाद देती है। यश, प्रसिद्धि, कीर्ति, सौन्दर्य, भोग इत्यादि समस्त मानवीय जरूरतें देवी का ही अंश है। स्वयं भगवान शंकर भी पार्वती या माँ अन्नपूर्णा के द्वारा ही भोजन पाते हैं। उनकी समस्त आवश्यकताओं का ध्यान भी आदि शक्ति ही रखती है। एक बार शिव भक्त आपको भूखे पेट मिल जायेंगे, उनके आसपास दरिद्रता भी विद्यमान मिल सकती है परंतु **माँ भवानी के शिष्य आपको कभी भी भूख से तड़पते हुए नहीं मिलेंगे। पिता के अभाव में भी बच्चों का लालन पालन माँ करती है परंतु माँ के अभाव में बच्चों का लालन पालन पिता के वश की बात नहीं है। प्रकृति की संरचना ही कुछ ऐसी है। अपने भक्तों पर जरा सी भी आँच आती देख आदि शक्ति सिंहनी के समान रौद्र रूप धारण कर लेती है या फिर काली स्वरूप में समस्त जगत का ही संहार होने लगता है।** तो फिर भगवान शिव को भी उनके चरणों में लेटकर उन्हें पुनः शांत करना पड़ता है। शिव भी शक्ति की आज्ञा में बंधे हुए हैं। माँ भवानी के मुख से निकला कोई भी शब्द चूक नहीं सकता। शिव को उसे पूरा ही करना पड़ता है। प्रेम, ममता, सुरक्षा एवं ऊर्जा का अटूट भण्डार है माँ आदि शक्ति की उपासना।

स्वयं भगवान शंकर अपने गणों एवं भक्तों को जीवन यापन एवं घोर दरिद्रता मिटाने के लिए माँ की आराधना करने को प्रेरित करते हैं। वैदिक ऋषि मार्कण्डेय जी ने एक बार मनुष्यों की अत्यंत ही दुर्दशा देखकर अपने पिता ब्रह्मा से पूछा कि-हे पितामह आप कोई ऐसा दुर्लभ शिव रहस्य या शिव सूत्र बताइये जिससे कि पृथ्वी पर निवास करने वाले मेरे शिष्य जीवन में समस्त ऐश्वर्यों और सुख की प्राप्ति के साथ-साथ अपनी सम्पूर्ण आयु आरोग्य एवं सुरक्षापूर्वक व्यतीत कर सकें। इस पर पिता स्वरूप ब्रह्मा जी बोले हे पुत्र तुमने तो स्वयं आदि शक्ति शिव से महामृत्युंजय मंत्र प्राप्त किया है तो फिर तुम्हे अन्य किसी सुरक्षा चक्र की क्या आवश्यकता। इस पर मार्कण्डेय जी ने कहा कि प्रभु सुरक्षा चक्र तो प्राप्त कर लिया परंतु अभाव एवं ऐश्वर्य की अनुपस्थिति में जीवन पशुतुल्य हो चला है। तब ब्रह्मा जी ने उन्हें अति गोपनीय देवी कवच की विधि एवं उसके महत्वों का विस्तारपूर्वक वर्णन बताया। दुर्गा सप्तशती में इसे देवी कवच के नाम से वर्णित किया गया है एवं बाद में शक्ति साधकों और सदगुरुओं ने इसे महापूजा के रूप में समय एवं काल के हिसाब से अपने शिष्यों को दीक्षा और सरल पूजन के स्वरूप में प्रदान किया। मैंने भी अपने जीवन में **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी महाराज** के द्वारा इस महापूजा की सरल एवं समय अनुकूल पद्धति को दीक्षा एवं ज्ञान के रूप में प्राप्त किया। अध्यात्म के पथ पर सदगुरु के अनुसार जब तक शिष्य आरोग्य, धन, सुन्दर पत्नी, सुदर्शन स्वास्थ्य, सफलता, प्रसिद्धि, कीर्ति, यश इत्यादि को प्राप्त नहीं करता वह पूर्णत्व भी नहीं पा सकता है। वेद दृष्टाओं ने कभी भी दरिद्रता या सब कुछ त्यागने की बात नहीं की है, कोई भी ऋषि श्री विहीन नहीं था। सभी वैदिक ऋषियों ने शिव के साथ-साथ शक्ति की भी समान आराधना की और उनके कृपाबल पर ही जीवन में सभी भौतिक सुखों के साथ-साथ शिवत्व का भी पान किया। जिस प्रकार शिव मात्र मृग छाल लपेटे बिना किसी सिहांसन के हिमालय पर निमग्न भाव से विराजमान रहते हैं तो वहीं आदि शक्ति स्वरूप माँ अन्नपूर्णा उनके साथ निवास करती हुई शिव के अलावा उनके सभी गणों भक्तों और यहाँ तक कि पुत्रों को भी किसी भी वस्तु की कमी नहीं होने देती हैं।

सद्गुरु स्वामी निखिलेश्वरानंद जी महाराज द्वारा वर्णित महापूजनविधि

सर्वप्रथम प्रात:काल स्नान आदि से निवृत्त होकर आदि शक्ति माँ भवानी के चित्र या मूर्ति के सामने आसन लगाकर बैठें। इसके पश्चात् पूर्ण श्रद्धा के साथ चित्र के सामने शुद्ध घी का दीपक प्रज्जवलित करें। तत्पश्चात् दोनों हाथों को जोड़ते हुए ग्यारह बार ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ (ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है) मंत्र का श्रद्धा के साथ जाप करें। अगर आप आसन के ऊपर पद्मासन की स्थिति में बैठ सकते हैं तो अति उत्तम होगा अन्यथा साधारण स्थिति भी चलेगी पर ध्यान रहे रीढ़ की हड्डी एकदम सीधी हो। सिले हुए वस्त्रों को पहनकर पूजा करना सदैव वर्जित है। धोति का इस्तेमाल सर्वश्रेष्ठ होता है। आंतरिक वस्त्र स्च्छ होने चाहिए। इसके पश्चात् लगभग पाँच बार **"दुं दुर्गाये नम:"** मंत्र का मानसिक जाप करते हुए नाड़ी शोधन प्राणायाम सम्पन करें।

तत्पश्चात् नीचे वर्णित सम्पूर्ण कवच का पाठ करें।

पूर्व दिशा में ऐन्द्री (इन्द्रशक्ति) मेरी रक्षा करें। अग्निकोण में अग्निशक्ति, दक्षिण दिशा में वाराही तथा नैर्ऋत्यकोण में मृग पर सवारी करने वाली देवी मेरी रक्षा करें। उत्तर दिशा में कौमारी और ईशान कोण में शूल धारिणी देवी रक्षा करे।

ब्रह्माणि ! तुम ऊपर की ओर से मेरी रक्षा करो और वैष्णवीदेवी नीचे की ओर से मेरी रक्षा करें। इसी प्रकार शव को अपना वाहन बनाने वाली चामुण्डा देवी दसों दिशाओं में मेरी रक्षा करे।

जया आगे से और विजया पीछे की ओर से मेरी रक्षा करें। वामभाग में अजिता और दक्षिण भाग में अपराजिता रक्षा करें। उद्योतिनी शिखा की रक्षा करें। उमा मेरे मस्तक पर विराजमान होकर रक्षा करे। ललाट में मालाधारी रक्षा करे और यशस्विनीदेवी मेरी भौहों का संरक्षण करें। भौंहों के मध्य भाग में त्रिनेत्रा और नथुनों की यमघण्टा देवी रक्षा करें। दोनों नेत्रों के मध्यभाग में शङ्खिनी और कानों में द्वारवासिनी रक्षा करें। कालिका देवी कपोलों की तथा भगवती शांकरी कानों के मूल भाग की रक्षा करें। नासिका में सुगन्धा और ऊपर के ओंठ में चर्चिका देवी रक्षा करें। नीचे के ओठ में अमृतकला तथा जिह्वा में सरस्वती देवी रक्षा करें। कौमारी दाँतों की और चण्डिका कण्ठप्रदेश की रक्षा करे। चित्रघण्टा गले की घाँटी की और महामाया तालु में रहकर रक्षा करें। कामाक्षी ठोढ़ी की और सर्वमङ्गला मेरी वाणी की रक्षा करें। भद्रकाली ग्रीवा में और धनुर्धरी पृष्ठवंश (मेरुदण्ड) में रहकर रक्षा करें। कण्ठ के बाहरी भाग में नीलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूबरी रक्षा करें। दोनों कंधों में खड्गिनी और मेरी दोनों भुजाओं की वज्रधारिणी रक्षा करें। दोनों हाथों में दण्डिनी और अंगुलियों में अम्बिका रक्षा करें। शूलेश्वरी नखों की रक्षा करें। कुलेश्वरी कुक्षि (पेट) में रहकर रक्षा करें। महादेवी दोनों स्तनों की और शोकविनाशिनी देवी मन की रक्षा करें। ललिता देवी हृदय में और शूलधारिणी उदर में रहकर रक्षा करें। नाभि में कामिनी और गुह्यभाग की गुह्येश्वरी रक्षा करें। पूजना और कामिका लिङ्ग की और महिषवाहिनी गुदा की रक्षा करें। भगवती कटिभाग में और विन्धवासिनी घुटनों की रक्षा करें। सम्पूर्ण कामनाओं को देनेवाली महाबला देवी दोनों पिण्डलियों की रक्षा करें। नारसिंही दोनों घुट्टियों की और तैजसी देवी दोनों

चरणों के पृष्ठ भाग की रक्षा करें। श्री देवी पैरों की अंगुलियों में और तलवासिनी पैरों के तलुओं में रहकर रक्षा करें। अपनी दाढ़ी के कारण भयंकर दिखायी देनेवाली दंष्ट्राकराली देवी नखों की और ऊर्ध्वकेशिनी देवी केशों की रक्षा करें। रोमावलियों के छिद्रों में कौबेरी और त्वचा की वागीश्वरी देवी रक्षा करें। पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेदकी रक्षा करें। आँतों की कालरात्रि और पित्त की मुकुटेश्वरी रक्षा करें। मूलाधार आदि कमल-केशों में पद्मावती देवी और कफ में चूडामणि देवी स्थित होकर रक्षा करें। नख के तेज की ज्वालामुखी रक्षा करें। जिसका किसी भी अस्त्र से भेदन नहीं हो सकता, वह अभेद्या देवी शरीर की समस्त संधियों में रहकर रक्षा करें।

ब्रह्माणि ! आप मेरे वीर्य की रक्षा करें। छत्रेश्वरी छाया की तथा धर्म धारिणी देवी मेरे अहंकार, मन और बुद्धि की रक्षा करें। हाथ में वज्र धारण करने वाली वज्रहस्ता देवी मेरे प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान वायु की रक्षा करें। कल्याण से शोभित होने वाली भगवती कल्याणशोभना मेरे प्राण की रक्षा करें। रस, रूप, गंध, शब्द और स्पर्श - इन विषयों का अनुभव करते समय योगिनी देवी रक्षा करें तथा सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण की रक्षा सदा नारायणी देवी रक्षा करें। वाराही आयु की रक्षा करे। वैष्णवी धर्म की रक्षा करें तथा चक्रिणी (चक्र धारण करने वाली) देवी यश, कीर्ति लक्ष्मी, धन तथा पिद्या की रक्षा करें। इन्द्राणि ! आप मेरे गोत्र की रक्षा करें। चण्डि के तुम मेरे पशुओं की रक्षा करो। महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करे और भैरवी पत्नी की रक्षा करें। मेरे पथकी सुपथा तथा मार्ग की क्षेमकरी रक्षा करे। राजा के दरबार में महालक्ष्मी रक्षा करें तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया देवी सम्पूर्ण भयों से मेरी रक्षा करें।

हे देवि ! जो स्थान कवच में नहीं कहा गया है, अतएव रक्षा से रहित है, वह सब तुम्हारे द्वारा सुरक्षित हो; क्योंकि तुम विजयशालिनी और पापनाशिनी हो।

इस प्रकार पाठ सम्पन्न करने के पश्चात सम्पूर्ण वेदोक्त रीति से माँ की आरती सम्पन्न करें। पूजन के पश्चात ही अन्न को ग्रहण करना चाहिए। पूजन से पूर्व किसी भी प्रकार का भोजन वर्जित है। इस प्रकार 21 दिनों तक और विशेषकर नवरात्रि के पवित्र 9 दिनों में यह महापूजा आपके रक्त के कण-कण में आदि शक्ति माँ भवानी को स्थापित कर देगी और जो साधक अखण्ड रूप से प्रतिदिन इस कवच का पाठ करते हैं उनकी यात्राओं में दुर्घटनाऐं नहीं होती। जिस भी वस्तु का वे चिंतन करते हैं वह उन्हें निश्चित ही प्राप्त होती है। माँ के कवच से सुरक्षित मनुष्य निर्भय होकर पृथ्वी लोक में विचरता है। देवी कला प्राप्त करने का यह एकमात्र साधन है। शतायु जीवन इसी कवच के द्वारा सम्भव हो पाता है। चेचक, कोढ़ इत्यादि व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं। इस कवच से कवचित साधक पर सांप, बिच्छू एवं अन्य कृत्रिम विषों का असर नहीं होता। कुटिल तांत्रिकों द्वारा मारण, मूठ, मोहन जैसे प्रयोग उल्टे हो जाते हैं। शिव गण जैसे कि डाकिनी-शाकिनी, ब्रह्म राक्षस, वेताल, यक्ष, गंधर्व, भूत-पिशाच, कुष्माण्ड भैरव आदि कवचित साधक को देखकर स्वयं ही भाग जाते हैं। साधक की जिह्वा पर देवी स्वयं विद्यमान हो जाती है। उसके मुख से निकला शब्द ब्रह्म वाक्य होता है। यह कवच सौन्दर्य सम्मोहन की वृद्धि करता है एवं ग्रह कलह, स्त्री कष्ट इत्यादि से साधक को सर्वथा मुक्त रखता है। इस दुर्लभ कवच को प्राप्त करने के लिए देवता भी मानव शरीर धारण करने के लिए लालायित हो जाते हैं।

स्त्रियाँ रजस्वला होने पर 5 दिन कवच का जाप कदापि न करें एवं घर में मौजूद किसी भी रजस्वला स्त्री को पूजा गृह में कदापि प्रवेश नही करना चाहिए। कवच का पाठ करने से पहले देवी की मूर्ति को दुग्ध स्नान या जल स्नान अवश्य करानी चाहिए एवं यथा शक्ति माँ की मूर्ति का श्रृंगार, तिलक भी करना चाहिए।माँ चण्डिका की मूर्ति के पैरों में तिलक अवश्य लगाना चाहिए एवं इसके साथ ही उनके द्वारा धारण किये गये सभी अस्त्र-शस्त्रों का भी तिलक करना चाहिए। लाल पुष्प देवी को अत्यंत प्रिय हैं एवं इसके साथ ही धूप, अगरबत्ती भी अवश्य प्रज्जवलित करनी चाहिए। माँ चण्डिका का पूजन राजसिक पूजन होता है एवं राजसिक पूजन में नैवैद्य, पुष्प, अक्षत, चाँवल, कुमकुम, चन्दन इत्यादि का प्रयोग किया जाता है।

देवी का पूजन करने वाले साधक को अत्यंत ही सात्विक प्रवृत्तियाँ धारण करनी चाहिए। मांस, मदिरा एवं वेश्यागमन सर्वथा वर्जित है। इस प्रकार के कृत्य देवी को अत्यंत कुपित कर देते हैं। प्रातःकाल देवी का पाठ सर्वश्रेष्ठ होता है एवं साधक को समय विशेष का भी ध्यान रखना चाहिए अगर आप प्रतिदिन सात बजे कवच का पाठ करते हैं तो फिर निश्चित समय पर ही पाठ करें। पाठ करते वक्त शरीर के रोम-रोम में देवी का स्थापत्य महसूस करना चाहिए एवं मानसिक रूप से किसी भी प्रकार का चिंतन नहीं करना चाहिए। इस प्रकार आप सम्पूर्ण देह को चैतन्य, जागृत एवं मंदिर के समान पवित्र बनाने में सफल होगे और जीवन में होने वाले प्रत्येक कर्म ऊर्ध्वगामी और माँ आदिशक्ति के अनंत नेत्रों के समक्ष सम्पन्न होगे। आपका सम्पूर्ण जीवन मातृत्व की मधुरता के कारण मधुर एवं स्वस्थ हो जायेगा

ॐ श्री चण्डिकायै नमः ॥

दुर्लभ यंत्र

पंचभूतों से निर्मित यह शरीर नाना प्रकार की व्याधियों से जब-तक घिरा रहता है जीवन में तमाम बाधायें, कष्ट, परेशानियाँ तनाव, क्लेश आदि होते ही रहते हैं। यंत्र ही एक ऐसी शक्ति है जो तमाम विपत्तियों का शमन कर विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं तथा मनुष्य का जीवन सुख, ऐश्वर्य, धन, धान्य से परिपूर्ण हो जाता है।

ऐसे ही कुछ दुर्लभ यंत्रों को हमने दिव्य मंत्रों से प्राण प्रितिष्ठित व चेतन्य क्रिया है। वैदिक विधि, विधान से ताम्र पत्र पर अंकित इन यंत्रों की शक्ति व प्रभाव आप स्वयं महसूस करेंगे -

✪	धूमावती यंत्र	80/-
✪	बगलामुखी यंत्र	50/-
✪	काल-भैरव यंत्र	70/-
✪	तीव्र भाग्योदय यंत्र	50/-
✪	शिव यंत्र	60/-
✪	आदित्य यंत्र	50/-
✪	कनक धारा यंत्र	50/-
✪	गणपति यंत्र	65/-
✪	श्री यंत्र	75/-
✪	आपदा उद्धारक यंत्र	60/-
✪	पाशुपतेय यंत्र	55/-
✪	सर्व रक्षा यंत्र	70/-
✪	सम्मोहन यंत्र	75/-
✪	जगदम्बा यंत्र	70/-

सम्पर्क

✪ साधना सिद्धि विज्ञान ✪

शॉप नं. 3 प्लाट नं. 210 जोन-1, एम. पी. नगर भोपाल-462011

दूरभाष : (0755) 576346, 591143

नोट : उपरोक्त सामग्री मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा निर्धारित राशि (२० रुपये डाक व्यय सहित) भेजने पर ही उपलब्ध हो सकेगी।

स्तनों की बीमारियाँ एवं उनका होमियोपैथिक निदान

डॉ. श्रीमती साधना

होमियोपैथिक चिकित्सक के रूप में पिछले एक दशक से कार्य करते हुये हमने महसूस किया है कि स्तन सम्बन्धी विकार स्त्रियों के लिये एक गम्भीर समस्या हैं। स्तनों से जहाँ एक ओर मातृत्व छलकता है जो शिशु के लिये अमृत तुल्य होता है वहीं स्त्री के सौन्दर्य में भी सुगठित व सुडौल वक्षस्थल की महत्वपूर्ण भूमिका है। पुष्ट व सुडौल स्तन जहाँ स्त्री को आकर्षक बनाते हैं वहीं अपुष्ट तथ लटके हुये वक्ष उसे असमय ही वृद्ध बना देते हैं। स्त्री तो वैसे भी सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है किन्तु वर्तमान सामाजिक परिवेश में जब हर क्षेत्र में स्त्री-पुरुषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है तो जाहिर है उसे अपने सौन्दर्य पर भी पूरा ध्यान देना होगा। यही वजह है कि पिछले कुछ वर्षों से युवतियाँ और विवाहित महिलायें अपनी समस्या बेझिझक होकर बताती हैं उनमें से अधिसंख्य स्तनों में प्रदाह व दर्द, कम या अधिक मात्रा में दूध बनने, बच्चे को दूध पिलाने से घृणा तथा स्तनों का समुचित विकास न होने की शिकायत करती हैं उनकी इन्हीं समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुये स्तनों में होने वाली प्रमुख बीमारियों के कारण व निदान का वर्णन मैं इस लेख में कर रही हूँ उम्मीद है कि यह लेख स्तनों की बीमारियों से ग्रसित स्त्रियों के लिये उपयोगी सिद्ध होगा -

स्तनों के रोग :

बालिका के यौवन अवस्था में कदम रखते ही सर्वप्रथम बाहरी विकास उसके स्तनों का ही होता है। सामान्यत: बालिका का प्रथम रज:स्राव शुरु होने से दो तीन वर्ष पूर्व ही स्तनों में थोड़ा-थोड़ा उभार आने लगता है परन्तु प्रथम रज:स्राव के बाद स्तनों का विकास तेजी से प्रारम्भ हो जाता है और लगभग एक वर्ष के भीतर वे पूरी तरह विकसित हो जाते हैं। यह लक्षण इस बात का द्योतक है कि बालिका अब युवती बन चुकी है एवं वह अब सामान्य परिस्थितियों में माँ बन सकती है।

स्तनों का विकास युवती के व्यक्तिगत खान-पान, उसकी मानसिक स्थिति, अनुवांशिकता एवं उसके चारों ओर के वातावरण पर निर्भर करता है। प्रारम्भ में स्तनों का अग्र भाग विकासशील होता है। स्तनों के अग्र भाग को चूचुक कहते हैं। शुरू-शुरू में चूचुक के चारों ओर का घेरा गुलाबी रंग लिए हुए होता है परंतु जैसे-जैसे युवती में परिपक्वता आती जाती है यह घेरा धीरे-धीरे काले रंग का हो जाता है। चूचुक एवं स्तनों का रंग युवती की अनुवांशिकता, उसके आप-पास के वातावरण एवं उसके मानसिक स्तर पर निर्भर करता है। इस घेरे के नीचे स्थित ग्रंथिल ऊतकों के बढ़ने के कारण चूचुक बाहर की तरफ निकला हुआ दिखाई पड़ता है। कुछ स्त्रियों में शारीरिक एवं हार्मोनल विकृति या किसी राग के कारण एक स्तन दूसरे स्तन से ज्यादा विकसित दिखाई पड़ता है। इस तरह की स्थिति अनुवांशिकता के कारण भी निर्मित हो सकती है। कुछ स्त्रियों में एक स्तन से दूध का प्रवाह दूसरे स्तन की अपेक्षा ज्यादा होता दिखाई पड़ता है। कई बार स्त्री के रक्त में ईस्ट्रोजन का

स्राव असंतुलित होने पर स्तनों में दर्द और कड़ापन महसूस होने लगता है। लगभग 15 वर्ष की अवस्था में वक्ष-स्थल के नीचे स्थित दुग्ध नलियाँ विकसित होने लगती हैं। ये दुग्ध नलियाँ वसा और चर्बी की परतों से ढकी हुई होती है एवं 15 से 25 खण्डों में विभाजित हो जाती है। प्रत्येक खण्ड में गर्तिकाऐं होती हैं जिससे दूध का उत्पादन करने वाली कोशिकाओं एवं उनकी नलियों का शाखा युक्त प्रबंध रहता है। स्त्री में दुग्ध का उत्पादन सामान्यत: गर्भावस्था के आठवे या नौवें महीने में प्रारम्भ हो जाता है। इस समय ईस्ट्रोजेन एवं प्रोजेस्ट्रोरेन हार्मोन का स्तर सामान्य से नीचे पहुँच जाता है और हाइपौथैलेमस पीयूष ग्रंथि के अग्र खण्ड को प्रोलेक्टिन नामक हार्मोन स्त्रावित करने हेतु सूचित करने के लिए उत्तेजित होता है।

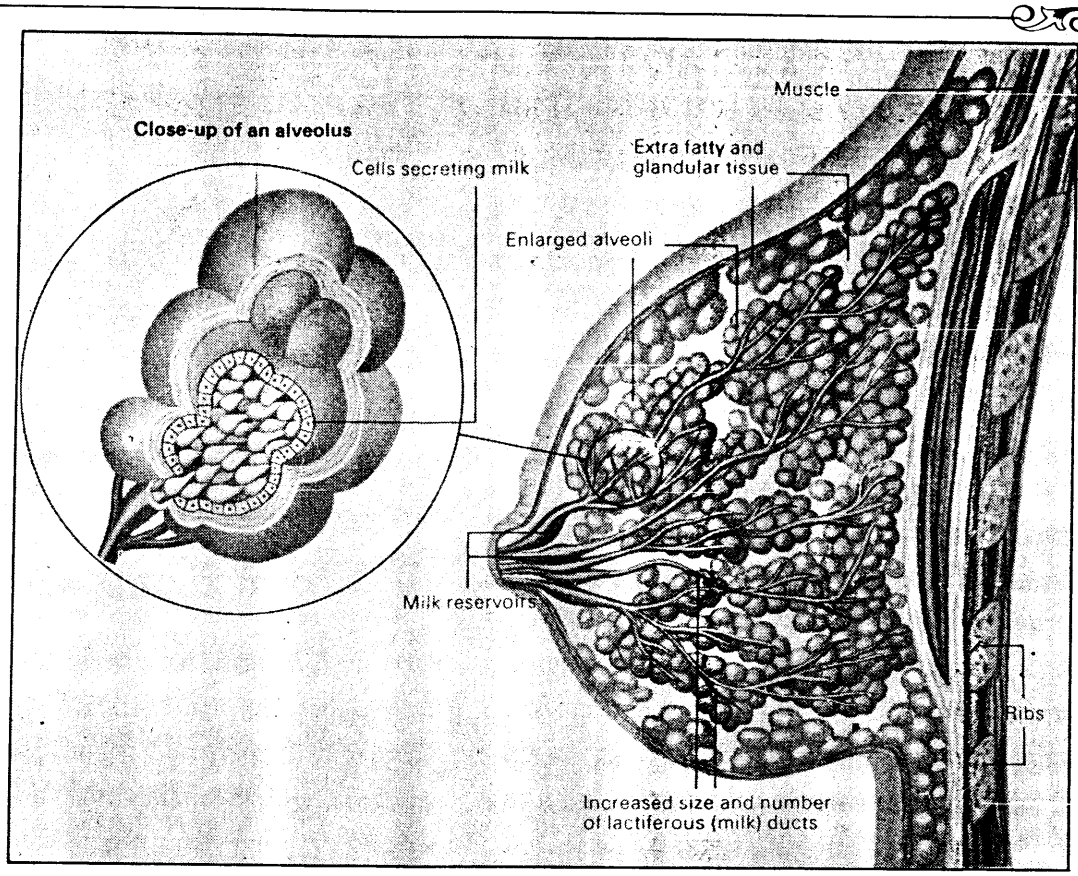

प्रोलेक्टिन नामक हार्मोन स्त्रियों में दुग्ध उत्पादन के लिए उत्तेजक का कार्य करता है। प्रसव के बाद प्रसूता को सर्वप्रथम होने वाला स्तन स्राव अत्यधिक गाढ़ा एवं पीला रंग लिए हुए होता है जिसे कोलोस्ट्रम कहते हैं। नवजात शिशु के लिए कोलोस्ट्रम बहुत ही पोषक एवं महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसके अंदर कुछ ऐसे रक्षक-प्रतिरक्षियाँ होती हैं जो कि नवजात शिशु को विभिन्न प्रकार के संक्रमण से बचाने के लिए अत्यधिक आवश्यक होती है। सामान्य अवस्था में प्रसव के बाद कोलोस्ट्रम का उत्पादन प्रसूता में तीन चार दिनों तक होता रहता है उसके बाद ही स्तनों से सामान्य दुग्ध का स्त्राव होता है। सामान्यत: प्रथम प्रसव के बाद स्त्रियों में दुग्ध का उत्पादन लगभग एक हफ्ते के भीतर होता है परन्तु दूसरी बार गर्भधारण करने पर यह पहले ही बनने लगता है।

प्रसूता के निपल को जैसे ही शिशु दूध पीने के लिए चूसता है प्रतिक्षेप क्रिया के फलस्वरूप हाइपोथैलेमस के तांत्रिक मार्ग को उत्तेजना मिलती है एवं इस उत्तेजना के कारण पीयूष ग्रंथि से दुग्ध स्राव सम्बन्धी हार्मोन्स स्त्रावित होने लगते हैं। आमतौर पर इस पूरी प्रक्रिया में लगभग 20 से 25 सेकेण्ड का समय लगता है। स्त्री के स्तनों का सीधा सम्बन्ध उसके जरायु से होता है। जैसे-जैसे गर्भ में भ्रूण का विकास होता है वैसे-वैसे स्तन के आकार और भार में वृद्धि होती जाती है परंतु स्तनों के आकार और भार का दुग्ध की उत्पादकता से कोई सम्बन्ध नहीं है। कभी-कभी ऐसा भी देखा गया है कि बाहरी रूप से विकसित दिखने वाले स्तनों में दुग्ध की मात्रा और गुण सामान्य उभार लिये स्तनों से भी कम पायी जाती है। स्त्री का शारीरिक स्वास्थ्य और उसकी मानसिक स्थिति, उसके आस-पास का वातावरण एवं अनुवांशिकता दुग्ध उत्पादन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि छोटे स्तन जिनमें वसा कम मात्रा में होता है परन्तु दुग्ध ग्रंथियाँ अधिक क्रियाशील और विकसित होती है। स्तनों में स्थित वसा

की परतों का मुख्य कार्य दुग्ध ग्रंथियों को ढांकने एवं उनकी रक्षा करने का होता है। स्तनों से दुग्ध की मात्रा एवं उत्तमता के लिए वसा की परतें बहुत हद तक उत्तरदायी होती है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि स्तनों का सीधा सम्बन्ध स्त्री के गर्भाशय एवं जननांगों से होता है एवं जिस प्रकार प्रत्येक मांस गर्भाशय के आंतरिक भागों में परिवर्तन होता है ठीक उसी प्रकार स्तनों के अंदर उपस्थित गर्तिकाओं की कोशिकाऐं भी प्रभावित होती रहती है। स्तनों की वृद्धि एवं उभार के लिए वे ही हार्मोन उत्तरदायी होते हैं जिनमें कि गर्भाशय के आंतरिक भाग की कला, योनि की श्लैष्मिक कला, डिम्बवाहिनी नलियाँ इत्यादि नियंत्रित होती हैं। स्त्री के स्तन भी इन्हीं चक्रों के परिवर्तन में भाग लेते हैं सामान्यत: ऐसा देखा गया है कि स्त्री के रज:स्राव शुरु होने से कुछ दिन पहले स्तनों में भारीपन और आकार में वृद्धि हो जाती है परन्तु रज:स्राव खत्म होने के बाद वे पुन: सामान्य अवस्था में आ जाते हैं। ईस्ट्रोजेन नामक हार्मोन जो कि स्त्रियों में आर्तव चक्र को नियंत्रित करता है उसी से स्तनों में स्थित दुग्ध नलियाँ भी उत्तेजित होती हैं।

कई बार ऐसा देखा गया है कि जब स्त्री गर्भ निरोधक गोलियाँ या इससे मिलती-जुलती दवाईयाँ उपयोग में लाती है जिससे कि डिम्बोत्सर्जन रुक जाता है तो उसका सीधा प्रभाव स्त्री के स्तनों पर पड़ता है। इन औषधियों के उपयोग से स्त्री के स्तनों में वेदना एवं कष्ट हो जाने की सम्भावना बढ़ जाती है। विशेषज्ञों की राय के अनुसार स्त्री में दुग्ध स्राव की दशा में गर्भ निरोधक औषधियों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे दुग्ध पान कर रहे शिशु के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ सकता है।

स्त्रियों में दुग्धपान कराते समय जनन क्षमता एवं डिम्बोत्सर्जन की प्रक्रिया निरंतर जारी रहती है। यह धारणा बिल्कुल भ्रांत है कि स्त्री दुग्ध स्राव की अवस्था में गर्भवती नहीं हो सकती। कुछ स्त्रियों में दुग्ध उत्पादन जरूरत से ज्यादा होता है परन्तु जब यह दुग्ध बाहर नहीं निकल पाता तो प्रसूता के स्तनों में अत्यधिक भारीपन और दर्द महसूस होने लगता है। ऐसी स्थिति में प्रसूता के स्वभाव में बेचैनी एवं घबराहट बढ़ जाती है। स्तनों में अधिक मात्रा में दुग्ध बनने पर ब्रैस्ट-पंप के सहारे अतिरिक्त दुग्ध को बाहर निकाला जा सकता है। कुछ स्त्रियों में स्तनों के निपल अत्यधिक छोटे या अविकसित होते हैं जिसके कारण शिशु ठीक से दुग्ध पान नहीं कर पाता एवं स्तनों में अतिरिक्त दुग्ध बचा रह जाता है। किसी कारणवश प्रसूता के स्तनों में स्थित चूचुकों के चोटग्रस्त हो जाने से, उनमें कठोरता आ जाने से या अति संवेदनशीलता आ जाने से स्तनों में तीव्र वेदना उत्पन्न हो सकती है। अत्यधिक वेदना की स्थिति में दुग्ध स्राव रोकना आवश्यक हो जाता है साथ ही स्तनों पर कसकर पट्टी बांधने से वेदना कम की जा सकती है।

स्तनों में प्रदाह एवं दर्द

स्तनों में प्रदाह के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि स्तनों में दूध का भर जाना, वक्षस्थल में सर्दी बैठ जाना, वक्षस्थल का चोटग्रस्त हो जाना, स्तनों में आवश्यकता से ज्यादा दुग्ध बनने लगना, प्रसूता की मानसिक स्थिति ठीक न होना, मासिक धर्म अनियमित होना, जरायु में प्रदाह होना इत्यादि।

प्रथम बार गर्भधारण करने वाली स्त्रियों में गर्भावस्था के पाँचें से नौवें महीने के बीच स्तनों में दुग्ध नलिकाओं में तेजी से विकास होने लगता है जिसके कारण भी स्तनों में प्रदाह हो सकता है। सोते वक्त गलत तरीके से लेटने के कारण स्तनों के दब जाने या कुचल जाने के कारण भी स्तनों में प्रदाह हो सकता है।

किसी भी कारणवश स्तनों में प्रदाह एवं दर्द उत्पन्न हो जाने की स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक औषधियों का लक्षणानुसार सेवन करने से लाभ होता है-

⊕ स्तनों में दर्द का एकाएक प्रकट होना और फिर गायब हो जाना, स्तनों के हिलने-डुलने पर दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना** 30 लाभदायक औषधि है ।

⊕ गर्भावस्था के दौरान गर्भिणी को अधिक मात्रा में कफ बनना एवं बार-बार खाँसते रहने से स्तनों में दर्द होना जैसे लक्षणों में **एकोनाईट** 30 हितकर औषधि है ।

⊕ गर्भावस्था के समय स्तनों में दर्द महसूस होना, स्त्री का स्वभाव से कोमल एवं संवेदनशील होना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला** 30 हितकर औषधि है ।

⊕ स्तनों में सुई चुभने के समान या डंक मारने के समान जलन युक्त दर्द महसूस होना, स्तनों में अकड़न आ जाना, स्त्री का अल्प मूत्र जैसी बीमारी से ग्रसित होना एवं कम प्यास लगना जैसे लक्षणों में **एपिस मेल** 6 लाभकारी औषधि है ।

⊕ स्तनों की घुण्डी में सूजन के साथ उनके कई जगह से फट जाने के कारण दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **सीपिया** 200 हितकर औषधि है ।

⊕ स्तनों में सूजन आ जाना एवं चूचुकों में फटने वाले स्थान से चिपचिपाहट लिए हुए गाढ़ा स्त्राव निकलना जैसे लक्षणों में **ग्रेफाईटिस** 30, 200 हितकर औषधि है **ग्रेफाइटिस** 30, 200 स्तनों में फटन के कारण बने निशानों को मिटाने के लिए हितकर औषधि है ।

⊕ स्तनों की त्वचा का सामान्य से ज्यादा मोटा हो जाना, स्तनों की त्वचा में रूखापन आ जाने के कारण कई जगह से फट जाना और इन फटी हुई जगह पर जख्म हो जाना जैसे लक्षणों में **केक्टस** 6, 30 हितकर औषधि है ।

⊕ स्तनों का चोटग्रस्त हो जाना, गलत तरीके से लेटने या अन्य कारणों से स्तनों पर दबाव पड़ने से उनका कुचल जाना जैसे लक्षणों में **आर्निका** 3x सर्वश्रेष्ठ औषधि है ।

⊕ स्तनों के ऊपरी भाग में फोड़े-फुंसी हो जाना, फोड़े-फुंसी का प्रारम्भिक अवस्था में दर्द लिए हुए कठोर होना एवं स्तनों में फोड़े के कारण तनाव आ जाना जैसे लक्षणों में **ब्रायोनिया** 30 लाभदायक औषधि है । **ब्रायोनिया** 30 के प्रयोग से सम्पूर्ण लाभ न मिल पाने की स्थिति में **फाइटोलैक्का** 3 उपरोक्त लक्षणों में हितकर औषधि है ।

⊕ स्तनों में हुए फोड़े के कारण ऊपरी त्वचा पर लाल रंग की रेखायें बन जाना, ज्वर के साथ स्तनों में तीव्र दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना** 30 हितकर औषधि है ।

⊕ स्तन में हुए फोड़े के मवाद और पीब से भर जाने की स्थिति में **हिपर सल्फ** 6 का सेवन हितकर होता है ।

⊕ **केलेण्डुला मदर टिंचर** के स्वच्छ पानी के साथ बने हुए घोल से प्रदाहित स्थान को धोते रहने से अत्यधिक लाभ मिलता है ।

⊕ स्तनों पर हुए फोड़े के ठीक हो जाने पर जगह को जल्दी भरने के लिए **साइलीशिया** 30 औषधि का इस्तेमाल हितकर होता है ।

⊕ स्तन पर हुए नासूर के फोड़ा बन जाने की स्थिति में **फास्फोरस** 6, 30 लाभकारी औषधि है ।

⊕ रगड़न के कारण स्तनों पर आयी सूजन में **बेल्लिस पेरेन्निस क्यू** लाभकारी औषधि है ।

⊕ स्तनों का कठोर एवं दृढ़ होना, स्तनों का तापमान शरीर के अन्य भागों से अधिक होना, उसके ऊपर की त्वचा सामान्य रंग की होना, दुग्ध पान कराते समय विशेषकर बायें स्तन में अत्यधिक दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **ब्रायोनिया** 30 लाभप्रद औषधि है ।

⊕ दायीं ओर के स्तन में अधिक दर्द महसूस होना, स्तनों में सामान्य से कम तनाव होना, स्तनों में ढीलापन आ जाना, स्तनों का रंग पीला हो जाना जैसे लक्षणों में **कैल्केरिया कार्ब** 30 लाभदायक औषधि है ।

⊕ स्तनों का अत्यधिक कठोर होना, स्तनों में तीव्र दर्द के कारण स्त्री का स्तनपान न करा पाना, स्तनों के ऊपर की त्वचा का अत्यधिक गर्म एवं लाल होना, स्तनों में संवेदनशीलता का अत्यधिक बढ़ जाना, छूते ही दर्द

महसूस होना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना** 30 लाभदायक औषधि है।

- ⊕ स्तनों से हमेशा पसीना आते रहना जैसी स्थिति में **कैल्केरिया कार्ब** 200 लाभकारी औषधि है।
- ⊕ स्त्री को कम मात्रा में रज:स्राव होना, ऋतु स्त्राव होने से पूर्व स्तनों में कड़ापन आ जाना और दोनों स्तनों में दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **कोनायम** 30 हितकर औषधि है।
- ⊕ रज:स्त्राव अधिक मात्रा में होना एवं मासिक धर्म शुरू होने के एक हफ्ते पूर्व ही स्तनों में दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **कैल्केरिया कार्ब** 6, 200 हितकर औषधि है।
- ⊕ मासिक धर्म शुरू होने से पूर्व स्त्री के दांयें स्तन में अत्यधिक दर्द महसूस होना जिसके कारण दायां हाथ उठाने में एवं श्वास लेने में अत्यधिक कठिनाई महसूस होना जैसे लक्षणों में **सेग्विनेरिया** 3 लाभकारी औषधि है।
- ⊕ स्तनों के निचले भाग में दर्द महसूस होना एवं स्त्री को कम मात्रा में मासिक धर्म होना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला** 3, 30 हितकर औषधि है।
- ⊕ अविवाहित स्त्रियाँ जिन्हें रज:स्राव के समय विशेषकर बायें स्तन में दर्द महसूस होता है उनके लिये **सिमिसिफ्यूगा** 30 हितकर औषधि है।
- ⊕ वात रोग के कारण स्तनों में दर्द उत्पन्न होने पर **रेननक्युलस बल्बोसस** 6, 30 हितकर औषधि है।
- ⊕ शिशु द्वारा गलत तरीके से किये गये दुग्ध पान के कारण स्तनों में दर्द होने की स्थिति में **फैलैण्ड्रियम** 6 लाभकारी औषधि है।
- ⊕ दुग्ध पान कराने वाली महिलाओं के स्तनों में दर्द का होना एवं धीरे-धीरे दर्द का पीठ के पिछले हिस्से तक पहुँच जाना जैसे लक्षणों में **क्रोटनटिग्लियम** 30 लाभदायक औषधि है।
- ⊕ स्तनों में दर्द बने रहना एवं रोगिणी का निरंतर प्रदर से ग्रसित रहना जैसे लक्षणों में [illegible]
- ⊕ बायें स्तन तथा बाजू में दर्द महसूस होना, बायें स्तन में अंदर की ओर खिंचावट महसूस होना एवं सूजन आ जाना जैसे लक्षणों में **एस्टेरियस रुबेज** 30 हितकर औषधि है।
- ⊕ स्तन में सूजन के साथ प्रदाह होना एवं दर्द के कारण ज्वर आ जाना जैसे लक्षणों में **फेरम फॉस 6x** या काली **म्यूर 12x** दिन में तीन बार सेवन करना चाहिए। इस औषधि के प्रति संवेदनशील स्त्री के मुख में हमेशा खुश्की बनी रहती है।

अधिक मात्रा में दूध बनना

कुछ स्त्रियों में किन्हीं विशेष कारणों से जैसे कि रक्त में इस्ट्रोजेन और प्रोजेस्टोरेन हार्मोन्स का असंतुलन हो जाना, शिशु का ठीक से दुग्धपान न कर पाना, स्तनों का क्षतिग्रस्त हो जाना, चूचुकों से दूध का न निकल पाना इत्यादि कारणों से प्रसूता में सामान्य से अधिक मात्रा में दुग्ध बनने लगता है या वह ठीक से स्रावित नहीं हो पाता जिसके कारण प्रसूता के स्तनों में भारीपन एवं प्रदाह उत्पन्न हो जाता है। ऐसी स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक औषधियों का सेवन करना चाहिए -

- ⊕ प्रसूता के स्तनों में अधिक मात्रा में दूध बनने लगना, दुग्ध स्राव का गाढ़ा होना, स्तनपान के समय विपरीत स्तन में दर्द होना, स्त्री का चिंतित एवं भयभीत रहना, नीचे की तरफ झुकते समय या सीढ़ियों से उतरते समय चक्कर महसूस होना, नीचे की तरफ झुकते समय संतुलन बिगड़ना या सिर चकराना जैसे लक्षणों में **बोरेक्स** 30 हितकर औषधि है।
- ⊕ शारीरिक रूप से प्रसूता का थुलथुला एवं मोटा होना, थोड़ी सी भी गर्मी सहन नहीं कर पाना, थोड़ा सा भी शारीरिक श्रम करने पर पसीना आना एवं थकान महसूस करना, प्रसूता का स्वभाव से आलसी एवं ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीने का आदी होना साथ ही स्तनों में अधिक मात्रा में दूध बनना जैसे लक्षणों में **कैल्केरिया कार्ब** 30 हितकर औषधि है।
- ⊕ [illegible]

स्वभाव से संवेदनशील और संकोची होना जैसे लक्षणों में **चायना 30** हितकर औषधि है।

- स्तनों में अधिक मात्रा में दूध बनने के साथ-साथ स्तनों में भारीपन एवं गर्मी महसूस होना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस 30** लाभकारी औषधि है।
- वक्षस्थल पर वसा एवं रक्त संचार ज्यादा होना, स्तनों में अधिक मात्रा में दुग्ध बनना एवं उनका अत्यधिक संवेदनशील होना, प्रसूता का नमी युक्त वातावरण सहन नहीं कर पाना जैसे लक्षणों में **नैट्रम म्यूर 30** लाभकारी औषधि है।
- स्तनों में अधिक मात्रा में दूध बनना जिसके कारण स्तनों में भारीपन एवं गर्मी महसूस होना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस 30, 6** लाभकारी औषधि है।
- अधिक मात्रा में दुग्ध बनने के कारण स्तनों का फूल जाना, स्तनों का संवेदनशील हो जाना एवं उनमें हमेशा खुजली चलते रहना, प्रसूता के सम्पूर्ण शरीर में दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **रस टॉक्स 30** हितकर औषधि है।

कम मात्रा में दूध बनना

प्रसूता स्त्री के स्तनों में दूध की मात्रा सामान्य से कम हो जाने पर शिशु के स्वास्थ्य पर बहुत ही विपरीत असर पड़ता है। कम मात्रा में दुग्धपान करने के कारण शिशु का वजन घट सकता है एवं वह विभिन्न प्रकार की बीमारियों से ग्रसित भी हो सकता है। माँ के दूध में शिशु के लिए अत्यंत आवश्यक पौष्टिक एवं रोग प्रतिरोधक तत्व होते हैं। किसी मजबूरीवश बाजार में उपलब्ध कृत्रिम एवं रासायनिक दुग्ध शिशु की जीवन रक्षा के लिए उपयोग में तो लाया जा सकता है परंतु वह माँ के दूध की जगह नहीं ले सकता। कुछ स्त्रियों में अपने सौन्दर्य के प्रति अतिरिक्त सजगता होती है जिसके कारण वे ऐसा सोचती है कि शिशु को दुग्धपान कराने से उनका सौन्दर्य नष्ट हो सकता है।

इस तरह की भ्रांत सोच एवं प्रवृत्ति के कारण भी प्रसूता की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ सकती है। प्रसूता के स्तनों में दुग्ध की मात्रा कई कारणों से प्रभावित हो सकती है जैसे कि उसका कुपोषित होना, स्तनों का विकास ठीक से न हो पाना, वक्षस्थल का रोगग्रस्त होना एवं कम दुग्ध उत्पादन की अनुवांशिकता होना इत्यादि।

अचानक मानसिक आघात लगने से, शोकाकुल समाचार पाकर स्तब्ध हो जाने से या शिशु के प्रति निराशाजनक एवं उदासीन व्यवहार के कारण भी प्रसूता की दुग्ध उत्पादन की क्षमता प्रभावित हो सकती है। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि चूषणप्रतिक्षेप क्रिया जो कि दुग्ध उत्पत्ति के लिए सबसे अधिक उत्तरदायी है किसी विशेष कारणों से शिथिल हो सकती है जिसके कारण प्रसूता में दुग्ध उत्पादन प्रभावित हो सकता है। रक्त में ईस्ट्रोजेन हार्मोन के असंतुलन के कारण भी दुग्ध उत्पादन प्रभावित हो सकता है।

- प्रसूता में खून की कमी होना, प्रसव के बाद पीला पड़ जाना एवं दुग्ध उत्पादन का दुग्ध स्राव के बाद कुछ दिनों बाद ही बंद हो जाना या अत्यधिक कम हो जाना जैसे लक्षणों में **एग्नस कास्ट 30** हितकर औषधि है।
- प्रारम्भ से ही स्त्री के अंदर दुग्ध कम मात्रा में बनना, गर्भावस्था के दौरान उसकी मानसिक स्थिति अवसादपूर्ण होना एवं मन का किसी चिंता से ग्रसित होना, नींद न आना जैसे लक्षणों में **कास्टिकम 30** लाभकारी औषधि है।
- प्रसूता का वायु विकार, कफ और बलगम से ग्रसित होना, प्रसव के एक हफ्ते बाद दुग्ध उत्पादन में कमी आ जाना या दूध सूख जाना जैसे लक्षणों में **ऐसाफिटिडा 30** हितकर औषधि है।
- प्रसव के बाद दूध का बिल्कुल भी न बनना, स्तन क्षेत्र में डंक मारने जैसा दर्द महसूस होना एवं निरंतर खुजली चलते रहना, स्वभाव में चिड़चिड़ापन एवं मानसिक स्थिति अवसादपूर्ण होना जैसे लक्षणों में **आर्टिका यूरेन्स 30** हितकर औषधि है।
- प्रसूता में दुग्ध स्राव का अस्थिर होना, कभी दुग्ध स्राव का अचानक बढ़ जाना या अचानक कम हो जाना, दुग्ध स्राव का अचानक गाढ़ा हो जाना या कभी एकदम पतला हो जाना जैसे परिवर्तनशील लक्षणों में **पल्सेटिला 30** हितकर औषधि है।
- किसी विशेष घटनाक्रम के कारण प्रसूता का अत्यधिक अग्र एवं व्याकुल हो जाना जिसके कारण दुग्ध स्राव का अचानक बंद हो जाना जैसे लक्षणों में **नैट्रम म्यूर 30** हितकर औषधि है।
- प्रसव के बाद नमी और शीलन भरे वातावरण में रहने के

कारण वक्षस्थल में ठण्ड बैठ जाना एवं बरसात के मौसम में अचानक दुग्ध स्त्राव बंद हो जाना जैसे लक्षणों में **डल्कामारा 30** हितकर औषधि है ।

- ⊕ मानसिक सदमा, शोक एवं मृत्यु जैसे संताप के कारण प्रसूता के अंदर दुग्ध स्त्राव अचानक रुक जाना जैसे लक्षणों में **इग्नेशिया 30** या **फास्फोरिक एसिड 30** हितकर औषधि है ।
- ⊕ स्त्री का अत्यधिक क्रोधावेश में आकर बच्चों के समान व्यवहार करने लगना एवं स्वयं पर से काबू हट जाने की स्थिति में हुए दुग्ध रोध को पुनः ठीक करने के लिए **कैमोमिला 30** लाभकारी औषधि है ।
- ⊕ किसी अज्ञात भय या किसी घटना से भयभीत होकर स्त्री में दुग्ध रोध हो जाने की स्थिति में **एकोनाईट 30** हितकर औषधि है ।

स्तन पान कराने से घृणा

गर्भावस्था के दौरान चूचुक एवं इसके चारों और ललामी या काला रंग लिए हुए घेरे में फटन या संक्रमण को रोकने के लिए स्त्री को निरंतर अपने स्तनों का निरीक्षण करते रहना चाहिए। इन स्थानों की नियमित रूप से मालिश एवं स्वच्छ कपड़े से साफ-सफाई करते रहना चाहिए। हल्के हाथों से स्तनों की घुण्डी को खींचने, दबाने या प्रत्येक दिशा में घुमाते रहने से उस स्थान की त्वचा एवं मांस-पेशियों में चटक नहीं आती। होमियोपैथिक क्रीम केलेण्डुला लगाते रहने से यहाँ की त्वचा जो कि निरंतर सिकुड़ती और फैलती रहती है फटन एवं कटान से बच जाती है। गंदी एवं कसी हुई चोली के पहनने से या सिन्थेटिक धागों से बनी चोली पहनने से भी स्तन की त्वचा संक्रमित या रगड़ खा सकती है।

स्तनपान शिशु और माँ के बीच नैसर्गिक सम्बन्धों का लक्षण है। स्त्री के अन्दर छिपे मातृत्व का सबसे प्रमुख लक्षण स्त्री के द्वारा शिशु को दुग्ध पान कराना ही है। इस प्रक्रिया में स्त्री असीम आनंद की अनुभूति प्राप्त करती है एवं स्तनपान कराते ही स्त्री अपने आपको भारहीन और मातृत्व से परिपूर्ण, एक पूर्ण स्त्री होने का गर्व महसूस करती है। उसके चेहरे पर असीम शांति और संतुष्टि के भाव उत्पन्न होते हैं परन्तु आज के आधुनिक एवं आत्म केन्द्रित वातावरण में आधुनिक स्त्रियाँ अपने सौन्दर्य के प्रति अत्यधिक परिगृहित रहती है। आजकल ऐसा देखने में आ रहा है कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभावित स्त्रियों में माँ बनने की लालसा दिन प्रतिदिन खत्म होती जा रही है। शिशु को वे अपने जीवन में एक भार और बन्धन महसूस करती हैं। उन्हें ऐसा लगने लगा है कि बच्चे को जन्म देने के बाद उनकी स्वच्छंदता के साथ-साथ उनका कैरियर खत्म या सीमित हो जायेगा। ऐसी स्थिति में अगर किसी कारणवश स्त्री गर्भवती हो जाती है तो उत्पन्न होने वाली संतान उसके लिए एक संयोग मात्र रह जाती है। इन्हीं सब मनोभाव के चलते कुछ स्त्रियाँ शिशु को दुग्ध पान कराने में कतराती या घृणा करती हैं।

पाश्चात्य संस्कृति में विवाह जैसे सामाजिक बन्धन की मान्यता दिन प्रतिदिन खत्म होती जा रही है एवं सामाजिक और कानूनी तौर पर बिना विवाह किए संतान उत्पत्ति की अनुमति होने के कारण भी माँ का बच्चे के प्रति लगाव अपेक्षाकृत कम होता है। माँ का शिशु के प्रति लगाव कम होने के कई अन्य कारण भी हो सकते हैं जैसे कि शिशु के जन्म से पूर्व ही पति का देहांत हो जाना, स्त्री को मादक पदार्थों का व्यसन होना, बलात्कार या जोर जबर्दस्ती से किए गये सम्भोग के कारण शिशु का जन्म होना, स्त्री का मानसिक रूप से विक्षिप्त होना इत्यादि। मुख्य रूप से देखा जाय तो यह एक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्या है। जीवन के प्रति स्वस्थ चिंतन और आज के युग की अत्यधिक भाग-दौड़ वाली व्यस्त जिन्दगी में परिवर्तन लाकर ही इस समस्या को जड़मूल से हल किया जा सकता है।

स्त्री के शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में स्तनों का महत्व सबसे ज्यादा होता है यही कारण है कि स्त्रियाँ अपने वक्षस्थल के सौन्दर्य के प्रति निरन्तर संवेदनशील रहती हैं। स्त्री में स्तनों के आकार-प्रकार या सौन्दर्य का कोई निश्चित मापदण्ड नहीं है। सामान्यतः गोल, कड़े, उभार लिए एवं छोटे चूचुक वाले स्तन ज्यादा आकर्षक माने जाते हैं परन्तु विभिन्न समाजों, सभ्यताओं एवं जन-जातियों में स्तनों की सुन्दरता के भिन्न-भिन्न मापदण्ड होते हैं। स्तनों का रंग एवं आकार मूलतः अनुवांशिकता पर निर्भर करता हे। आज के आधुनिक युग में स्तनों को सुडौल, कड़े एवं बड़े आकार का बनाने के लिए भिन्न-भिन्न औषधियाँ, क्रीम, लेप एवं उपकरण बाजार में उपलब्ध है परंतु इनकी प्रामाणिकता अभी सिद्ध नहीं हुई है। छोटे एवं अविकसित स्तन स्त्री के अंदर हीनता के भाव उत्पन्न करते हैं। कुछ स्त्रियों में रजःकाल में कुछ दिन पूर्व स्तनों के आकार-प्रकार में असाधारण वृद्धि हो जाती है परन्तु रजोकाल के बाद वे पुनः शिथिल और छोटे हो जाते हैं।

आज के युग में स्त्रियों को पुरुषों के समान अत्यधिक शारीरिक और मानसिक श्रम करना पड़ता है जिसके कारण उनके अंदर स्त्रियों से सम्बन्धित हार्मोन्स की कमी आ जाती है एवं उनमें पुरुषत्व के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि बड़े और सुडौल स्तन वाली स्त्री अत्यधिक मानसिक संताप, चिंता, कुपोषण एवं विपरीत परिस्थितियों में रहने के कारण अपने स्तनों का सौन्दर्य खो देती हैं। स्तनों का सौन्दर्य मुख्य रूप से स्त्री की मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है। आज के युग में विवाह काफी लम्बे समय तक नहीं होता जिसके कारण स्त्रियों को पति एवं मातृत्व प्राप्त किए बिना काफी लम्बे समय तक एकाकी जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। ऐसी स्थिति में स्त्रियों के स्तनों का सम्पूर्ण विकास नहीं होता।

पाश्चात्य देशों में स्तनों को सुन्दर एवं सुडौल बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की कांतिवर्धक विधियाँ जैसे कि प्लास्टिक सर्जरी या सिलिकॉन ब्रेस्ट का इस्तेमाल किया जाता है परन्तु भारत जैसे गर्म देश में यह विधि अक्सर निष्फल एवं खतरनाक साबित हुई है। इस विधि के कारण वक्षस्थल में भयंकर उपद्रव और स्तनों में कैंसर जैसे रोग उत्पन्न हो जाते हैं। सिलिकॉन ब्रेस्ट के कोलेप्स और स्थान भ्रष्टता के कारण उन्हें पुनः स्थापित करने की आवश्यकता पड़ती है अर्थात फिर से चीरा लगाकर दुबारा ऑपरेशन करना पड़ता है जिसके कारण स्त्रियों के स्तन पर निशान बनने के साथ-साथ संक्रमण होने का खतरा भी बन जाता है। छोटे एवं अविकसित स्तन होने तथा शिश को स्तनपान कराने से घृणा होने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक औषधियों का सेवन करने से लाभ होता है।

- शिशु को दुग्ध पान कराने की इच्छा न होना, स्त्री का स्वभाव से अत्यधिक संवेदनशील एवं स्वच्छंद होना, स्तनों का छोटा एवं अविकसित होना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30** लाभदायक औषधि है।
- स्त्री के स्तनों में ग्रंथिल ऊतकों की कमी के कारण उनमें चपटापन हो तो ऐसी स्थिति में **बेराइटा कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।
- किसी प्रकार के जख्म या स्तनों में अत्यधिक संवेदनशीलता आ जाने के कारण स्तनों का आकार घटने पर **कोनियम मेक 30** स्तनों को सामान्य बनाने की सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
- शरीर से दुबली-पतली एवं स्तनों के छोटे होते जाने की प्रवृत्ति होने पर **साइलीशिया 30** हितकर औषधि है।
- ग्रंथिल ऊतकों की कमी एवं स्तनों मं चपटापन और दर्द रहित होने की स्थिति में **आयोडम 30** हितकर औषधि है।
- निरन्तर खाँसी चलते रहना, छाती में कमजोरी महसूस करना, चेहरे पर पीलापन एवं थोड़े से शारीरिक श्रम के कारण थकान महसूस होना साथ ही स्तन क्षेत्र में वसा कम होना जैसे लक्षणों में **ट्युबरक्युलीनम 30** लाभदायक औषधि है।

स्तनों का काफी बड़ा होना

कुछ स्त्रियों में स्तनों का आकार काफी बड़ा होता है परन्तु सुडौल न होकर लम्बे और नीचे की तरफ लटके हुए होते हैं। स्तनों पर अधिक मात्रा में वसा जमा हो जाने के कारण उनमें जगह-जगह दरारें पड़ जाती हैं और स्तनों के चूचुक सामान्य अवस्था से ज्यादा मोटे, लम्बे और विकृत दिखाई देने लगते हैं। स्तनों का ढीलापन लिए हुए होना, सामान्य से काफी बड़ा होना, नीचे की तरफ लटका होना एवं चलने-फिरने में दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि शरीर में स्त्रियोचित हार्मोन्स का असंतुलित हो जाना, थाइराइड ग्रंथि का ठीक से काम न करना, सम्पूर्ण शरीर पर अत्यधिक चर्बी और वसा चढ़ जाना, स्त्री का स्वभाव से आलसी और विलासितपूर्ण जीवन जीने का आदी होना, गरिष्ठ एवं मादक पदार्थों का सेवन करना शारीरिक श्रम और व्यायाम के प्रति अरुचि होना इत्यादि।

- स्तनों का सामान्य से बड़ा एवं लटके हुए होना, कड़ेपन का अभाव होना एवं स्त्री को हमेशा थकान और ठण्डक महसूस होना जैसे लक्षणों में **कैल्केरिया कार्ब 30** हितकर औषधि है।
- सम्पूर्ण शरीर में तरल पदार्थ का निष्कासन ठहर जाना या रुक-रुककर होना, स्त्री को कम मात्रा में रजःस्राव होना, रुक-रुककर पेशाब होना जैसे लक्षणों में **नैट्रम म्यूर 30** हितकर औषधि है।

⊕ ग्रंथिल ऊतकों का अधिक विकास हो जाना जिसके कारण स्तनों में भारीपन आ जाना और उनका लटक जाना, थुलथुलापन लिए स्तनों में वेदना एवं स्पर्शासह्य हो जाना जैसे लक्षणों में **कोनियम 30** हितकर औषधि है।

⊕ स्तनों में सूजन आ जाना साथ ही स्तन क्षेत्र से निरंतर पसीना आना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** हितकर औषधि है।

स्तनों में अर्बुद

कभी-कभी स्त्रियों के स्तन भाग पर मांस या तंतुओं का एक छोटा सा पिण्ड अलग से दिखाई पड़ने लगता है। सामान्यत: यह पुटिका यथा-स्थिति में ही पड़ी रहती है एवं इसका आकार न तो घटता है और न ही बढ़ता है एवं इसका सम्बन्ध स्त्री के रजोकाल या स्तनपान से भी नहीं होता है।

ऐसी दर्द रहित पुटिका होने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक औषधियों से उपचार किया जा सकता है -

⊕ सामान्य वेदना रहित छोटी पुटिका के लिए **बेराइटा कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।

⊕ स्त्री का शारीरिक रूप से थुलथुला एवं मोटा होना, स्तनों का सामान्य से ज्यादा भारी होना एवं नीचे की तरफ लटके हुए होना, स्त्री की प्रकृति शीत प्रधान होना, स्तन पर स्थित साधारण पुटि का किसी शारीरिक प्रक्रिया या अनुवांशिकता के कारण होना जैसे लक्षणों में **कैल्केरिया कार्ब 30** हितकर औषधि है।

⊕ पुटि का अत्यधिक स्पर्शासह्य एवं वेदना रहित होने पर **फाइटोलैक्का 30** हितकर औषधि है।

⊕ पुटि का बायें ओर के स्तन पर स्थित होना, पुटि का सख्त एवं अस्थिर होना जैसे लक्षणों में **कोनियम 30** हितकर औषधि है।

⊕ छोटे या सूखे स्तनों पर लम्बे समय से रहने वाली पुटि के लिए **साइलीशिया 30** लाभदायक औषधि है।

⊕ स्तनों का छोटे आकार में होते हुए भी ढीला एवं पिलपिला होना, दुग्ध ग्रंथियों के अंर वसा एवं चर्बी का अभाव होना

होमियोपैथिक औषधियों के सेवन का तरीका

होमियोपैथिक औषधियों का सेवन करते समय निम्नलिखित चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए - लौंग, इलायची, जर्दा, एवं अन्य सुगंधित पान-मसाले सिगरेट, बीड़ी इत्यादि का सेवन करने से होमियोपैथिक औषधियाँ ठीक तरह से फायदा नहीं पहुँचाती हैं।

गम्भीर एवं लम्बे समय तक चलने वाले रोगों में अगर हो सके तो मांसाहार नहीं करना चाहिए। मद्यपान पूर्णत: निषेध है। कच्चा लहसुन एवं कच्चे प्याज का सेवन भी नहीं करना चाहिए।

होमियोपैथिक औषधियों का सेवन करने से पहले मुँह को स्वच्छ जल से अच्छी तरह साफ कर लें। ध्यान रहे कि दाँतों इत्यादि में अन्न कण एवं अन्य वस्तुऐं फँसी हुई न हों। जीभ को भी अच्छी तरह साफ कर लें। इसके पश्चात् होमियोपैथिक औषधि के ग्लोब्यूल को जीभ पर रखकर धीरे-धीरे चूसना चाहिए। औषधियों को ढक्कन या कागज की सहायता से जीभ पर रखें।

होमियोपैथिक औषधियों का सेवन करने से आधे घण्टे पहले और आधे घण्टे बाद तक भोजन इत्यादि ग्रहण न करें। विशेषकर रात्रि को सोते वक्त एवं प्रात:काल औषधि का सेवन करने से परिणाम अच्छे आते हैं। पुस्तक में वर्णित ३० शक्ति की औषधियाँ दिन में तीन बार सेवन की जा सकती है एवं इनके साथ अन्य ३० शक्ति की औषधियों को आधे-आधे घण्टे के अंतर से लिया जा सकता है। २०० शक्ति की औषधि सप्ताह में मात्र एक बार ही सेवन करनी है एवं जिस दिन इस औषधि का सेवन किया जाय उस दिन किसी अन्य औषधि का सेवन न करें। १ एम (१००० शक्ति) की औषधि बिना डॉक्टर की सलाह के सेवन नहीं करना चाहिए।

तेज ज्वर एवं रोग की गम्भीर स्थिति में अन्य औषधियों के साथ होमियोपैथिक औषधियों का भी सेवन किया जा सकता है। होमियोपैथिक औषधियाँ उस समय तक सेवन करना चाहिए जब तक कि रोगी पूरी तरह ठीक नहीं हो जाता।

●●●

सवाल आपके

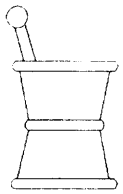

जबाव डॉ. साधना के

'साधना पब्लिकेशन' के माध्यम से विगत वर्षों से होमियोपैथी पर आधारित विविधि पुस्तकों के प्रकाशन के कारण हमें प्रतिमाह सैकड़ों पत्र प्राप्त होते हैं जिनमें पाठक या रोगी अपनी तमाम समस्याऐं लिख भेजते हैं जिनमें अधिकांशत: पत्र युवतियों के होते हैं जो श्वेतप्रदर, बंध्यत्व, अनियमित मासिक स्त्राव, कामोन्माद, गर्भपात अथवा गर्भाशय या स्तनों सम्बन्धित अन्यान्य बीमारियों से ग्रस्त हैं। पत्रिका का यह अंक चूंकि शक्ति के नारी स्वरूप को समर्पित है अत: इस अंक में हम स्त्रियों से सम्बन्धित प्रमुख समस्याओं का निदान प्रस्तुत कर रहे हैं। हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि रोगियों के सवालों का जबाव दे रही हैं प्रख्यात होमियोपैथिक चिकित्सका *डॉ. साधना सिंह* जिन्हें चिकित्सा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिये कई बार सम्मानित किया जा चुका है तथा जो पिछले एक दशक से प्रतिष्ठित स्वास्थ्य पत्रिका 'निरोगधाम' के माध्यम से जनसेवा करती आ रही हैं तथा उनके अनुभवों का लाभ लाखों लोग उठा रहे हैं।

समस्या : 20 वर्षीया अविवाहित युवती, पिछले कुछ महीनों से मासिक धर्म देर से होता है। योनि में हमेशा खुश्की बनी रहती है तथा कभी-कभी योनि से वायु निकलने की अनुभूति होती है।मुँह का स्वाद हमेशा खट्टा बना रहता है, खट्टी डकारें आती हैं तथा कभी-कभी उल्टियाँ भी होती हैं। कृपया उचित उपचार बतायें।

समाधान : मासिकधर्म आने में बिलम्ब के कई कारण हो सकते हैं। काफी हद तक यह शारीरिक संरचना आहार-विहार आदि पर निर्भर होता है। तेज दवाइयों का सेवन, अधिक मिर्च मसाले, गर्म तथा मादक पदार्थों का सेवन भी मासिक धर्म की अनियमितता कारण हो सकता है। आप **लायकोपोडियम 30** का दिन में चार बार दो सप्ताह तक सेवन करें। यदि स्राव मात्रा में अधिक हो तथा जरायु और योनि में अकड़न जैसा दर्द होता है तो **स्टैफिसेग्रिया 30** का सेवन हितकर है।

समस्या : 20 वर्षीया विवाहित युवती, अत्यधिक मात्रा में रजस्रत्राव, स्राव में खून के कतरे निकलते हैं स्राव के दिनों में सहवास की अत्यधिक इच्छा होती है योनि व पुट्ठों में तीव्र वेदना, ऐसा महसूस होता है मानों पेट के सभी अंग योनि मार्ग से बाहर निकल आयेंगे, जरायु में प्रदाह होता है उचित उपचार बतायें।

समाधान :किसी भी रूप में शरीर से तरल पदार्थों के अत्यधिक क्षय के कारण अन्य कष्ट होना स्वाभाविक है। अधिक मात्रा में स्राव होने के कई कारण हैं जैसे अत्यधिक मैथुन, कामुक साहित्य का पठन, मांसाहार, गरिष्ठ भोजन, मद्यपान तथा अप्राकृतिक मैथुन आदि। सर्वप्रथम तो आप अपना ध्यान पूजा पाठ तथा ज्ञानवर्धक साहित्य की ओर लगायें, हल्का एवं सुपाच्य

भोजन लें तथा अश्लील चिंतन से बचें। उपरोक्त बातों का पालन करने के साथ-साथ **प्लैटिना 30** का चार-चार घण्टे के अंतराल से सेवन करें। औषधि का सेवन तब तक जारी रखें जब तक वांछित लाभ न हो।

समस्या : 32 वर्षीया विवाहित स्त्री, श्वेतप्रदर (ल्यूकोरिया) से परेशान, योनि से पतला व दूधिया स्राव लगातार होता है, स्राव से दुर्गन्ध आती है, स्राव लगने वाला होने के कारण जांघों की त्वचा छिल जाती है तथा योनि मार्ग में हमेशा खुजली होती है कृपया उचित उपचार बतायें।

समाधान : श्वेतप्रदर मुख्यत: बहुमैथुन, अप्राकृतिक मैथुन, मानसिक तनाव, योनि की अस्वच्छता अर्थात नियमित साफ-सफाई आदि न करने से होता है। कभी-कभी गर्भ निरोधक गोलियों के अत्यधिक सेवन, बार-बार गर्भपात होने आदि कारणों से भी श्वेतप्रदर की शिकायत हो जाती है। आप **सीपिया 30** चार-चार घण्टे के अंतराल से लगातार एक माह तक सेवन करें। इस औषधि का जननांगों पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

समस्या : 28 वर्षीया विवाहित युवती हूँ, दो बार गर्भपात हो चुका है। चिकित्सकों द्वारा परीक्षण किया गया किन्तु ऐसी कोई वजह समझ में नहीं आयी जिसके कारण गर्भपात हो जाता है। अब मैंने तीसरी बार गर्भधारण किया है किन्तु हमेशा भय बना रहता है कि कहीं पुन: गर्भपात न हो जाय कृपया उचित उपचार बतायें।

समाधान : गर्भपात सिर्फ शारीरिक कारणों या संरचना की वजह से ही नहीं होता इसके पीछे मानसिक कारण भी हो सकते हैं। सर्वप्रथम तो आप यह भय अपने दिमाग से निकाल दें कि पुन: गर्भपात हो जायेगा। आप अनावश्यक चिन्ता व विवादों से बचें। अपना ध्यान रचनात्मक कार्यों की ओर लगायें तथा संयमित आहार-विहार का ध्यान रखें। उचित होगा कि इस दौरान आप ब्रह्मचर्य का पालन करें साथ ही **एकोनाईट 6** या 30 का सेवन करें।

समस्या : 16 वर्षीया अविवाहित युवती, पिछले कुछ महीनों से हिस्टीरिया के दौरे आते हैं, दौरों के समय शरीर में तीव्र कॅपकॅपी होती है, सम्पूर्ण शरीर में खुजली होती है तथा कामोत्तेजना भी होती है कृपया उचित उपचार बतायें।

समाधान : हिस्टीरिया की बीमारी अस्थाई है जो कुछ दिन के उचित उपचार से ठीक हो सकती है। यह बीमारी प्राय: अत्यधिक मानसिक दबाव, प्रेम सम्बन्धों में असफलता, कामुक चिंतन मादक पदार्थों के सेवन, अतृप्त काम वासना तथा अप्राकृतिक मैथुन आदि कारणों से होती है। सर्वप्रथम तो आप अपना ध्यान धार्मिक या अन्य ज्ञानवर्धक पुस्तकों के पठन में लगायें। यथा सम्भव एकांत से बचें। पूजा पाठ, योग आदि में मन लगायें, संयमित आहार विहार का ध्यान रखें साथ ही **कैल्केरिया कार्ब 30** का दिन में चार बार एक माह तक सेवन करें।

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसुनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्त: समुद्रे। य एवं वेद। स दैवीं सम्पदामाप्नोति।

देवों को उत्तम हवि पहुँचाने वाले और सोमरस निकालने वाले यजमान के लिये हविर्द्रव्यों से युक्त धन धारण करती हूँ

प्रज्ञामेवागमयति य: प्राज्ञेभय: स: पण्डित:।
प्राज्ञो ह्यवाप्य धर्मार्थं शक्नोति सुखमेधितुम्॥

जो आप्त पुरुषों (ज्ञानियों) से ज्ञान प्राप्त करके उसके अनुरुप आचरण करता है, वही बुद्धिमान और श्रेष्ठ है। वही इस विश्व में धर्म और अर्थ के शुभ फलों को प्राप्त करता है।

कृपया ध्यान दें -

होमियोपैथिक औषधियों का सेवन करने से आधा घण्टे पूर्व तथा दवा लेने के आधा घण्टे बाद तक कुछ न खायें। औषधि के सेवन से पूर्व मुँह अच्छी तरह साफ कर लें। उपचार के दौरान गर्म, मसालेदार, गरिष्ठ, तीखी, चटपटी, खाद्य सामग्री, सुगंधित पान, मसाले, जर्दा, मादक पदार्थ, कच्चे लहसुन व प्याज आदि का सेवन कदापि न करें।

सभी प्रकार की बाधाओं से रक्षा करता है महाविद्या कवच

पं. लोकेश दीक्षित

वैसे भी ब्रह्माण्ड के समस्त क्रिया कलापों को नियमित और नियंत्रित करने वाली शक्तियाँ ही दस महाविद्याओं के नाम से जानी जाती हैं। इन दस महाविद्याओं का अविर्भाव देवी सती के द्वारा किया गया था। शास्त्रों के अनुसार जब दक्ष ने यज्ञ में भगवान शिव को आमंत्रित नहीं किया और देवी सती ने शिव के समक्ष अपने पिता के यज्ञ में शामिल होने की इच्छा जाहिर की तो भगवान शिव ने उन्हें अनमने भाव से स्वीकृति दे दी। सती ने वहाँ पहुँचकर देखा कि सभी देवताओं के आसन यज्ञ स्थल में अपने-अपने स्थान पर मौजूद हैं किन्तु भगवान शिव का वहाँ कोई स्थान नहीं है। यह देखकर वे अत्यन्त क्रोधित हो गयीं। क्रोध के कारण उनकी आँखें लाल सुर्ख हो गयी, क्रोध से सारा शरीर दहकने लगा, उनके सिर के केश चारों तरफ विखर गये और वे कालाग्नि के रूप में दिखाई देने लगी। वे गले में मुण्डमाला पहने हुयी थी, भयानक जीभ बाहर निकली हुयी थी और वे बार-बार भयानक अट्टहास कर रही थी। उस समय उनके शरीर का तेज करोड़ों सूर्यों के समान तेजस्वी था। देवी का यह रूप देखकर देवता तो क्या स्वयं भगवान शिव भी विचलित हो गये।

कवच का आशय है विपरीत परिस्थितियों में अथवा शत्रुओं से संभावित हानि से स्वयं की रक्षा करने का एक निश्चित साधन, ताकि कोई भी शत्रु हमें किसी भी प्रकार की हानि न पहुँचा सके। महाविद्या कवच का पाठ निर्विघ्न रूप से सम्पन्न कर लेना ही सफलता का द्योतक है। महाविद्या कवच अपने आप में अद्वितीय एवं उत्कृष्ट है जीवन में चहुँ ओर विजय प्राप्त करने तथा सुरक्षा के लिये महाविद्या कवच का पाठ फलप्रद है।

देवी के इस भयानक रूप को देखकर शिवजी भयातुर होकर जाने लगे किन्तु दसों दिशाओं में उन्हें रोकने के लिये भगवती सती ने अपनी अंगभूत दस देवियों- काली, तारा, भुवनेश्वरी, कमला, धूमावती, बगलामुखी, त्रिपुर सुन्दरी, छिन्नमस्ता, षोडशी और मातंगी को प्रगट किया। अंत में जब शिव नियंत्रण में आये तो भगवती देवी ने कहा कि जो साधक मेरी इन दस देवियों की साधना करेगा वह निश्चय ही सभी विघ्नों से दूर सुखी, सम्पन्न एवं यशस्वी होगा। उसके जीवन में किसी प्रकार की बाधा नहीं आयेगी तथा वह समस्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता हुआ पूर्णत्व प्राप्त करेगा। ये दस महाविद्यायें आसुरी शक्तियों को समाप्त कर, निकृष्ट प्रवृत्तियों को निरस्त कर देवी शक्ति को स्थापित करती हैं। यहाँ यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि इन दस महाविद्याओं की साधना करने से पूर्व विभिन्न साधनाओं द्वारा अपने आप को परिपक्व एवं दृढ़ बना लेना चाहिए क्योंकि ये सभी उच्च शक्तियाँ हैं। उस स्तर तक पहुँचने के लिये साधक में आत्म विश्वास तथा आत्म निर्भरता होना परम आवश्यक है। विभिन्न साधनाओं से परिपक्व साधक एक भी महाविद्या का अनुग्रह प्राप्त होने पर अनन्त शक्तियों का स्वामी, बन जाता है।

भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में तो उसका प्रभावशाली व्यक्तित्व होता ही है, समस्त ऐश्वर्य एवं पद प्रतिष्ठा उसके हस्तगत होती है। इतना ही नहीं दुर्दान्त एवं प्रबल शत्रु भी उससे आँख नहीं मिला सकता।

कैसे करें कवच का पाठ ?

सर्वप्रथम स्नान आदि से निवृत्त होकर पूजा स्थल पर पीले आसन में बैठें अपने सम्मुख आसन या चौकी पर दस महाविद्याओं के चित्र स्थापित कर लें। देवियों की प्रतिमाओं को स्नान कराने के पश्चात् अक्षत, पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य आदि अर्पित करें तत्पश्चात् महाविद्या कवच का पाठ आरम्भ करें -

महाविद्या कवच -

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्व सिद्धिदम्।
अद्याया महाविद्यायाः सर्वाभीष्ट फलप्रदम्॥

अर्थात- हे देवि, मैं महाविद्या कवच का आख्यान कर रहा हूँ जो सर्व सिद्धि दायक तथा सभी इच्छित फलों को प्रदान करने वाला है। इस कवच का पाठ निश्चय ही सिद्धिदायक है, यह महाविद्या कवच अति उत्कृष्ट एवं प्रचण्ड शक्ति युक्त है।

कवचस्य ऋषिर्देवि सदाशिव इतीरितः
छन्दोऽनुष्टुप् देवता च महाविद्या प्रकीर्तिता।
धर्मार्थ काम मोक्षाणां विनियोस्य साधने॥

अर्थात- इस महाविद्या कवच के ऋषि शिव है, अनुष्टुप छन्द हैं, महाविद्या देवता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति इस कवच पाठ से प्राप्तव्य विषय है।

ऐंकार : पातु शीर्षे माँ कामबीजं तथा हृदि।
रमा बीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयो : ॥

अर्थात- 'ऐं' बीज यानि भगवती मातंगी मेरे सिर की 'क्लीं' बीज यानी भगवती काली हृदय की, रमा बीज 'श्रीं 'अर्थात भगवती महालक्ष्मी मेरे नाभि गुह्य प्रदेश और पैरों की रक्षा करें।

ललाटे सुन्दरी पातु अग्रा मां कण्ठ देशतः।
भगमाला सर्त्वगात्रे लिंगे चैतन्यरूपिणी॥

अर्थात त्रिपुर सुन्दरी मेरे मस्तक (ललाट) की, उग्रा छिन्नमस्ता मेरे कण्ठ प्रदेश की भगवती काली समस्त शरीर की तथा त्रिपुर भैरवी मेरे गुह्य प्रदेश की रक्षा करें।

पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्मणी दक्षिणे तथा।
उत्तरे वैष्णवी पातु चन्द्राणी पश्चिमेऽवतु॥

अर्थात पूर्व दिशा में बाराही, दक्षिण मे ब्रह्माणी, उत्तर में वैष्णवी, पश्चिम दिशा में चन्द्राणी, मेरी रक्षा करें।

माहेश्वरी च आग्नेस्यां नैऋत्ये कमला तथा।
वायत्यां पातु कौमारी चामुण्डा ईशकेऽतु॥

अर्थात पूर्व व दक्षिण के मध्य भाग अग्निकोण में माहेश्वरी, दक्षिण व पश्चिम के मध्य भाग नैऋत्य में देवी कमला, पश्चिम व उत्तर के मध्य भाग वायव्य में कुमारी तथा उत्तर व पूर्व के मध्य भाग ईशान में महाशक्ति चामुण्डा मेरी रक्षा करें।

इदं कवचमज्ञात्वा महाविद्याञ्च यो जपेत्।
न फलं जायते तस्य कलाकोटिशतैरपि॥

अर्थात इस कवच को बिना जाने जो मनुष्य महाविद्या मंत्र जपता है उसे सहस्त्रों वर्षों में भी फल प्राप्त नहीं होता।

सभी विघ्न बाधाओं को दूर कर परम सिद्धि प्रदान करता है

सिद्धि कुञ्जिका स्त्रोत

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह स्त्रोत जप, तप, साधना की कुञ्जी है। जहाँ तक शक्ति उपासना का सवाल है आदि शक्ति माँ भगवती की उपासना इस स्त्रोत के बिना अधूरी है अर्थात माँ दुर्गा की साधना या दुर्गा सप्तशती का पाठ तभी सिद्ध होता है जब सिद्धि कुञ्जिका स्त्रोत का पाठ किया जाय। यह अति दुर्लभ मंत्र है जिसे स्वयं भगवान शिव द्वारा सृजित किया गया है। किसी भी प्रकार की मंत्र सिद्धि के लिये यह अमोघ मंत्र है।

शास्त्रों में कहा गया है कि जो मनुष्य श्रद्धा भक्ति पूर्वक प्रतिदिन प्रात:काल इस श्लोक का पाठ करता है उसकी सभी प्रकार की बाधायें नष्ट हो जाती हैं साथ ही काम, क्रोधादि का नाश, ईष्ट देव मोहन, मन का वशीकरण तथा इन्द्रियों का स्तम्भन तथा मोक्ष प्राप्ति के लिये छटपटाहट आदि सभी इस स्त्रोत के पाठ से सफल हो जाते हैं।

अथ मन्त्र:

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं स: ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा॥

॥ इति मन्त्र: ॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ।
नम: कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे ॥
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ।
विच्चे चाभयदां नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥

धां धीं धूं धूर्जटे: पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी ।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी ।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नम: ॥
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं ।
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे ।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥
यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे
कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्
॥ ॐ तत्सत् ॥

लक्षण विज्ञान

अजय सिंह

लक्षण से आशय किसी भी बात या घटना की पुनरावृत्ति से है। कोई भी घटना जब पहली बार होती है तो उसे एक संयोग अनहोनी कहकर टाल दिया जाता है किन्तु निश्चित समयावधि या थोड़े-थोड़े अंतराल से यदि वही घटनाक्रम बार-बार उपस्थित होता है तो उसे लक्षण की संज्ञा दी जाती है। हमारे मनीषी, विद्वानों ने इन्हीं लक्षणों के आधार पर बड़े-बड़े ग्रंथ तक लिख डाले हैं। कई बार तो ये घटनायें ही प्रथा या रुढ़ि का स्थान भी ले लेती हैं। हमारी दिनचर्या में प्राय: ऐसे अनेक मौके आते हैं जब हम शुभ अशुभ लक्षणों के उपस्थित होने के कारण अपना कार्य रोक देते हैं। मसलन घर से निकलते वक्त यदि किसी ने छींक दिया तो बुजुर्ग तत्काल बाहर निकलने से मना कर देते हैं इसी तरह यदि बिल्ली रास्ता काट जाय तो उसे अशुभ समझा जाता है।

समुद्रिक शास्त्र में ऐसी कई घटनाओं का वर्णन मिलता है जिनका शुभाशुभ फल निकट भविष्य में दिखाई देता है। अब भले ही विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है किन्तु सामुद्रिक शास्त्र की उपयोगिता तथा प्रामाणिकता में कोई अन्तर नहीं आया है। आज भी संध्या के समय यदि आकाश में सप्तरंगी इन्द्रधनुष दिखाई दे तो समझा जाता है कि सुबह तक वर्षा होगी और निश्चित ही वर्षा होती है। इसी तरह

पक्षियों के स्वर, स्वप्न, जानवरों की आवाजें आदि अनेक घटनाओं की सूचना देती है।

प्रस्तुत आलेख में हम देव प्रतिमाओं में दिखने वाले विविधि उत्पातों (लक्षणों) के शुभ-अशुभ फल का वर्णन कर रहे हैं भारतीय दर्शन में देव प्रतिभाओं की पूजा अर्चना का इतिहास काफी पुराना है। **किसी भी देवी देवता की साधना करते वक्त हम मूर्ति को ही देवी देवता का स्वरूप समझकर अनुष्ठान करते हैं बल्कि यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं है कि मूर्ति को ही ईश्वर का अंश माना जाता है।** वैदिक धर्म मूर्तियों को मात्र प्रस्तर खण्ड न समझकर सजीव मानता है और मूर्ति को सजीव बनाने

मन्त्राणां मातृ का देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी ।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥

सब मंत्रों में 'मातृका' मूलाक्षररूप से रहने वाली, शब्दों में अर्थ रूप में रहने वाली, ज्ञानों में 'चिन्मयातीता' शून्यों में 'शून्यसाक्षिणी' तथा जिनसे और कुछ भी श्रेष्ठ नहीं हैं यह दुर्गा नाम से प्रसिद्ध हैं ।

के लिये मूर्ति स्थापना के समय विविध मंत्रों द्वारा ''प्राण प्रतिष्ठा'' का विधान है। मूर्ति की धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि से पूजा करना, फल, मिष्ठान आदि अर्पित करना इस बात का द्योतक है कि मूर्ति को साक्षात देवी, देवता समझा जाता है। प्रायः इस तरह की घटनायें देखने-सुनने में आती है कि अमुक मूर्ति ने दुग्ध पान किया, अमुक मूर्ति दर्शकों को हँसती हुयी दिखी या फिर मंदिर में किसी के प्रवेश के पूर्व ही मूर्ति में ताजे फूल चढ़े थे। उज्जैन स्थित काल भैरव की प्रतिमा द्वारा मदिरापान किये जाने की सत्यता भी अकाट्य है। वैसे भी प्रत्येक जीवित प्राणी के चेहरे पर अनेकानेक भाव आते जाते रहते हैं तो जाहिर है कि पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित प्रतिमाओं में भी स्वरूप परिवर्तन, मूर्ति का हँसना आदि अलौकिक घटनायें भी होंगी। ऐसी ही कुछ प्रमुख घटनाओं (लक्षणों) के फल का वर्णन हम यहाँ कर रहे हैं -

हसने रोदने नृत्ये देवतानां प्रसर्पणे ।
महद्भयं विजानीयात षट्मासाद् द्विगुणात्परम ॥

अर्थात यदि देवताओं की प्रतिमा हँसती हुयी, रोती हुयी, नाचती हुयी या चलती हुयी दिखे तो समझना चाहिए कि छः महीने से लेकर साल भर तक जनता में महान भय उत्पन्न होगा।

रुद्रे च वरुणे कश्चिदुत्पात समुदीर्यते ।
सप्तपक्षं भयं विन्माद ब्राह्मणानां न संशयः ॥

यदि शिव जी की प्रतिमा या वरुण की प्रतिमा में कोई उत्पात दिखे तो समझना चाहिये कि सात पखवाड़े अर्थात तीन महीने 15 दिनों में ब्राह्मणों को भय उपस्थित होगा।

इन्द्रस्य प्रतिमायां तु यद्युत्यातः प्रदृश्यते।
संग्रामे त्रिषु मासेषु राज्ञः सेनापतेर्वधः ॥

यदि देवराज इन्द्र की प्रतिमा में कोई उत्पात दिखे तो यह समझना चाहिये कि तीन महीने के अन्दर युद्ध भूमि में राजा और सेनापति का मरण हो जायेगा।

युद्युत्पातो बलन्देवे तस्योपकरणेषु च ।
महाराष्टान् महायोद्धान सप्तमासान प्रपीडयेत ॥

यदि बलदेव की मूर्ति में या उनके उपकरणों में कोई उत्पात दिखे तो समझो कि सात महीनों में महाराष्ट्र के महायोद्धाओं में पीड़ा होगी ।

यदार्य प्रतिमायां तु किञ्जिदुत्पातजं भवेत् ।
चौरा मासात्रिपक्षाद्वा विलीयन्ने रुदन्ति वा ॥

यदि सूर्य की प्रतिमा में थोड़ा बहुत भी उत्पात दिखे तो एक डेढ़ महीने में चोर जन नष्ट हो जाते हैं व दुख उठाते हैं।

यद्युत्पातः श्रियाः कश्चित् त्रिमासान् कुरुते फलम ।
वणिजां पुष्प बीजानां वनिता लेख्य जीविनम् ॥

यदि लक्ष्मी की मूर्ति में उत्पात दिखे तो तीन महीने के भीतर पुष्पों, बीजों एवं लेखन कार्य करने वाली स्त्रियों को कष्ट प्राप्त होता है। संक्षेप में व्यापारी वर्ग की स्त्रियों को किसी न किसी प्रकार का कष्ट प्राप्त हो सकता है।

भद्रकाली निकुर्वन्ती स्त्रियों हन्तीह सुव्रताः।
आत्मानं वृत्तिणो ये च षट्मासात् पीडयेत् प्रजाम् ॥

यदि भद्रकाली की मूर्ति में उत्पात दिखाई दे तो समझना चाहिये कि सुशील स्त्रियों को व व्रतवती आत्माओं को पीड़ा होगी और छः महीनों में प्रजा दुखी होगी।

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् ।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् ॥

कालका भी नाश करने वाली, वेदों द्वारा स्तुत हुई विष्णुशक्ति, स्कन्दमाता (शिवशक्ति), सरस्वती (ब्रह्मशक्ति), देवमाता अदिति और दक्ष-कन्या (सती), पापनाशिनी कल्याणकारिणी भगवती को हम प्रणाम करते हैं ।

इन्द्राण्याः समुत्पातः कुमार्यः परिपीडयेत् ।
त्रिपक्षादक्षिरोगेण कुक्षिकर्ण शिरोज्वरैः ॥

यदि इन्द्राणी की मूर्ति में उत्पात दिखे तो कुँवारियों को पीड़ा होती है और वे आँख, कान, पेट व सिर के रोगों तथा ज्वर से पीड़ित होती हैं।

धन्वन्तरे समुत्पातो वैद्यानां स भयङ्करः ।
षट्मासिकविकारांश्च रोगजान् जनयेन्नृणाम् ॥

यदि धनवन्तरि की प्रतिमा में उत्पात दिखे तो समझना चाहिये कि वैद्यों को पीड़ा होगी तथा जनसामान्य भी विकारग्रस्त होंगे।

जामदग्ने यदा रामे विकारः कश्चिदीर्यते ।
तापसांश्च तपाद्यांश्च त्रिपक्षेण जिघांसति ॥

यदि परशुराम या राम की मूर्ति में कोई विकार दिखे तो तपस्वियों अथवा तापसियों का विनाश होता है।

कामजस्य यदा भार्या या चान्याः केवलाः स्त्रियः ।
कुर्वन्ति किञ्चिद् विकृतं प्रधानस्त्रीषु तद्भयम् ॥

जब कामदेव की प्रतिमा में, उनकी पत्नी रति की प्रतिमा में अथवा अन्य किन्हीं देवियों की प्रतिमा में विकार दिखे तो समझना चाहिये कि प्रधान पुरुष की पत्नी को भय उत्पन्न होगा।

हेमवर्णः सुतोयाम मधुवर्णो भयङ्करः ।
शुक्ले च सूर्यवर्णेऽस्मिन् सुभिक्षं क्षेममेव च ॥

उगता हुआ सूर्य सुवर्ण जैसा हो तो अच्छी वर्षा होती है, मधु के वर्ण का हो तो भयंकर वर्षा होती है और यदि सफेद वर्ण का हो तो नियम से सुभिक्ष और क्षेम कुशल करेगा।

दक्षिणे चन्द्र शृङ्गे तु यदा तिष्ठति भार्गवः ।
अभ्युदगतं तदा राजा बलं हन्यात समार्थिवम् ॥

यदि उगते हुये चन्द्र के दक्षिण श्रृंग पर शुक्र हो तो सेना सहित राजा का नाश होता है।

नर्तनं जल्पनं हासमुत्कीलन निमीलने ।
देवाः यत्र प्रकुर्वन्ति तत्र विन्द्यान महद्भयम् ॥

जहाँ पर देव हँसते हों, नाचते हों, आँख झपकाते हों वहाँ महान भय होगा ऐसा समझना चाहिए।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

साधना सिद्धि विज्ञान

की

वार्षिक सदस्यता

ग्रहण कर आप पायेंगे एक अद्वितीय एवं दुर्लभ उपहार

सर्व मनोकामना सिद्धि यंत्र

- यह अति दुर्लभ यंत्र दिव्य मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित किया गया है जो आपकी सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने में सक्षम है।
- आप इस यंत्र को अपने पूजा स्थल में स्थापित कर सवा माह तक प्रतिदिन पुष्प, धूप, दीप आदि से इसका पूजन करें तत्पश्चात् यंत्र को किसी नदी में विसर्जित कर दें।

यह दुर्लभ उपहार आप किसी स्वजन मित्र या रिश्तेदार को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। आपको सिर्फ इतना करना है कि वार्षिक सदस्यता शुल्क 224/- का ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर (अपने मित्र या रिश्तेदार का पूरा नाम पता सहित) हमें भेज दें। ऐसा करके आप पायेंगे अति दुर्लभ उपहार तथा आपके मित्र या रिश्तेदार को वर्ष भर नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाती रहेगी। यदि आप स्वयं पत्रिका के सदस्य नहीं हैं तो आप स्वयं भी इसकी वार्षिक सदस्यता ग्रहण कर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

हमारा पता

साधना सिद्धि विज्ञान

शॉप नं. 3 प्लाट नं. 210, जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल-462011

दूरभाष : 576346, 591143

योग

डॉ. साधना

योग का तात्पर्य ही प्रबंधन है। प्रबंधन उन समस्त शक्तियों का जो कि शरीर में सूक्ष्म, स्थूल और परा रूप में मौजूद है। प्रबंधन की उच्चता ही रोगों को, दुखों को एवं अन्य समस्त समस्याओं को नष्ट कर सकती है। शरीर जितना अधिक प्रबंधित होगा उतना ही व्यक्ति अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के मार्ग को सुगम पायेगा। जिस प्रकार आकाश गंगा में अनेक तारों एवं नक्षत्रों का उदय होता है उसी प्रकार मानव मस्तिष्क भी इतने खाली स्थान को लिये है जहाँ पर कोशिकाओं का विशेष विकास सम्भव है। अंदर पड़ी सुप्त कोशिकायें क्रियाशील की जा सकती है। यह सब कुछ तभी सम्भव होगा जब शरीर का प्रबंधन उचित तौर पर योग के माध्यम से सम्पन्न किया जायेगा। शरीर में केवल द्वैत प्रणालियाँ ही नहीं है अपितु मस्तिष्क के अंदर अद्वैत विचारों के भण्डार हैं। अनेकों अति शक्तिशाली स्रोत भी हमारे शरीर एवं मस्तिष्क में उपलब्ध हैं। जिस प्रकार आप अगर अंतरिक्ष की यात्रा करना चाहते हैं तो फिर आपको एक अति सुव्यवस्थित यान की जरुरत होगी। ठीक उसी प्रकार अगर आप स्वयं के अंदर उपस्थित ऊर्जा के अनेकों परम स्रोतों तक पहुँचना चाहते हैं उनसे आत्म साक्षात्कार करना चाहते हैं एवं उन्हें नियंत्रण में लेना चाहते हैं तो फिर आपको अपने शरीर में मौजूद समस्त अंग प्रत्यंग, प्राण शक्ति एवं विभिन्न उप शक्तियों को समायोजित तो करना होगा। जीवन में कष्ट, पराजय, लक्ष्य की प्राप्ति न होना इत्यादि समस्यायें कहीं न कहीं कुप्रबंधन का ही परिणाम हैं। इसके साथ ही मानसिक एवं शारीरिक कर्म का कुप्रबंधन ही विपरीत फल प्रदान करता है। **योग का तात्पर्य शक्ति साधना है। शक्ति का साधक**

ही योग में सफलता प्राप्त कर सकता है। ऐसी स्थिति में योग के साथ-साथ प्राणायाम, मंत्र ज्ञान, तंत्र ज्ञान, पूजा पद्धति, वेद ज्ञान सभी कुछ आवश्यक होगें। इन सबकी पारंगतता ही आपको योग सिद्ध बनायेगी। योग ही आपको सिखायेगा कि किस प्रकार आप अपनी ऊर्जा का क्षय रोकें, प्राप्त ऊर्जा को किस प्रकार से व्यवस्थित करें। शारीरिक एवं मानसिक उत्पातों को किस प्रकार शक्ति के द्वारा दीर्घकाल के लिये नष्ट करें। अपने अंदर अतिरिक्त ऊर्जा का किस प्रकार दोहन करें। यह सब कुछ योग ही सम्पन्न करा सकता है। शक्ति के विभिन्न स्वरूपों को शरीर में स्थापित करने का मुख्य कार्य आसन ही करते हैं। उदाहरण के लिये त्रिकोणासन माँ भगवती की त्रिगुणात्मक शक्ति को आपके शरीर में प्रबंधित करता है तो वहीं चक्रासन विष्णु की सुदर्शनता शरीर में स्थापित करता है। इसी प्रकार सिंहासन माँ भगवती की सवारी की प्रचण्डता से आपका साक्षात्कार करायेगा।

जब शरीर में उपस्थित समस्त शक्तियाँ व्यवस्थित हो जायेंगी तो फिर ब्रह्माण्ड की विराट एवं अति परिष्कृत व्यवस्था भी आपके साथ समायोजन बिठाने में आसानी महसूस करेगी। समस्त ब्रह्माण्ड शक्तियों की विलक्षणता से भरा हुआ है एवं साधक अपनी क्षमता के अनुसार इन शक्तियों को ज्ञान स्वरूप में, सिद्धि स्वरूप में, आशीर्वाद स्वरूप में या वरदान स्वरूप में ग्रहण कर सकता है। जिस प्रकार यह समस्त ब्रह्माण्ड शिव शक्ति के अद्भुत मिलन का प्रतीक है उसी प्रकार शरीर में शिवत्व और शक्ति का मिलन योग के द्वारा परिष्कृत शरीर में ही सम्भव हो पाता है। हमारी आकाश गंगा इतनी ज्यादा प्रबंधित है कि अगर भूल से भी कोई धूमकेतु उसमें प्रविष्ट होता है। तो या तो ग्रह विशेष का बल या फिर इनकी रक्षात्मक प्रणाली उसे क्षति पहुँचाने से पूर्व ही शक्तिहीन बना देती है ठीक इसी प्रकार योग साधक की अपनी रक्षात्मक प्रणाली का इतना विकास कर लेता है कि आंतरिक और बाह्य दोनों शत्रु उसे नुकसान पहुँचाने से पूर्व ही शक्तिहीन हो जाते हैं। सकारात्मक शक्तियों की विशेषता ही यह है कि वे अत्यधिक धनात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण होती हैं।

धनात्मक ऊर्जा का तात्पर्य अहिंसक प्रवृत्तियों से है अर्थात वह स्वत: ही आक्रामक नहीं होती। इसके विपरीत आसुरी शक्तियाँ अत्यंत ही हिंसक और आक्रामक होती हैं। हिंसक प्रवृत्ति केन्दीकृत नहीं होती एवं आक्रामक व्यक्तित्व सदैव कमजोर केन्द्र का प्रतीक है। इसलिये ये जल्दी ही नष्ट हो जाती हैं। योग इस ब्रह्माण्ड में उपस्थित प्रत्येक आकृति जो कि विशिष्ठ शक्ति का प्रतीक है के अनुसार शरीर को ढालने की प्रक्रिया सम्पन्न कराता है।

ऋषि शब्द से आप क्या समझते हैं ? ऋषि शब्द का तात्पर्य ही अमृत्व है। अर्थात जो कभी भी नष्ट नहीं होता जिस साधक ने एक बार शरीर रूपी स्थिति में रहस्य विशेष को समझ लिया एवं उससे योगमय होकर जनसाधारण या ब्रह्माण्ड में उस विशिष्ठ ऊर्जा के कभी भी नष्ट न होने वाले स्त्रोत के रूप में अपने आपको स्थापित कर लिया वही ऋषि है। इसलिए ऋषि हमेशा ब्रह्माण्ड में विद्यमान रहते हैं यहाँ तक कि आपके मस्तिष्क में विशेष स्थान पर विशेष शक्ति के रूप में स्थापित हो जाते हैं। बस साधक तो अपने शक्ति प्रबंधन के द्वारा उनके प्रवाह को सम्पूर्ण शरीर में प्रवाहित करता रहता है। ऋषियों के नाम पर भी हठयोग में अनेकों आसन उल्लेखित हैं।इन विशेष आसनों का कार्य शरीर को उन विशेष ऋषियों द्वारा प्रवाहित ऊर्जा को शरीर में धारण कराना होता है। योग सानिध्य केवल माँ भगवती की कृपा से ही सम्भव हो पाता है क्योंकि वे ही शक्ति का स्वरूप हैं। समस्त शक्तियाँ उनके द्वारा ही प्रभावित होती हैं योग शक्ति, योगमाया, योगनिद्रा, योगिनी उन्हीं के स्वरूपों के तो विभिन्न नाम हैं। जो साधक उन्हें ईष्ट मानकर योग-साधना करते हैं उनकी सफलता असंख्य गुना ज्यादा हो जाती है। ईष्ट को ध्यान में रखकर किया गया योग ही योग सिद्धि है।

भगवती चरित्र का मानव शरीर में विकास योग क्रियाओं के द्वारा ही सम्भव हो सकता है। योगासनों को प्रतिदिन सम्पन्न करना स्वयं ही सबसे बड़ी शक्ति उपासना है।

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपा: पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु ॥

प्राणरूप देवों ने जिस प्रकाशमान वैखरी वाणी को उत्पन्न किया उसको अनेक प्रकार के प्राणी बोलते हैं। वह कामधेनुतुल्य आनन्दहायक और अन्न और बल देने वाली वाग्रूपिणी भगवती उत्तम स्तुति से सन्तुष्ट होकर हमारे समीप आये।

चक्रासन

भगवान विष्णु के हाथ में चक्र उस ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का प्रतीक है जिससे कि समस्त ब्रह्माण्ड एक लयात्मक तर्रीके में गतिशील हैं। ब्रह्माण्ड में उपस्थित प्रत्येक तारा-मण्डल चक्राकार आकृति में ही गतिशील है। अगर हम किसी आकाश-गंगा की तस्वीर का अवलोकन करें तो पायेंगे कि उसकी सम्पूर्ण आकृति चक्राकार ही है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में इस आकृति को अत्यधिक महत्व दिया गया है। भगवान श्रीकृष्ण के पास मौजूद सुदर्शन चक्र भी उनके विष्णु अवतार होने का प्रतीक है। यह आसन प्रकृति में मौजूद चक्राकार ऊर्जा को समर्पित है।

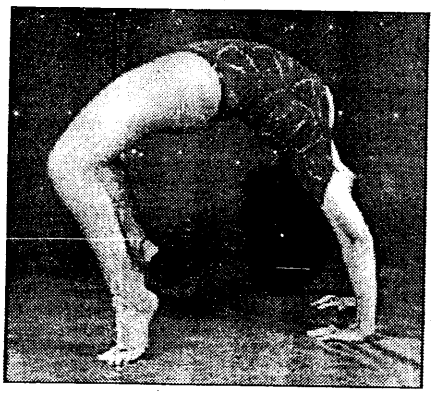

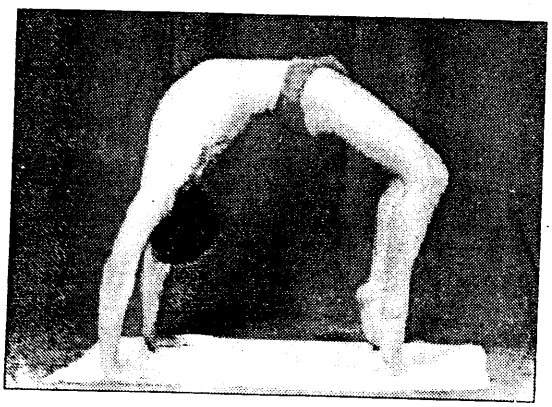

विधि :

सर्वप्रथम भूमि पर चित्त लेट जायें, इसके पश्चात् दोनों पाँव को एक-दूसरे से सटाकर घुटने से मोड़ते हुए नितम्बों के करीब रख लें फिर हाथों को घुमाते हुए हाथों की हथेलियाँ कंधों के नीचे सटा लें इसके पश्चात् आंतरिक शक्ति से पीठ, छाती, कटि-प्रदेश को ऊपर उठाकर हथेलियों एवं पंजों के बल पर संतुलित करें। (देखिए चित्र) ऐसा करने से हमारा शरीर एक वृत्ताकार आकृति में आ जायेगा।

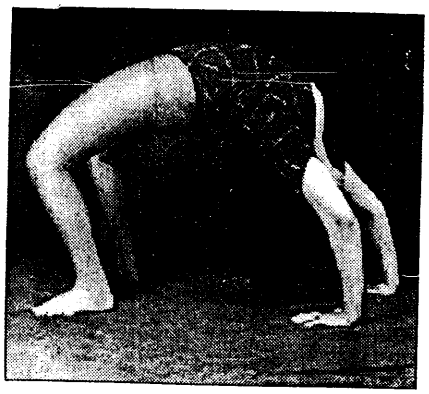

अभ्यासी धीरे-धीरे हाथों और पंजों के बीच की दूरी को कम करने का प्रयत्न करें। दूरी जितनी कम होगी हमारा शरीर उतना ज्यादा चक्राकार आकृति के करीब पहुँचेगा। लगभग पंद्रह से बीस सेकेण्ड तक इस स्थिति में रुकें फिर धीरे-धीरे सामान्य अवस्था में वापस आ जायें। इस आसन को करते वक्त श्वास छोड़कर शरीर को उठाने से अभ्यासियों को ज्यादा आसानी होती है और इसके बाद अगर वे चाहें तो चक्राकार स्थिति में सूक्ष्म गति से श्वास-प्रश्वास कर सकते हैं। कुछ समय पश्चात् अभ्यार्थी ऐसी स्थिति दोनों टाँगों के बीच लगभग एक से डेढ़ फिट का अंतर रखकर इस आसन को कर सकते हैं। इस आसन को करने के पश्चात् हलासन अवश्य लगा लेना चाहिए जिसके कारण शरीर पुनः सामान्य अवस्था में आ जाता है। कुछ आसनों में विपरीत आसन लगाना अत्यधिक आवश्यक होता है जिसके कारण किसी एक आकृति के कारण शरीर में बना अत्यधिक लोच सामान्य हो जाता है।

लाभ :

योगासनों की श्रृंखला में चक्रासन बहुत ही प्राचीन एवं अति महत्वपूर्ण आसन है। प्रत्येक अभ्यार्थी को इसका अभ्यास अवश्य ही करना चाहिए। यह आसन सम्पूर्ण आसन है एवं इस आसन का अभ्यास करने से शरीर में मौजूद सभी अंतःस्त्रावी ग्रंथियाँ, मांस-पेशियाँ, अस्थियाँ एवं मस्तिष्क में प्राण शक्ति का प्रसार हो जाता है जिसके कारण प्रत्येक अंग-प्रत्यंग में नव स्फूर्ति एवं क्रियाशीलता आ जाती है। शरीर को वृद्धावस्था से दूर रखने में यह आसन सर्वोपरि है। मेरुदण्ड में उपस्थित सभी आध्यात्मिक ऊर्जा केंद्र चक्राकार आकृति में पाये जाते हैं अतः इन केंद्रों को चैतन्य करने के लिए चक्रासन अति महत्वपूर्ण है। मेरुदण्ड के अंदर स्थित सुषुम्ना नाड़ी में शक्ति संचार ठीक रूप से बनाने के लिए चक्रासन का ही इस्तेमाल किया जाता है। मूलाधार में

अति उपयोगी है इसके अतिरिक्त छाती, कमर, गर्दन, भुजाओं, नितम्बों एवं पैरों के सभी अंग व जोड़ इस आसन को करने से लचीले और बलिष्ठ बन जाते हैं। वृद्धावस्था में सामान्यत: रीढ़ की हड्डी आगे की तरफ झुक जाती है जिसके कारण व्यक्ति को जीवन पर्यन्त इस तरह की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता। स्नायविक दुर्बलता, लकवा एवं हिस्टीरिया इत्यादि की अनुवांशिकता होने पर व्यक्तियों को यह आसन निश्चित तौर पर करना चाहिए। इस आसन को करने से मस्तिष्क की तरफ रक्त संचार में वृद्धि होती है जिसके कारण मस्तिष्क में स्थित सभी कोशिकाऐं क्रियाशील हो उठती हैं। लंबे समय तक बालों का कालापन बनाये रखना, चेहरे को झुर्री मुक्त रखना एवं सामान्य दृष्टि बनाये रखने के लिए यह आसन हितकर है। चक्रासन युवावस्था को लंबे समय तक बनाये रखता है साठ वर्ष की उम्र में भी व्यक्ति को बुढ़ापे का अनुभव नहीं होने देता। बुढ़ापा क्षय की निशानी है वहीं यौवन ऊर्जा से परिपूर्णता का प्रतीक है। पाचन शक्ति को सामान्य रखने में यह आसन उत्तम साबित होता है।

नोट : स्त्रियाँ गर्भावस्था के दौरान इस आसन को कदापि न करें साथ ही भोजन इत्यादि करने के बाद इस आसन का अभ्यास वर्जित है। चक्रासन लगाने के बाद हलासन अवश्य लगा लें।

त्रिकोणासन

इस आसन का उद्देश्य शरीर को त्रिकोणात्मक आकृति का अनुसरण कराना है। इस आसन को करते समय हमारा शरीर त्रिकोणात्मक आकृति का निर्माण करता है एवं यह आसन खड़े रहकर किया जाता है। इस आसन को करने की भिन्न-भिन्न शैलियाँ हैं परंतु प्रत्येक शैली में शरीर त्रिकोणात्मक अवस्था में ही आता है।

विधि :

सर्वप्रथम सावधान की मुद्रा में दोनों पंजों को जोड़कर एवं हथेलियों को जांघों से सटाकर तनाव रहित खड़े होना है। द्वितीय अवस्था में दोनों पांवों के बीच दो से ढाई फिट का अंतर लाइये और दोनों हाथों को कंधे के समानान्तर कीजिए। ऐसी स्थिति में हथेलियाँ जमीन की तरफ होंगी और दृष्टि सामने की तरफ सीध में रहेगी। अंगुलियाँ सीधी होनी चाहिए और दोनों पांव एक सीध में रखना अत्यधिक आवश्यक है। तृतीय अवस्था में बायीं तरफ झुकते हुए बायें हाथ को बायें पैर के पंजे तक ले जाना है और दायें हाथ को कानों से सटाकर गर्दन की सीध में रखना है। ऐसी स्थिति का निर्माण करते समय गर्दन को तिरछा नहीं करना है साथ ही पाँव को घुटनों से बिल्कुल भी मुड़ने नहीं देना है। श्वास-प्रश्वास सामान्य रखनी है। एक बार फिर द्वितीय अवस्था में वापस आ जायें और फिर इसी प्रक्रिया को दायीं तरफ दोहराते हुए त्रिकोणात्मक आकृति का निर्माण करना है।

प्रारम्भिक अवस्था में इस आसन को सहजता से करें। दर्द इत्यादि महसूस होते ही आसन को रोक दें। आदम कद दर्पण का इस्तेमाल करने से धीरे-धीरे आसन में सुधार आने लगेगा। दोनों पैरों के बीच का अंतर कूद कर न लें।

लाभ :

इस आसन का अभ्यास करने से शरीर के निचले हिस्से की समस्त मांस-पेशियाँ लचीली हो जाती हैं एवं यह आसन टाँगों की दुर्बल मांस-पेशियों को भी पुष्ट करता है। हमारे शरीर में सबसे ज्यादा चर्बी कमर एवं पुट्ठों पर ही एकत्रित होती है। लंबे समय तक बैठे रहने के कारण कमर चर्बीयुक्त हो जाती है परंतु त्रिकोणासन लगाते रहने से कमर, पुट्ठों व जंघाओं पर अनचाही चर्बी इकट्ठी नहीं हो पाती। इसके साथ ही यह टखनों को भी पुष्ट करता है तथा सीने पर एकत्रित अनचाहे मांस को कम करता है।

त्रिकोणासन शरीर के दोनों तरफ (दायें और बायें) लचीलापन लाने में विशेष लाभकारी है। आध्यात्मिक रूप से इस आसन का अभ्यास करने से मूलाधार, स्वाधिष्ठान एवं मणिपुर चक्र को जागृत करने में मदद मिलती है। इस आसन को करते रहने से स्लिप्ड डिस्क एवं कमर दर्द की सम्भावना हमेशा के लिए खत्म हो जाती है। गठिया रोग

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि।

मैं सोम, त्वष्टा, पूषा और भग को धारण करती हूँ। बैलोक्यको आक्रमण करने के लिये विस्तीर्ण पादक्षेप करने वाले विष्णु, ब्रह्मदेव और प्रजापतिको मैं ही धारण करती हूँ।

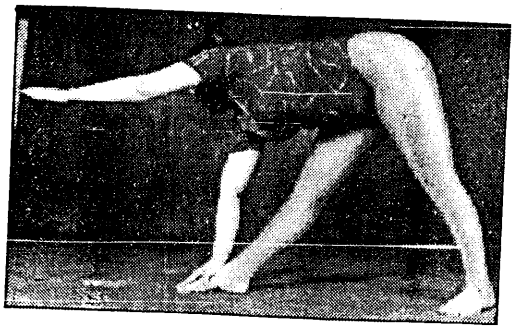

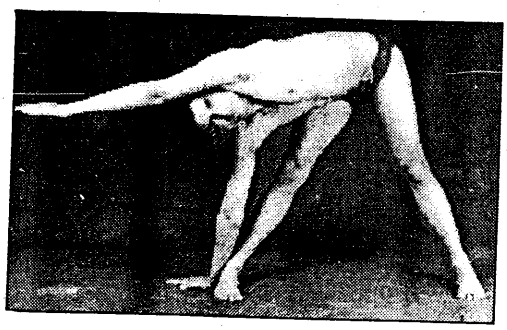

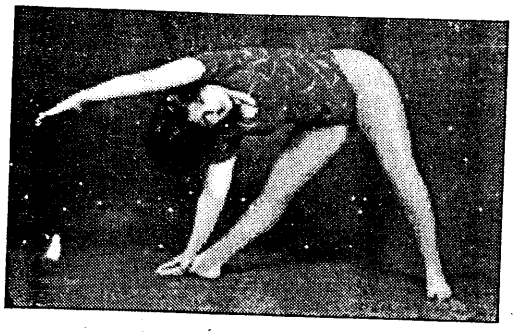

वेदीऽहमवेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम् ।
अजाहमनजाहम् । अर्धश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् ।

वेद और अवेद भी मैं हूँ। विद्या और अविद्या मैं, अजा और अनजा भी मैं, नीचे-ऊपर, अगल-बगल भी मैं ही हूँ।

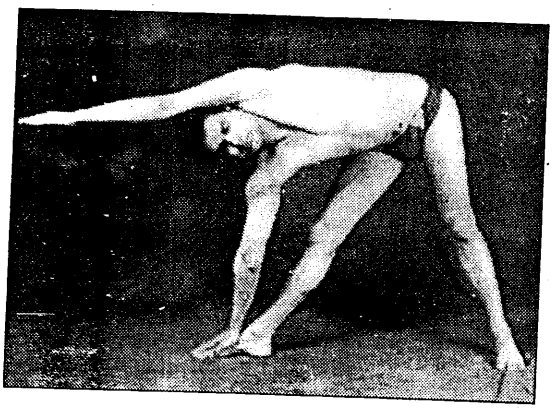

से ग्रसित लोगों के लिए यह आसन सर्वाधिक उपयुक्त है। आध्यात्मिक रूप से त्रिगुणात्मक आकृति मातृ आदि शक्ति का प्रतीक है। त्रिगुणात्मक शक्ति का मतलब समस्त तामसिक, सात्विक एवं राजसिक शक्तियों का एक अद्भुत सम्मिश्रण है। हिन्दू धर्म में मातृ शक्ति को राजसिक स्वरूप में माँ दुर्गा के रूप में देखा गया है तो तामसिक स्वरूप में काली के रूप में पूजा गया है वहीं सात्विक स्वरूप में सरस्वती के रूप में भी आराधना की गई है। ठीक इसी प्रकार इस आसन में पारंगतता प्राप्त करने पर सुन्दरता, सात्विकता एवं संतुलन का बोध होता है। इस आसन को करने से हमारे शरीर में विद्यमान तीनों गुणों में एक अद्भुत सामन्जस्य का निर्माण होता है। हठयोग साधना में इस आसन को सिद्ध करने का विशेष महत्व है।

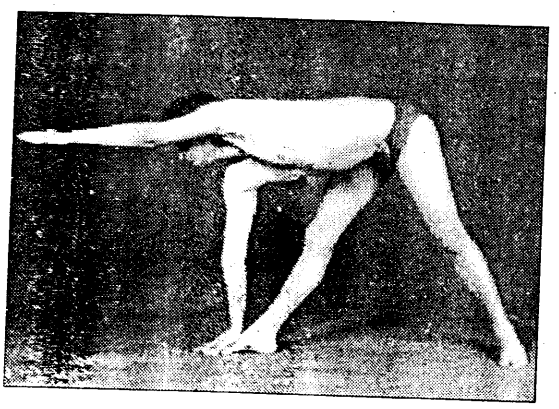

त्रिगुणात्मक आकृति जहाँ बिल्ब पत्र एवं भगवान शिव के तीन नेत्रों का प्रतीक है वहीं यह योग, भोग और सम्भोग के शाश्वत् सिद्धांत को भी दर्शाती है। त्रिकोणासन भिन्न-भिन्न मुद्राओं में हठयोगियों द्वारा सम्पन्न किया जाता है पर कुल मिला-जुलाकर जो आकृति सामने आती है वह त्रिकोणात्मक ही होती है। इसके भिन्न प्रकार निम्नलिखित हैं।

ऋग्वेद में देवी महिमा

ॐ रात्रीत्याद्यष्टर्चस्य सूक्तस्य कुशिक: सौभरो रात्रिर्वा भारद्धाजो ऋषि:, रात्रिर्देवता, गायत्री छन्द:, देवीमाहात्म्यपाठे विनियोग: ।

वैदिक रात्रिसूक्त ऋग्वेद की आठ ऋचायें हैं। यहाँ दोनों दिये जाते हैं। रात्रिदेवता के प्रतिपादक सूक्त को रात्रिसूक्त कहते हैं यह रात्रिदेवी दो प्रकार की है - एक जीवरात्रि और दूसरी ईश्वररात्रि। जीवरात्रि वही है जिसमें प्रतिदिन जगत् के साधारण जीवों का व्यवहार लुप्त होता है। दूसरी ईश्वररात्रि वह है, जिसमें ईश्वर के जगद्रूप व्यवहार का लोप होता है; उसी को कालरात्रि या महाप्रलयरात्रि कहते हैं। उस समय केवल ब्रह्म और उनकी मायाशक्ति, जिसे अव्यक्त प्रकृति कहते हैं, शेष रहती है। इसकी अधिष्ठात्री देवी 'भुवनेश्वरी' है। रात्रिसूक्त से उन्हीं का स्तवन होता है।

ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः ।
विश्वा अधि श्रियोऽधित ॥

महत्तत्त्वादिरूप व्यापक इन्द्रियों से सब देशों में समस्त वस्तुओं को प्रकाशित करने वाली ये रात्रि रूपा देवी अपने उत्पन्न किये हुए जगत् के जीवों के शुभाशुभ कर्मों को विशेष रूप से देखती हैं और उनके अनुरूप फल की व्यवस्था करने के लिये समस्त विभूतियों को धारण करती है ।

ओर्वप्रा अमर्त्यानिवतो देव्युद्वतः । ज्योतिषा बाधते तमः ॥

ये देवी अमर हैं और सम्पूर्ण विश्व को नीचे फैलनेवाली लता आदि को तथा ऊपर बढ़ने वाले वृक्षों को भी व्याप्त कर के स्थित हैं ; इतना ही नहीं, ये ज्ञानमयी ज्योति से जीवों के अज्ञानान्धकार का नाश कर देती हैं।

निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती । अपेदु हासते तमः ॥

परा चिच्छक्तिरूपा रात्रिदेवी आकर अपनी बहिन ब्रह्मविद्यामयी उषादेवी को प्रकट करती हैं , जिससे अविद्यामय अन्धकार स्वतः नष्ट हो जाता है ।

सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि । वृक्षे न वसतिं वयः ॥

वे रात्रि देवी इस समय मुझ पर प्रसन्न हों, जिनके आने पर हम लोग अपने घरों में सुख से सोते हैं - ठीक वैसे ही, जैसे रात्रि के समय पक्षी वृक्षों पर बनाये हुये अपने घोंसलों में सुखपूर्वक शयन करते हैं ।

नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः। नि श्येनासश्चिदर्थिनः ॥

उस करुणामयी रात्रिदेवी के अङ्क में सम्पूर्ण ग्रामवासी मनुष्य, पैरों से चलने वाले गाय, घोड़े आदि पशु, पंखों से उड़नेवाले पक्षी एवं पतंग आदि किसी प्रयोजन से यात्रा करने वाले पथिक और बाज आदि भी सुखपूर्वक सोते हैं ।

यावया वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूर्म्ये । अथा नः सुतरा भव ॥

हे रात्रिमयी चिच्छक्ति ! तुम कृपा करके वासनामयी वृकी तथा पापमय वृक को हमसे अलग करो । काम आदि तस्करसमुदाय को भी दूर हटाओ । तदन्तर हमारे लिये सुखपूर्वक तरने योग्य हो जाओं- मोक्षदायिनी एवं कल्याणकारिणी बन जाओ ।

उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित । उष ऋणेव यातय ॥

हे उषा ! हे रात्रि की अधिष्ठात्री देवी ! सब ओर फैला हुआ यह अज्ञानमय काला अन्धकार मेरे निकट आ पहुँचा है । तुम इसे ऋण की भांति दूर करो जैसे धन देकर अपने भक्तों के ऋण दूर करती हो, उसी प्रकार ज्ञान देकर इस अज्ञान को भी हटा दो ।

उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः । रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ॥

हे रात्रि देवी ! तुम दूध देनेवाली गौ के समान हो । मैं तुम्हारे समीप आकर स्तुति आदि से तुम्हे अपने अनुकूल करता हूँ । परम व्योमस्वरूप परमात्मा की पुत्री ! तुम्हारी कृपा से काम आदि शत्रुओं को जीत चुका हूँ, तुम स्तोम की भाँति मेरे इस दृविष्य को भी ग्रहण करो ।

अंगों की बनावट बताती हैं स्त्री के गुण व चरित्र

विवाह एक पवित्र संस्कार ही नहीं जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। परिणय सूत्र में बँधकर न सिर्फ व्यक्ति जीवन में सुख प्राप्त करता है बल्कि अपने वंश वृक्ष को भी आगे बढ़ाता है यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। विवाह से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है कि उसकी पत्नी सुन्दर होने के साथ-साथ सुशील, मृदुभाषी तथा आज्ञाकारी हो। यदि स्त्री शारीरिक रूप से तो आकर्षक हो किन्तु उसमें गुण अच्छे न हों, वह कलह करने वाली हो तथा दुश्चरित्र हो तो जीवन नरक बन जाता है। यही वजह है कि विवाह से पूर्व कन्या को देखने का विधान है। वर्तमान में पाश्चात्य सभ्यता के दुष्प्रभाव के चलते तो कन्या को देखना महज एक रस्म अदायगी तक सिमट गया है और यही वजह है कि ज्यादातर परिवार विवाह के कुछ महीनों या वर्षों में ही विघटित हो जाते हैं। ज्यादा दूर जाने की जरूरत नहीं आप दो तीन दशक पीछे ही देखेंगे तो पायेंगे कि तब और अब के विवाह विच्छेद, आत्महत्या आदि के आकड़ों के प्रतिशत में काफी फर्क है इसकी प्रमुख वजह यह है कि हमारे बड़े बुजुर्ग जिन्हें हम दकियानूसी कहकर उपेक्षित कर देते हैं वे कन्या के नाक-नक्श आँखों की बनावट, चाल-चलन आदि देखकर यह जान लेते थे कि वह कन्या वरण करने योग्य है अथवा नहीं।

सामुद्रिक शास्त्र में कन्या के बाह्य अंग प्रत्यंगों की बनावट के आधार पर उसके गुणों का आंकलन करने के पश्चात् ही विवाह की सलाह दी गयी है। सामुद्रिक शास्त्र कहता है कि-

कृषोदरी च विम्बोष्ठी दीर्घ केशीच या भवेत।
दीर्घमायुः समाप्नोति धन धान्य विवर्द्धिनो॥

जिस स्त्री की कमर पतली हो, उसके अधर (होंठ) बिम्बफल के समान हो तथा केश लम्बे हों वह धन धान्य को बढ़ाने वाली होती है तथा बहुत दिनों तक जीती है।

पूर्ण चन्द्रमुखी कन्यां बाल सूर्य समप्रभाण्।
विशाल नेत्रां रक्तोष्ठी तां कन्या वरयेद बुधः॥

अर्थात चन्द्रमा के समान मुँह, उगते हुये सूर्य के समान कान्ति, बड़ी आँखों वाली तथा लाल होंठों वाली कन्या से विवाह करना उत्तम है।

यस्याः संकुचितं केशं मुखं च परिमण्डलम्।
नाभिश्च दक्षिणावर्ता सा नारी रति भामिनी॥

अर्थात जिस स्त्री के केश घुंघराले हों, मुख गोल हो, नाभि दाहिनी ओर घूमी हुयी हो वह स्त्री रति के समान होती है।

अल्पस्वेदाल्प निद्रा च अल्परोमा वल्प भोजना
सुरूपं नेत्र गात्राणां स्त्रीणां लक्षणमुत्तमम्

जिस स्त्री के पसीना कम आता हो, कम सोती हो, शरीर में रोयें कम हों, तथा कम भोजन करती हो और उसके नेत्र सुन्दर तथा शरीर सुगठित हों ऐसी स्त्री श्रेष्ठ मानी जाती है।

अंकुशं कुण्डलं माला यस्याः करतले भवेत।
योग्यं जनयते नारी सुपुत्रं पृथ्वी पतिम्॥

अर्थात जिस स्त्री की हथेली में अंकुश, कुण्डल या माला का चिन्ह हो वह राजा होने योग्य सुपुत्र को जन्म देती है।

यस्याः समतला पादौ भूमौ हि सुप्रतिष्ठितौ।
रति लक्षण सम्पन्ना सा कन्या सुखमेधते॥

अर्थात जिसके चरण समतल हों और भूमि पर अच्छी तरह पड़ते हों (पैर की कोई भी अंगुली पृथ्वी को छूने से न रह जाये) रति लक्षण से सम्पन्न ऐसी कन्या सुख पाती है।

स्निग्धकेशीं विशालाक्षीं सुलोमां च सुशोभनाम्।
सुमुखीं सप्रभां चापि तां कन्या वरयेद बुध॥

चिकने केशों वाली, बड़ी आँखों वाली, सुन्दर लोम् मुख और कान्ति वाली सुन्दर कन्या का वरण करना उत्तम है।

स्थूला यस्याः करांगुल्यः हस्तपादौ च कोमलौ।
रक्तांगानि नखाश्चैन सा नारी सुखमेधते॥

जिस स्त्री के हाथ की अंगुलियाँ छोटी हों, हाथ पैर कोमल हों, शरीर व नाखूनों से खून झलकता हो वह स्त्री सुख पाती है।

रक्तोत्पल सुवर्णाभा या नारी रक्तपिंगला।
नराणां गितवाछल्पा अलंकार प्रिया भवेत॥

लाल, कमल और सोने की कांति वाली रक्त व पिंगल वर्ण की ओर तथा छोटी भुजाओं वाली औरत गहनों को बहुत चाहती है।

अतिदीर्घा मृशं ह्रस्वां अतिस्थलामतिकृशाम।
अति गौरां चाति कृष्णां षडेताः परिवर्जयेत॥

अत्यन्त लम्बी, अत्यन्त छोटी, अत्यन्त मोटी, अत्यधिक पतली, अत्यधिक गोरी तथा अत्यन्त काली ये छः प्रकार की स्त्रियाँ छोड़ देनी चाहिये अर्थात इनका वरण नहीं करना चाहिए।

श्रृंगाल्लाक्षी कृशांगी च सा नारी च सुलोचना।
धनहीना भवेत्साधवी गुरुसेवा परायणा॥

सियार की तरह आँखों वाली, पतले शरीर वाली, सुलोचना स्त्री धनहीन होते हुये भी साध्वी और गुरुजनों की सेवा करने वाली होती है।

समस्या समाधान

पत्रिका के प्रथम अंक में हमने वायदा किया था कि यदि आप किसी भी क्षेत्र में असफल हो रहे है, आपके कार्य में व्यवधान आ रहा है तो आप अपनी समस्या हमें लिखें। हमें आश्चर्य मिश्रित हर्ष है कि इस स्तम्भ के लिये हमें अब तक सैकड़ों पत्र प्राप्त हुये हैं जिनमें कुछ लोगों की समस्यायें नितान्त व्यक्तिगत थी अतः हमने उनका निदान पत्र द्वारा पृथकतः सम्बन्धी जनों को लिख दिया है। यहाँ हम कुछ ऐसे पत्रों के सम्बन्ध में अपनी राय दे रहे हैं जो आम लोगों की समस्यायें हैं -

सम्पादक

समस्या समाधान

जीवन पथ पर कई ऐसे मोड़ आते हैं जब विपरीत परिस्थितियों के कारण मनुष्य बहुत कुछ चाहकर भी नहीं कर पाता। कदम कदम पर उसे तमाम बाधाओं का सामना करना पड़ता है। भूत प्रेत आदि अदृश्य शक्तियाँ परेशान करती हैं, व्यापार व्यवसाय में हानि होने लगती है।

क्या आप भी ऐसी किसी समस्या से परेशान हैं?

यदि आपको व्यापार में हानि हो रही है, शत्रु आप पर हावी हो रहे हैं आपकी इच्छा होते हुये भी विवाह नहीं हो रहा है, मानसिक रूप से परेशान है या फिर भूत, प्रेत, टोना जादू आदि का चक्कर है तो आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है।

उठाइये अपनी कलम और हमें अपनी समस्या लिख भेजिए, हम उसका समाधान निःशुल्क करेंगे। पत्र के साथ अपना पासपोर्ट साइज का फोटो, पूरा नाम, जन्म की तारीख, समय, जन्म स्थान तथा पूरा पता अवश्य लिखें।

● हमारा पता ●

समस्या समाधान

साधना सिद्धि विज्ञान

शॉप नं. 3, प्लाट नं.210 जोन-1, एम. पी. नगर भोपाल - 462011 दूरभाष : 0755 576346

समस्या :

आगरा से विवेक कुमार, दिल्ली से विनय अग्रवाल गुना (म.प्र.) से आशीष दुबे, इलाहाबाद से राजेश शर्मा, रीवा (म.प्र.) से प्रमोद द्विवेदी व भोपाल से सुशील वर्मा लिखते हैं कि काफी दिनों से वे आर्थिक विपन्नता अनुभव कर रहे हैं वे जिस कार्य में भी हाथ डालते हैं असफलता ही हाथ लगती है।

समाधान : आप सभी साधक साधना सिद्धि विज्ञान के प्रथम अंक (पेज 40) में वर्णित विधि से अभिमंत्रित कर पाँच मुखी रुद्राक्ष धारण करें तथा पेज 57 में वर्णित,पारदेश्वर शिव साधना सम्पन्न करें भगवान शिव की कृपा से आपके समस्त कष्टों का शमन होने के साथ-साथ आपके घर में लक्ष्मी का चिरस्थाई निवास होगा और जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफलता मिलेगी।

समस्या : मेरठ शहर से सत्यनारायण वर्मा, कलकत्ता से उपेन्द्र सिंह, सतना (म.प्र.) से रामजी तिवारी, पटना से वीरेन्द्र जायसवाल, सहारनपुर से शिवमोहन राय व छतरपुर से प्रदीप चौबे लिखते हैं कि वे विगत कुछ महीनों से ऐसा महसूस करते हैं कि उन्हें क्रोध अधिक आता है दिन भर दिमाग उलझन में रहता है तथा प्राय: कोई न कोई व्याधि घेरे रहती हैं कृपया ऐसा कोई उपाय बतायें जिससे उपरोक्त समस्याओं से छुटकारा मिल सके।

समाधान : जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति तथा जीवन को रोग रहित बनाने के लिये देवाधिदेव महादेव की उपासना ही एकमात्र उपाय है। आप सभी पत्रिका के 'रुद्र विशेषांक '(पेज 19) में वर्णित महामृत्युंजय साधना करें।

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रात:सूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे॥

हृत्कमल के मध्य में रहने वाली, प्रात:कालीन सूर्य के समान प्रभावशाली, पाश और अंकुश धारण करने वाली, मनोहर रूपवाली, वरद और अभयमुद्रा धारण किये हुए हाथों वाली, तीन नेत्रवाली, रक्तवस्त्र परिधान करने वाली और भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने वाली देवी को मैं भजता हूँ।

सामुद्रिक शास्त्र की उपयोगिता तथा प्रामाणिकता में कोई अन्तर नहीं आया है आज भी संध्या के समय यदि आकाश में सप्तरंग इन्द्रधनुष दिखाई दे तो समझा जाता है कि सुबह तक वर्षा होगी और निश्चित ही वर्षा होती है। इसी तरह पक्षियों के स्वर, स्वप्न, जानवरों की आवाजें आदि अनेक घटनाओं की सूचना देती है।

पाठक कहते हैं .....

पिछले एक दशक से आध्यात्म के क्षेत्र में कार्य करने तथा होमियोपैथी व योग सम्बन्धी विविध पुस्तकों के माध्यम से जनसेवा करने के उपरान्त हिन्दी मासिक पत्रिका ''साधना सिद्धि विज्ञान'' का प्रकाशन आरम्भ किया गया है जैसा कि हमें विश्वास था हमें पाठकों का भरपूर स्नेह व सहयोग प्राप्त हुआ। पाठकों ने पत्रिका के प्रथम अंक ''रुद्र विशेषांक'' में प्रकाशित सामग्री को खूब सराहा तो वहीं अपनत्व भरे सुझाव भी दिये। पत्रिका के प्रकाशन पर प्राप्त सैकड़ों पत्रों में से कुछ पत्र हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं ताकि आप जान सकें कि ''साधना सिद्धि विज्ञान'' के सम्बन्ध में जिज्ञासु पाठकों की राय क्या-क्या है हमें उम्मीद है कि आप हमारे परिवार के सदस्यों की भांति अपना स्नेह व मार्ग दर्शन इसी तरह प्रदान करते रहेंगे।

सम्पादक

एक सराहनीय कदम

आदरणीय,

विगत कई वर्षों से आध्यात्मिक शिविरों की श्रृंखला आयोजित कर आपने जो चेतना जागृत की है उसके लिये आप साधुवाद के पात्र हैं। अपने इसी संकल्प पथ पर पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के पावन आशीर्वाद स्वरूप आपने पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ कर अपना संदेश जन-जन तक पहुँचाने का जो मार्ग चुना है वह प्रशंसनीय है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आपने पत्रिका में पूजन, अनुष्ठान, योग एवं चिकित्सा सम्बन्धी विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है।

विनय शर्मा सहानरपुर

हम सब दुआ करते हैं

आदरणीय,

यद्यपि डॉ. श्रीमती साधना जी का नाम हमारे लिये नया नहीं है क्योंकि वे विगत कई वर्षों से प्रतिष्ठित स्वास्थ्य पत्रिका 'निरोगधाम' के माध्यम से हम जैसे असंख्य रोगियों को जीवनदान दें चुकी हैं उनका प्रत्येक लेख तथा उसमें वर्णित औषधियाँ रामबाण की तरह अचूक होती हैं किन्तु 'साधना सिद्धि विज्ञान' को उनका सहयोग व मार्गदर्शन मिलना एक बड़ी उपलब्धि है। पत्रिका के नवम्बर अंक में प्रकाशित पुष्पों से निर्मित अचूक औषधियाँ व गुर्दों की बीमारियों की होमियोपैथिक चिकित्सा अत्यन्त ही उपयोगी व संग्रहणीय है। डॉ. साधना जी द्वारा नि:स्वार्थ भाव से की जा रही जनसेवा की प्रशंसा करने के लिये हमारे पास शब्द नहीं है बस। हम सब उनके दीर्घायु व यशस्वी जीवन के लिये ईश्वर से कामना करते हैं।

विक्रमादित्य तिवारी उर्रहट, रीवा

कृपया आयुर्वेद सम्बन्धी जानकारी भी दें

आदरणीय,

साधना सिद्धि विज्ञान का पहला अंक पढ़ा। पत्रिका की भाषा आडम्बरहीन है तथा कोई भी जानकारी बढ़ा चढ़ाकर प्रस्तुत नहीं की गयी है साथ ही किसी तरह के ऊट-पटांग तांत्रिक प्रयोग या देवी-देवताओं के नाम पर डराने जैसी कोई बात नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री ऐसी है कि कहीं से पढ़ें तो ऐसा लगता है कि पत्रिका यहीं से शुरू हुयी है तथा कोई भी सामग्री पुरानी होने वाली नहीं है। पत्रिका में योग, प्राणायाम, अनुष्ठान, होम्योपैथी का अद्भुत समिश्रण है किन्तु आयुर्वेद के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। कृपया इस क्षेत्र में भी कुछ सामग्री दें।

अनिरुद्ध प्रसाद शास्त्री मेरठ

संकल्प प्रशंसा योग्य है

आदरणीय,

पत्रिका के प्रथम अंक सम्पादकीय में ही आपने अपना संकल्प आम पाठकों के सम्मुख लाकर प्रशंसनीय कार्य किया है। वैसे भी पत्रिका में वर्णित प्रत्येक सामग्री अपने आप में पूर्ण तथा पारदर्शी है। यजुर्वेद जैसे महान ग्रंथ में रुद्र के सम्बन्ध में किये गये वर्णन को आपने हिन्दी भाषा में प्रकाशित कर आम पाठकों के समझने योग्य बना दिया है वहीं स्वप्न विज्ञान, प्राणायाम, शास्त्रोक्त शिव पूजन आदि शीर्षकों से प्रकाशित सामग्री भी संग्रहणीय एवं ज्ञानवर्धक है। हमें विश्वास है कि आप भविष्य में इन्हीं मापदण्डों को बरकरार रखेंगे।

अभिषेक त्यागी कनाट प्लेस, दिल्ली

दीर्घ-जीविता रहस्यम्

(काल एवं समय से परे मस्तिष्क की परिकल्पना)

श्री अरविन्द

पिछले पाँच हजार वर्षों से प्रत्येक मानव समूह एवं व्यक्तिगत तौर पर हर मनुष्य की यही कोशिश एवं अनुसंधान जीवन भर चलता रहता है कि किसी प्रकार वह अपना जीवन काल लम्बा कर सके या बढ़ा सके। यह चिंतन अधिकांशत: मनुष्यों को ग्रसित किये रहता है मनुष्यों तो क्या प्रत्येक जैविक संरचना मृत्यु से भागती है। किसी को भी मृत्यु पसंद नहीं है। इस प्रकार से वास्तविकता एवं सोच के बीच एक अजीब सा द्वंद सभी में दिखाई देता है। इस यक्ष प्रश्न का उत्तर अत्यंत ही जटिल है एवं सरल भी है। सवाल सिर्फ समग्रता से न केवल पृथ्वी बल्कि उससे सम्बन्धित अन्य ब्रह्माण्डीय शरीर, खगोलिक घटनायें, ब्रह्माण्ड में उपस्थित पराचेतना एवं अनेकों तत्वों को सूक्ष्मता से समझना होगा। हमारे मस्तिष्क में मृत्यु शब्द के वास्तविक रूप को भी समझना अति आवश्यक है।

पितासि त्वं मे जगतामधीशो, दुरत्यय: काल उपात्तशक्ति: ।
आज्ञप्तुमामर्हसि देवदेव ! किमस्ति कार्य करणीयमाशु ।।

हे देव ! आप मेरे पिता हैं, सम्पूर्ण चराचर के स्वामी हैं, दुरन्तकाल भी आप से ही सामर्थ्य ग्रहण करता है। प्रभो ! इस समय मुझे क्या करना उचित है ? शीघ्र आज्ञा प्रदान करें।

मनुष्य केवल हाड़-मांस का पुतला नहीं है वह क्रियात्मक संरचना है। उसकी नियति विशेष है। वह भी क्रम श्रृंखला कर एक अंश है, वह भूत और भविष्य के बीच स्थित वर्तमान है। जैविक संरचना की उत्पत्ति, जैविक गुण, दर्शन, आंतरिक एवं बाह्य वातावरण सभी कुछ मनुष्य की उपस्थिति का ही हिस्सा है। एकांगीपन मानव दिमाग की खोज है। कुछ भी एकांगी नहीं होता है, कुछ मिनटों के लिये वायु को हटा दीजिये तो फिर आपका जैविक शरीर सदा के लिए नष्ट हो जायेगा। तापमान में थोड़ा सा भी परिवर्तन आपको मोम की तरह पिघला कर रख देगा। सूर्य की थोड़ी सी भी हलचल पृथ्वी के अस्तित्व को समाप्त करने के लिये काफी है। एक धूमकेतु की टक्कर नये चंद्रमाओं का निर्माण कर देगी, वर्षों तक पृथ्वी के वातावरण को सूर्य से वंचित कर देगी। पृथ्वी के पथ में थोड़ा सा भी फेरबदल न जाने कैसा अस्तित्व उत्पन्न कर दे। इस प्रकार की अनेकों ब्रह्माण्डीय घटनायें आपके जीवन को प्रभावित करती है एवं समूची पृथ्वी का भूगोल बदलती रहती है तो वहीं मानव मस्तिष्क में लगे ज्ञान, बुद्धि और तर्क केंद्र के समिश्रण से निर्मित हुई मानव मशीने एवं अन्य विध्वंसात्मक युद्ध सामग्री जैविक सामग्री और अनेकों अनुसंधान भी आपकी दीर्घजीविता को परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। मनुष्य पशुओं के समान निम्न मस्तिष्कगामी तो नहीं है। उसका संचालन भावनाओं से अत्यधिक होता है। भावनाओं का समिश्रण उसे इस पृथ्वी का सबसे हिंसक एवं जहरीला या विषैली जैविक संरचना के रूप

में विकसित करता है। प्रकृति तो अपवाद स्वरूप विकलांगता देती है परन्तु 99 प्रतिशत मनुष्य युद्धों के द्वारा विकलांग होता है उसके द्वारा सम्पन्न अंधी विकास सम्बन्धी या फिर अन्य प्रक्रियाओं से जीवन में विकलांगता और मृत्यु का अकाल या अनअपेक्षित आगमन होता है। भावनायें क्रिया और प्रतिक्रिया का द्योतक है। अहमं, घमण्ड, ईर्ष्या, बलात ये सभी क्रियायें भावनाओं का ही प्रतीक है। भावनायें अच्छी भी हो सकती है एवं विनाशकारी भावनायें ही मनुष्य को भौतिक लिप्तता एवं अप्राकृतिक नियमों का पालन करने के लिये बाध्य करती है। इसके बाद आता है ज्ञान का कोश, ज्ञान अर्थात अर्जन की प्रक्रिया। अर्जित करने की यह प्रक्रिया मनुष्य के जीवन की 90 प्रतिशत ऊर्जा खा जाती हैं और अंत में ज्ञान जो कि मस्तिष्क में सीमा बंधित किया गया है एक बोझ बनकर रह जाता है। एकांगी जीवन अर्थात एक लक्ष्य को सर्वस्व मानकर अपने मस्तिष्क को कुन्ध कर लेना अधिकांशत: मनुष्यों की मुख्य समस्या है। इस तरह के मनुष्य प्रकृति विरुद्ध कार्य करते हैं। अनेकों भयानक युद्धों का संचालन करते हैं। अल्पकालीन स्वार्थ और लक्ष्य के लिये समूची मानव योनि को विनाश की कगार पर ढकेलते हैं, पथ भ्रष्ट करते हैं एवं ज्ञान का गंदा पाठ पढ़ाते हैं। गुलामी का कारण यही है। जब-जब आप महानायक की तलाश करेंगे। आपका पतन निश्चित है। महानायक के रूप में आपको ढोंगी, ठग और पथभ्रष्ट करने वाले तथाकथित नायक ही मिलेंगे जिनका एकमात्र उद्देश्य आपको सभी प्रकार की गुलामियों से आबद्ध करना होगा। जब-जब आप एक पुस्तक या ग्रंथ के हिसाब से जीवन को ढालने की कोशिश करेंगे आपको ईश्वर भी नहीं बचा पायेगा। एक व्यक्ति की पूजा एक व्यक्ति को सर्वस्व समर्पित करने की आकांक्षा आपको मानसिक विकलांगता के अलावा कुछ नहीं देगी। बुद्ध को पूजने वाली में से कितनों ने बुद्ध की ऊँचाई प्राप्त की। इसी प्रकार कितनों ने कृष्ण को समझा। जब-जब आप फोटों कापी बनने की कोशिश करेंगे आप सिर्फ अभिनेता बनकर रह जायेंगे। मैंने अपने जीवन में अनेकों धर्म के बड़े से बड़े महाराज, संत इत्यादि-इत्यादि को करीब से देखा है। वास्तविकता क्या है ? यह बताने की आवश्यकता नहीं है परन्तु उनसे तो कई गुना अच्छे सीधे-साधे और सामान्य जन होते हैं। यहाँ तक कि आध्यात्मिक स्तर भी उनसे कई गुना ज्यादा एक सामान्य जन का भी होता है।सामान्य जन का तात्पर्य उनसे है जो कि अपने जीवन के कर्तव्यों का निर्वाह करते हैं। सरल बने हुये है एवं निरंतर आत्म निरक्षण और आत्म चेतना को जागृत करने में लगे हैं। हर युग में या फिर हर समय इस पृथ्वी पर 9 दिव्य विभुतियाँ प्रकृति में हमेशा विद्यमान रहती हैं। इन 9 विभुतियों के अलावा दसवी दिव्य शक्ति प्रादुर्भाव में कदापि नहीं है। इस तरह के नौ महा-मस्तिष्कों में से अगर आप किसी एक से संप्रेषित हो जाते हैं तभी जाकर आपका जीवन दीर्घजीवी होगा।

वैज्ञानिकों के अनुसार दीर्घजीवी होने का तात्पर्य सौ या दो सौ वर्ष की आयु प्राप्त करना है यहाँ पर मात्र एक पक्ष का वर्णन है। जबकि असंख्य पक्षों का क्या, इसका कोई उत्तर नहीं है कल्पना करके देखिये किसी दुर्घटनावश कोई व्यक्ति कोमा में पहुँचकर अगर दस वर्षों तक वनस्पति के समान बिस्तर पर पड़ा रहे तो क्या कोई मनुष्य इस प्रकार की दीर्घजीविता चाहेगा। ऐसी आयु किस काम की जब दस वर्ष की उम्र में बच्चियाँ रजस्वला हो रही हैं। दस-दस वर्ष के बच्चों के बाल सफेद हो रहे हैं। तीस वर्ष की उम्र में ही हृदय की शल्य चिकित्सा करानी पढ़ रही है या फिर मधुमेह से ग्रसित होकर आधा अधूरा जीवन जीना पढ़ रहा है। वैज्ञानिक क्या चाहते हैं ? कौन सा ऐसा फार्मूला बनाना चाहते हैं जिसके द्वारा इस प्रकार का शरीर धारण किया व्यक्ति सौ या डेढ़ सौ वर्षों तक जिये। प्राकृतिक संतुलन की व्यवस्था क्या इस प्रकार से नष्ट नहीं हो जायेगी। योगी या सद्गुरु में इतनी ताकत होती है कि वह प्रकृति में हस्तक्षेप कर सके परन्तु इस प्रकार के ब्रह्मास्त्र का उपयोग सामान्य तरीके से कदापि नहीं किया जाता। मानव से जुड़ी हुई असंख्य तत्व, आवृत्ति, असंख्य स्थितियाँ सभी परिवर्तन कारी हैं। सभी के अंदर एक विशेष कोड है जिसके द्वारा एक विशेष समय पर पूर्ण परिवर्तन या जिसे आप मृत्यु कहते हैं निश्चित है। मृत्यु अल्प परिवर्तनों की असंख्य कड़ियों का ही केंद्र बिंदु या परिणाम हैं। मृत्यु एकदम से नहीं आती। यह श्रृंखलाबद्ध श्रेणियों के बाद ही उपस्थित होती है। आप जन्म लेते हैं युवा होते हैं वृद्धावस्था

को धारण करते हैं धीरे-धीरे प्रत्येक कोशिका, अंग-प्रत्यंग पकते हैं तब जाकर मस्तिष्क भी पकता है और अंत में फल के समान टूटकर प्राण मस्तिष्क या शरीर को छोड़ देता है। गीता में, ऋग्वेद में या अन्य उपनिषदों में कृष्ण या उनके समकक्ष या उनसे भी आगे के चक्रों में पहुँचे महामानवों ने यही कहा है कि मृत्यु कुछ नहीं होती। आत्मा तो अजर अमर है। बस परिवर्तन होता रहता है। पंचभूतों से निर्मित प्रत्येक वस्तु अपना स्वरूप बदलती है। विभिन्न-विभिन्न स्थितियों में भिन्न-भिन्न आकृतियों का निर्माण होता है। इसी पृथ्वी पर कार्बन, हीरे में भी परिवर्तित होता है अनेक प्रकार के रत्नों, उपरत्नों में भी तो वहीं कोयला का भी या फिर ज्वलनशील तरल पदार्थ के रूप में दिखाई पड़ता है। कारण परिस्थितियों की भिन्नता है। अब सवाल उठता है कि किस प्रकार समय से परे और आयु से परे मस्तिष्क का निर्माण करें। हाँ यह प्रक्रिया मस्तिष्क के अंदर सम्पन्न की जा सकती है। इसके लिये किसी विशेष रसायन की जरूरत हो भी सकती है और नहीं भी। बेहतर होगा कि रसायन अंदर ही उत्पन्न हो अंदर कैसे उत्पन्न होगा इसके लिये कर्म और क्रिया के सिद्धांत को भी समझना होगा। पीछे पलटकर कुछ पीढ़ियों तक स्वयं के अस्तित्व के दर्शन करने होंगे। अनेकों गुप्त यौगिक क्रियाओं को सम्पन्न करना होगा और इसके साथ-साथ दिमाग को बंधन मुक्त करना होगा। मस्तिष्क में लगे एक-एक यंत्र तक पकड़ बनानी होगी और इसके अलावा बहुत कुछ और भी करना होगा साथ ही सबसे महत्वपूर्ण ईश्वर कृपा या गुरुकृपा की प्रथम आवश्यकता होगी। ईश्वर और गुरु में भेद नहीं है। भेद की स्थिति मस्तिष्क के निम्न वर्गों की सोच है। वास्तव में भेद जैसी कोई स्थिति नहीं होती है। आपमें और चन्द्रमा में क्या भेद है क्या अलग-अलग है। चन्द्रमा से निकलने वाली रोशनियाँ आपके सम्पूर्ण शरीर के साथ-साथ आपके मस्तिष्क के विशेष चंद्र केंद्रों को क्रियाशील करती है यह केंद्र आपको विशेष अनुभूति करायेगा एवं विशेष रसायन का उत्सर्जन करेगा। क्यों हर मनुष्य चन्द्रमा को देखते हैं ठण्ड महसूस करने लगता है। क्यों पृथ्वी का जल उछाले मारने लगता है। समझने का विषय है। जबकि चन्द्रमा कोई बर्फ की सिल्ली नहीं है। सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि शुतुरमुर्ग के समान सिर रेत में घुसा लेने से मरुस्थल में उठने वाले तूफान की सच्चाई नहीं बदल जायेगी। चार ग्रंथ पढ़ लेने या डिगरियाँ लेने से अगर आप समझते हैं कि आप ज्ञानवान हो गये तो फिर ज्ञान की असीम सम्भावनायें समाप्त हो गयीं। किसी नोबल पुरस्कार प्राप्त जीव विज्ञानी को जब पुरस्कार प्राप्ति के लिये जाना पड़ा तो वह शर्म से गढ़ा जा रहा था उसकी अंतरआत्मा बार-बार यही कह रही थी मैंने ऐसा क्या खोज लिया जिससे कि मैं पूजा जाऊँ। जहाँ आपने सीमा तय कर दी चाहे वह कोई सा भी क्षेत्र हो वहीं दीर्घता खत्म और मृत्यु प्रारम्भ। मनुष्य की शारीरिक मृत्यु से पहले उसके ज्ञान की मृत्यु न हो, उसकी सोच की मृत्यु न हो, आध्यात्मिक स्तर पर वह मृत न हो जाये इत्यादि-इत्यादि सोचने के विषय हैं। जिनमें निरंतरता बनी हुई हो वही मृत्यु को भगा सकता है। जहाँ पकना प्रारम्भ हुआ तो फिर टपकने के अलावा और कुछ नहीं होगा हमारे ऋषि मुनि अत्यंत ही सूक्ष्म दृष्टा थे और हैं उन्होंने सभी ईष्ट और देवताओं के उपासना केन्द्रों को अत्यंत ही ऊँची चोटी पर स्थापित किया क्योंकि वे जानते थे कि सामान्य जन सीधी तरह से नहीं समझ सकता। उसे तो बस गधे के समान ढोने की आदत पड़ी हुई है चाहे वह विचार हो, तथाकथित धर्म के लेबल, जात, घटिया मानवीय सम्बन्ध एवं अन्य भौतिक और मानसिक संयोजन। जब आप पहाड़ की चोटी पर चढ़ेंगे तब आपको सारे वजन उठाकर फेंकने होंगे नहीं तो सांस फूलने लगेगी। चिंताग्रस्त एवं मानसिक रूप से बोझिल मनुष्य को पहाड़ चढ़ने में अत्यधिक कष्ट होता है इसके साथ ही सौ तौला सोना या फिर सूट पहनकर भी पहाड़ पर नहीं चढ़ सकते हैं। यह सब कुछ एक तरफ रखकर जब आप चढ़ाई चढ़ेंगे तब कहीं जाकर आपको देव दर्शन उपलब्ध होंगे। पेड़ में लगा फल जिस शाखा से जुड़ा होता है उसके अंतिम हिस्से में जैविक संरचना इतनी सटीक होती है कि वह वजन के हिसाब से कार्य करती है जैसे ही फल पकता है। वजन बढ़ जाता है और शाखा का वह सिरा फल को नीचे टपका देता है। जीवन सीधी रेखा नहीं है। जब सभी कुछ वृत्ताकार आवृत्ति लिये हो और वृत्ताकार आवृत्ति में ही एक दूसरे के पीछे घूम रहें हैं तो फिर जीवन कैसे सीधी रेखा हो। जब आप पैदा होते हैं तब कुछ वर्ष या एकाध वर्ष तक आपका मस्तिष्क इतना विकसित ही नहीं होता कि वह अंग प्रत्यंगों का सही ढंग से

संचालन कर सके और वृद्धावस्था में ही यही स्थिति निर्मित हो जाती है। आपकी यौन क्षमता भी कितने वर्षों की है। 40-50 साल में तो स्त्रियाँ रजोनिवृत्त हो जाती हैं। इसके अलावा सक्रिय यौन ऊर्जा तो मात्र 10 वर्षों की होती है परन्तु इसका मतलब यह भी नहीं है कि इसे बढ़ाया नहीं जा सकता है। बढ़ाया जा सकता है परन्तु उसके लिये मस्तिष्क में उपस्थित अन्य ऊर्जा केंद्रों को परिवर्तित करना होता है। कहीं न कहीं से तो पूर्ति करनी होगी ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हृदय की धमनियाँ सिकुड़ जाने पर शल्य चिकित्सा अन्य नसों के द्वारा रक्त की आपूर्ति को निर्धारित करते हैं परन्तु इसके दुष्परिणाम हैं।

60 या 80 वर्षों की आयु सीमा में कितने क्रियाशील वर्ष यही मुख्य रूप से जीवन की गुणवत्ता को निर्धारित करते हैं। कई पशु तो बूढ़े ही नहीं होते हैं उनकी वृद्धावस्था मात्र कुछ महीनों की होती है इसके पश्चात् वे मर जाते हैं। कुत्ते अगर 2 वर्ष में युवा होतें हैं तो फिर अपनी 12 वर्ष की आयु में 9 वर्ष तक युवा रहते हैं मात्र एक वर्ष ही वृद्धावस्था का रहता है। जीवन तो कई प्रकार के हैं। कई जंतु तो संतान उत्पन्न करने को एक क्षण पश्चात् ही शरीर त्याग देते हैं। आक्टोपस एवं समुद्री घोड़ा ऐसा ही करते हैं। शेर वर्ष में एक बार ही संतान उत्पन्न करता है। शक्ति का प्रतीक है। वहीं खरगोश जैसे अति कोमल प्राणी भी हैं जो हमेशा संतान उत्पन्न करते रहते हैं अगर हमेशा प्रजनन करेंगे तो फिर अन्य शक्तियों का तो विलोप निश्चित है सिंह के समान कहाँ शक्तिशाली हो पायेंगे। कौआ सम्पूर्ण जीवन में एक बार ही संतान उत्पन्न करता है एवं संतान के साथ-साथ मादा का गर्भाशय भी सदा के लिये खत्म हो जाता है और लगभग 100 वर्षों तक कौआ जीवित रहता है। अब आप बतायें। ऐसे कितने मनुष्य हैं जो 100 वर्षों तक जीना चाहेंगे और वह भी बिना काम क्रिया के यह भी तो वैज्ञानिकों को सोचना पड़ेगा। सीधी सी बात है सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड शक्तिमय है प्रत्येक तत्व में शक्ति विशेष का वास है प्रत्येक बीज शक्ति विशेष का केंद्र है। हमारा अपना शरीर अनेकों शक्ति बीजों से सुसज्जित है। मस्तिष्क सिर्फ शक्ति बीजों का एक समूह है। उसे मांस का लोथड़ा समझना निरिमूर्खता है। ब्रह्माण्ड में उपस्थित प्रत्येक शक्ति का बीज मस्तिष्क में उपस्थित है। जैसे ही बीज अंकुरित होगा शक्ति का प्रसारण प्रारम्भ हो जायेगा प्रत्येक बीज को क्रियाशील बनाने के लिये विभिन्न क्रियाओं की आवश्यकता होगी। इन्हीं अंकुरित बीजों से रसायन की उत्पत्ति होगी जो कि शरीर के कार्य विशेष को संचालित करेंगे। आपके अंदर आज के युग में काम रूपी बीज का आज के वातावरण के हिसाब से मस्तिष्क के अंदर शीघ्र ही विकास होता है जिसके कारण बाल्यावस्था में जिस समय अन्य बीजों का विकास होना चाहिये मस्तिष्क की सारी उर्वरक क्षमता काम क्रियाओं में ही व्यर्थ हो जाती है। जिसके फलस्वरूप अनेकों बीज अविकसित हो जाते हैं। वैज्ञानिक भाषा में इन्हें मस्तिष्क कोशिका या न्यूरोंस कह सकते हैं। अब थोड़ा और आगे बढ़े ठीक है चलिये मस्तिष्क के अंदर यौन बीज अंकुरित होकर आकार लेने लगा परन्तु फिर आपकी सामाजिक व्यवस्था आड़े आ गई आपकी यौन क्रियायें प्रतिबंधित हो गई अब तो भगवान ही मालिक है। इस केंद्र से उत्पन्न ऊर्जा न तो बाहर निकल पा रही है और अंदर ही तीव्रता से इकट्ठी होती जा रही है सम्पूर्ण शरीर एक प्रेशर कुकर के समान बनकर रह जाता है सारे मस्तिष्कीय बीज उसमें उबलकर सत्यानाश हो जायेंगे। उबले हुये चने से खेती नहीं हो सकती क्या वैज्ञानिक इसके लिये किस प्रकार की गोली का उपयोग करेंगे। गोली, केप्सूल, इंजेक्शन, सीरप, टॉनिक इस सत्यानाशी व्यवस्था में मनुष्यों का कितना कल्याण किया यह सर्वविदित है। सम्पूर्ण शरीर या सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक पारदर्शी व्यवस्था लिये हुये है। इसमें अस्तित्व के लिये अंशात्मक फर्क हो सकता है। उदाहरण के लिये एक्स किरणें आपकी अस्थियों को छोड़कर शरीर के अन्य भागों से निकल जाती है परन्तु ऐसी भी किरणें हैं जो अस्थियों को भी भेदती हैं। जब-जब पारदर्शिता का यह सिद्धांत अप्राकृतिक कृत्यों से बाधित होता है। मनुष्य का जीवन विनाश की तरफ अग्रसर होने लगता है। श्वास अंदर जा रही है और आ रही है परन्तु अंदर जाय दूषित होकर और बाहर निकले दूषित होकर तो फिर फेफड़ों का जीवन तो कम होगा ही। 10 घण्टे आँख को किसी चलचित्र के सामने गढ़ायें रखने से तो आँखें कमजोर होगी। 24 घण्टे यौन इच्छा से ग्रसित रहना और यौन

आकांक्षाओं की रत्ती भर भी पूर्ति न होना आपकी उम्र को घटायेगा ही। ऐसे दड़बों में बंद रहना जहाँ खिड़की ही न हो, चारों तरफ काँच लगा लेना मृत्यु को बुलावा देना है मटके का पानी बीस दिन तक स्वच्छ रह सकता है परन्तु टीन के डब्बे में या फिर प्लास्टिक की बोतल में रखा पानी 2 दिन भी शुद्ध नहीं रहता। कहने का तात्पर्य यह है कि जहाँ निरंतरता को आपने रोका सड़ान्ध आना शुरू हो जायेगी चाहे वह मानसिक स्तर हो, आध्यात्मिक स्तर हो या फिर भौतिक स्तर हो। आध्यात्मिकता सोचने का स्तर नहीं है न ही पुस्तक पढ़ने से कोई आध्यात्मिक हो जाता है। यह तो शाश्वत् सत्य की तरफ अग्रसर होने की गुणात्मक जीवन शैली है। सिद्धियों का बोझ आध्यात्मिकता के रास्ते में मुख्य बाधा है। इसी के कारण आधिकांशत: सिद्ध पुरुष भी छठवें चक्र तक पहुँचकर ही रुक जाते हैं सातवाँ चक्र तो केवल मौन का है। अत्यंत ही परमशांतिमय मौन, इस मौन को शब्दों में व्याख्या नहीं करना चाहता आपके प्रत्येक यंत्र की आयु निश्चित है चाहे वह श्रवण यंत्र हो, चलन यंत्र हो, दृश्य यंत्र हो या पाचन यंत्र हो। जितनी श्वासें निश्चित् हैं उससे एक श्वास भी ज्यादा हृदय नहीं ले सकता। यह स्वयं नष्ट होने की प्रक्रिया ही तो ईश्वर का दिव्य स्वरूप है। पंचभूतों से निर्मित शरीर पंचभूतों के संसर्ग में पवित्र शुद्ध एवं दीर्घजीवी होगा। आपके शरीर से आने वाली दुर्गन्ध महकते रसायनों के बाहरी आवरण से नहीं समाप्त होगी उसे समाप्त करना है तो वस्त्र उतारकर स्वच्छ हवा में घूमिये, स्वच्छ जल में डुबकी लगाइये। सूर्य की किरणों से शरीर को आभामण्डित कीजिये। पशु साल में एक बार ही नहाते हैं। कस्तूरी मृग तो हिमालय की वादियों में पाया जाता है जहाँ नहाने के लिये जलाशय ही नहीं होते फिर भी वह दिव्य गंध उत्पन्न करता है। मरुस्थल में आने वाले पौधे या फल सामान्य भूमि पर आे पौधों से ज्यादा रसीले होते हैं उनमें ताकत होती है पृथ्वी से ग्रहण करने की। शहर में रहने वाले मनुष्य दुर्गन्ध की समस्या से ज्यादा ग्रसित रहते हैं क्योंकि जितनी भूमि पर दस मनुष्यों को निवास करना चाहिये उतनी भूमि पर दस हजार मनुष्य रहते हैं इसलिये तो हवा, पानी के साथ-साथ सूर्य की रोशनी भी कम पड़ जाती है ऐसी स्थिति में दीर्घजीविता कहाँ से होगी। वैज्ञानिक इससे ज्यादा तो कुछ सोचते नहीं तुरंत ही हवा पानी और सूर्य की रोशनी के लिये केप्सूल बनाने लग जाते हैं। कैप्सूल या गोली नकल है जैविक बीजों का परन्तु जब मस्तिष्क रूपी असंख्य बीजों से संयोजित एक अति विलक्षण संरचना हमारे पास मौजूद हैं तो फिर हम क्यों न उसे ही पूर्ण रूप से विकसित करें। प्रत्येक ऊर्जा केन्द्र को समझें एवं उसे संचालित करें। आखिरकार क्या करेंगे हम इसे बचाकर ईश्वर या सृष्टि तो बस यही देखती है कि कौन मनुष्य मेरे द्वारा प्रदत्त इन बीजों को अपने जीवनकाल में विकसित कर रहा है। यही फर्क अमृतपुत्र और सामान्य जन के बीच होता है। अमृत पुत्र बेवकूफों के समान इधर-उधर भटकते नहीं हैं वे जानते हैं कि सब कुछ उनके अंदर मौजूद है एक से एक संयंत्र, कारखाने, मस्तिष्क में ही उपलब्ध है ऊर्जा के अनेकों दिव्य और गुप्त स्थान मस्तिष्क में ही उपलब्ध हैं उन्हीं का अनुसंधान करके वे अमृत्व को प्राप्त करते हैं एवं कृष्ण, बुद्ध, राम इत्यादि-इत्यादि की श्रेणियों में पहुँचकर अनंत वर्षों तक अमर हो जाते हैं।

मस्तिष्क के अंदर समायोजन कुछ इस प्रकार से है कि एक शक्ति क्रियाशील होती है तो फिर दूसरी शक्ति सुप्त रहती है। उदाहरण के लिये आप क्रोध एवं विवेक एक साथ क्रियाशील नहीं कर सकते। जन्म के समय बालक में बाह्य संप्रेषण अत्यंत ही न्यून होता है परन्तु उसके द्वारा संप्रेषित मानसिक शक्ति से माता या उसके अभिभावक उसकी जरूरत को अच्छी तरह समझ जाता है। हम सब अपनी गर्भावस्था में नाभि के द्वारा पोषण प्राप्त करते हैं परन्तु क्या युवावस्था में हम इस बारे में कभी सोचते हैं। नौ महीने तक हम गर्भ में सिकुड़े हुये पड़े रहते हैं। इस समय भी तो हमारा मस्तिष्क चैतन्य होता है और उसमें लगे केन्द्र किस प्रकार से कार्य करते हैं यह सोचने का विषय है। मस्तिष्क की क्रियाशीलता मनुष्य की दीर्घजीवी होने का प्रमुख कारण है। सर्वप्रथम गर्भ में मस्तिष्क ही विकसित होता है यहाँ तक कि पुरुष वीर्य में मौजूद शुक्र कीटों में भी मस्तिष्क ही अधिक विकसित दिखाई देता है। शरीर के सम्पूर्ण अंग मस्तिष्कके द्वारा उत्पन्न किये जाते हैं एवं जीवन भर जो कुछ भी हम अंगों से अर्जित करते हैं वह विभिन्न रूप से मस्तिष्क के अंदर जाकर ही एकत्रित होता है। ग्रहण और निष्कासन प्रक्रिया को मस्तिष्क

क्रियाशील बनाने में मुख्य भूमिका निभाती है। आप पढ़ते ही रहें और उसे किसी अन्य माध्यम से क्रियान्वयन न करें तो मस्तिष्क कुंध हो जायेगा । पानी पियेंगे तो उसे विभिन्न रोमछिद्रों और मूत्र संस्थान से निकालना ही पड़ेगा। अन्यथा अंदर विस्फोट हो जायेगा। वैसे तो मस्तिष्क में बीजों के साथ-साथ अनेकों उपबीज होते हैं। उपबीज अर्थात वो शक्तियाँ जो मस्तिष्क के ऊपर भी नियंत्रण रखती है उसकी देखरेख भी करती है, उसकी साफ-सफाई करती है, उसे ऊर्जा प्रदान करती है परन्तु यह सब कुछ संतुलन की अवस्था या सामान्य परिस्थिति में ही सम्भव होता है। आप तो दिन भर क्षमता से ज्यादा कार्य करते रहते हैं। अंधानुकरण की प्रवृत्ति सब समस्याओं की जड़ है। इसलिये आजकल जिसे देखो वह ध्यान, योग और अध्यात्म की तरफ भाग रहा है। इन सहज प्रक्रियाओं का बाजार इतना गर्म हो गया है कि ये भी मंहगी बाजारु सभ्यता का अंश बन गई है कारण इन क्रियाओं से या पद्धतियों से निष्कासन की प्रक्रिया अत्यंत ही तीव्र हो जाती है। वर्षों से जमा मैल कुछ ही दिनों में साफ हो जाता है परन्तु मैल साफ करने के साथ-साथ मैल को न बनने देने की प्रक्रिया भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। वास्तविक ध्यान या योग प्रणाली दूसरे पहलू पर अधिक महत्व देती है। मस्तिष्क की गुणवत्ता उसके आसपास की गुणवत्ता पर काफी हद तक निर्भर होती है। एक गुणवान और वैदिक मस्तिष्क का निर्माण तभी सम्भव है जब व्यक्ति विशेष गुणवान मस्तिष्कों से संप्रेषित होता है अर्थात गुरु से दीक्षा प्राप्त करता है। उनके सानिध्य में विकसित होता है। उनसे प्रवचन के माध्यम से, सतसंग के माध्यम से दिव्य उर्वरक शक्ति को प्राप्त करता है। यह शाश्वत् नियम है कि मस्तिष्क, मस्तिष्क से सबसे ज्यादा संप्रेषित होता रहता है अर्थात एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से ही अन्य माध्यमों की अपेक्षा ज्यादा ग्रहण करने का सामर्थ रखता है। जिस परिवार में दस स्त्रियाँ हों एवं एक पुरुष तो फिर पुरुष के हाव भाव तो निश्चित तौर पर स्त्रियोचित्त हो होंगे। ठीक इसी प्रकार अगर युवाओं के बीच रहोगे तो ज्यादा दिन तक युवा रहोगे। इसके विपरीत सड़े-गले और कुन्द दिमाग वालों के बीच रहोगे तो फिर विकास अत्यंत ही कठिन होगा।

सम्पूर्ण कौम की कौम नष्ट हो जाती है। सौ साल पिछड़ जाती है क्योंकि उसका संचालन तथाकथित कट्टर एवं निम्न सोच वाले व्यक्ति करते हैं। देश के देश उजड़ जाते हैं, समूचा देश विश्व से कट जाता है, सारी आजादी नष्ट हो जाती है क्योंकि धर्म के ठेकेदार अपने सड़े-गले मस्तिष्क से संचालन करते हैं। ठीक इसके विपरीत ऐसे भी महापुरुष होते हैं जो कि एक निम्न आवृत्ति वाले मनुष्य को भी इतना विकसित कर देते हैं कि वह सर्वश्रेष्ठ लगने लगता है। अपने अंदर मौजूद समस्त शक्तियों का संचालन एवं प्रबंधन दीर्घजीविता का मुख्य स्तम्भ है। आप अपनी ऊर्जा को पहचाने उसे व्यर्थ न करें। दूसरों के द्वारा अपनी ऊर्जा का शोषण न होने दें, व्यर्थ के सम्बन्धों को उतारकर फेंक दें अन्यथा बुढ़ापा सामने खड़ा दिखाई देगा। शक्तिहीन व्यक्ति की कहीं भी पूछ परख नहीं होती। यह संसार 99 प्रतिशत लेन-देन के व्यवहार पर चलता है और लेन-देन का व्यवहार ऊर्जा प्रबंधन की अति निपुणता पर ही सफल हो सकता है। इस संसार में मनुष्य के रूप में अति विकसित शक्ति स्वरूप स्त्री-पुरुषों का अस्तित्व ही सदैव बना रहता है ये वट वृक्ष के समान आपको असीम ऊर्जा प्रदान करते हैं। ऐसी दिव्य ऊर्जा जिसके द्वारा आप 10 वर्ष का घाटा भी पर पाट सकते हैं। इन्हें ही ऋषि, सदगुरु कहा जाता है। अब एक बात से आपको सावधान कर देता हूँ वह है शक्ति चोरों से। शक्ति चोर आपकी पत्नी भी हो सकती है, पुत्र भी, माता-पिता भी या मित्र भी इत्यादि-इत्यादि। परजीवी ही शक्ति चोर कहलाते हैं। जिस प्रकार परजीवी लतायें एक हरे भरे वृक्ष को भी चूस डालती हैं उसी प्रकार परजीवी सम्बन्ध भी धीरे-धीरे आपकी सारी ऊर्जा को चूसकर आपको काठ बनाकर रख देगें बात कड़वी परन्तु आप हृदय से सोचकर देखिये। इसके साथ ही शक्ति केन्द्र पर आपका आवागमन आपको नवस्फूर्ति प्रदान करेगा।

मैं नाईट क्लब या चलचित्र घरों की बात नहीं कर रहा हूँ। शक्ति केन्द्र का तात्पर्य हमारी सनातन पद्धति में उन दिव्य और पवित्र स्थानों से है जिन्हें आप ज्योतिर्लिङ्ग, देवी पीठ एवं तीर्थधाम इत्यादि के नाम से जानते हैं। इनके अलावा जहाँ पर प्रकृति स्वच्छंद रूप से विकसित हो रही है वहीं नैसर्गिक

शक्तिपीठ होते हैं। यह अत्यंत ही गूढ़ रहस्य हैं। इसके साथ ही अब बारी आती है अनुवांशिकता की। अनुवांशिकता अर्थात वंश वृक्ष। अति महत्वपूर्ण विषय आपको सावधान रहना होगा कहीं आप अभिशप्त परिवार से सम्बन्ध स्थापित न कर लें ऐसे परिवार से सम्बन्ध स्थापित न करें, ऐसे परिवार से जहाँ पीढ़ियों से रोग अवसाद और अभिशप्तता ने डेरा जमाया हुआ है परन्तु फिर भी किसी ने उसे समझने या दूर करने की कोशिश नहीं की है। उदाहरण के लिये एक सच्ची घटना आपको बताना चाहता हूँ, एक ऐसा परिवार जहाँ की स्त्रियाँ अत्यंत ही उग्र एवं कलुषित मानसिकता लिये हुये है। इस परिवार में जिस भी पुरुष के सम्बन्ध स्थापित होते हैं वह कुछ ही वर्षों में इन स्त्रियों के क्रियाकलापों के द्वारा अत्यंत ही मानसिक तनाव में आ जाता है या फिर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। पूरा का पूरा परिवार दुष्ट कर्मों का एक पिटारा है। कुटिलता एवं अभिशप्तता भी एक व्यवस्था में ही कार्य करती है। अगर इस व्यवस्था के चक्रव्यूह में आप फँसते हैं तो जीवन निश्चित ही अल्प होगा। हम मनुष्यों में ईश्वर या सृष्टि को कोसने या अपशब्द बोलने की एक बीमारी है एक बात आप अच्छी तरह से समझ लें ईश्वर किसी को दण्ड नहीं देता है और न ही पारीतोषिक। सृष्टि केवल व्यवस्थाओं का निर्माण करती है क्योंकि स्वयं सृष्टि भी एक अति परिष्कृत व्यवस्था ही है। इसी व्यवस्था में फल और प्रतिफल निहित होते हैं। सबसे बड़ी समस्या मानव निर्मित शब्द कोष के कारण उत्पन्न हुई है जिसे आपके शब्द कोष में बीमारी कहते हैं, अवरोध कहते हैं या दरिद्रता कहते हैं या ठीक इसके विपरीत ऐश्वर्य, यश, सुदर्शनता कहते हैं सब के सब व्यवस्था के फल हैं ईश्वर द्वारा रचित व्यवस्था के। आप रोज मदिरा का सेवन कीजिये ईश्वर आपको कभी नहीं रोकेगा परन्तु व्यवस्था अनुकूल फल आपको अवश्य प्राप्त होगा चाहे वह रोग के रूप में हो या अन्य नकारात्मक स्थिति के रूप में। ईश्वर तो केवल बीज रूपी शक्ति आपको प्रदान करता है और यही बीज एक विशेष व्यवस्था को अपने अंदर समाये हुए रहता है। आम का वृक्ष घर में रोपेंगे तो आम ही उत्पन्न होगे। उसमें अमरूद नहीं लगेगे। जिस कर्मों की श्रृंखला का आप संचालन करेंगे वही आगे चलकर फल के रूप में आपको प्राप्त होगी। फल अर्थात बीज को अपने अंदर समाये हुये एक संरचना। अगर आपको फल के रूप में प्राप्त हो रहा है तो सीधा सा तात्पर्य है कि आप भी दुख रूपी बीज को ही रोपेंगे परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि व्यवस्थाओं के चक्र से मुक्त नहीं हो सकता। ईश्वर ने प्रत्येक व्यवस्था से निकलने के हजारों रास्ते भी बनाये हैं। कभी भी उसने मनुष्य के साथ कपट नहीं किया है। मनुष्य ने बुद्धि मांगी तो बुद्धि का विकास हो गया। अध्यात्म मांगा तो निर्वाण भी प्राप्त हुआ है, जन्म चक्र से मुक्ति के भी मार्ग हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आप किस चक्र में प्रवेश करना चाहते है। किस चक्र में आप कैसे हुये हैं। यह भी आपको ही समझना होगा। अन्यथा चक्र तो आपको शक्तिहीन बना ही देंगे। अपशब्द कहने से और कोसने से या फिर बैठकर अपनी किस्मत पर रोने से न तो कोई आज तक व्यवस्थाओं से मुक्त हुआ है और न ही होगा। सभी मनुष्यों के ऊपर दस किलो का सिर लगा हुआ है। दो सिर वाले तो इस पृथ्वी पर जीवित ही नहीं रह सकते। यह दस किलो का मस्तिष्क अनंत का पिटारा है इसमें से जो चाहो निकाल लो आपकी मर्जी। इसी के अंदर व्यवस्थाओं से भी मुक्त होने की व्यवस्था है। आप अनुसंधान करके तो देखें। यहाँ पर मैं अनुसंधान अर्थात शल्य चिकित्सा की बात नहीं कर रहा हूँ।

कहने का तात्पर्य उन क्रियाओं और कर्मों से है जिसके द्वारा कुछ क्षण के लिये रुककर आप आत्म विवेचन तो कर सकें। आत्म निरीक्षण और आत्म विवेचन क्षणों के सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग में ही सम्पन्न होते हैं। यही परिवर्तन काल कहलाते हैं। इन्हीं परिवर्तन कालों में जन्म होता है और मृत्यु भी। जन्म का तात्पर्य एक व्यवस्था को छोड़ने से है तो मृत्यु का तात्पर्य उस स्थिति से है जिससे आप पीछा छुड़ाना चाहते हैं। जन्म और मृत्यु प्रतिक्षण का विषय है। इस ब्रह्माण्ड में प्रतिक्षण शरीर रूपी मृत्यु भी होती है तो वहीं मानसिक मृत्यु भी प्रतिक्षण होती है। आप कल्पना करके देखें एक व्यक्ति समस्त दुखों से, अभावों से एवं व्याधियों से ग्रसित हैं और उसे वैज्ञानिक ऐसी औषधि पिला देते हैं जिससे शारीरिक आयु कुछ काल के लिये बढ़ जाती है इससे क्या होगा। वह व्यक्ति कुछ समय और कष्टों को भोगेगा, रोगों के कारण पीड़ादायक स्थिति में निवास करेगा। ऐसी कई

औषधियाँ हैं जिनसे कि कैंसर जैसी बीमारी से ग्रसित व्यक्ति एक इंजेक्शन लेने के पश्चात् चार घण्टे और जी लेता है। वह भी बिस्तर पर पड़ा-पड़ा अथाह वेदना को झेलते हुये। दो चार, दस इंजेक्शन लगा देने से तीन चार दिन के लिये जीवन और बढ़ जाता है परन्तु यहाँ पर जीवन का तात्पर्य अथाह वेदना को चार दिन और भोगने से है। इस प्रकार की औषधि किस काम की। एक तरह से तो यह मनुष्य के द्वारा मनुष्य को दण्ड देने का ही खेल है। मस्तिष्क तो एक दिन विसर्जित हो ही जायेगा। पूर्ण विसर्जन ही पूर्ण जीवन का रहस्य है। मुक्ति और मोक्ष का तात्पर्य ही विसर्जन है। अर्थात अपनी समस्त शारीरकि, मानसिक, भौतिक, आध्यात्मिक और भी अन्य प्रकार की ऊर्जाओं को अपने जीवन काल में कर्मों के द्वारा स्वयं ही विसर्जित कर देना है। अंतिम क्षण तक विसर्जित करने की प्रक्रिया व्यक्ति को अमृत्व प्रदान करती है। विसर्जन में वापसी का कोई स्थान नहीं होता है जिस प्रकार अनंत काल से सूर्य अपनी समस्त ऊर्जा विसर्जित कर रहा है और सभी पिण्ड जैविक संरचनायें इत्यादि उसे ग्रहण कर रहे हैं परन्तु क्या कोई भी पिण्ड या जैविक संरचना सूर्य को उसकी ऊर्जा वापस प्रदान कर सकती है या लौटा सकती है। कदापि नहीं। उसका ध्येय ही विसर्जन करना है। कहीं भी कोई प्राप्ति की मानसिकता नहीं। अब आप बतायें सूर्य को न तो आप उससे प्राप्त ऊर्जा लौटा सकते हैं न ही वायु से प्राप्त श्वासों को वापस कर सकते हैं तो फिर आप कैसे इनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करेंगें। इसी सब बातों को ध्यान में रखकर वैदिक ऋषियों ने स्तुतिगान एवं अन्य वैदिक पूजा पद्धतियों का निर्माण किया जिससे कि मनुष्य के अंदर निर्मलता बनी रहे। उसमें और प्रकृति के बीच एक सामन्जस्य और सहजीविता का विकास हो सके सहजीविता और सामन्जस्य ही लम्बी आयु का सिद्ध कुञ्जिका स्त्रोत है। आप एकांगी तौर पर क्षण भर भी जीवित नहीं रह सकते सभी तत्वों के साथ आपका सामन्जस्य ही आपको दीर्घ एवं सफल जीवन प्रदान कर सकता है। चलो सूर्य की ऊर्जा तो वापस नहीं कर सकते परन्तु कम से कम उसे नमन ही कर लें उसके प्रति हृदय से एक क्षण के लिये कृतज्ञता के भाव तो पूर्ण समर्पण के साथ प्रकट करें। अन्यथा हमारा शरीर संधि स्थल के स्थान पर युद्ध स्थल में परिवर्तित हो जायेगा। एक ऐसा युद्ध स्थल जहाँ पर सूर्य की किरणें अमृतमयी न होकर विनाश का कारण बन जायेंगी। त्वचा रोग से ग्रसित व्यक्तियों में सूर्य के प्रति सामंजस्यता अत्यंत ही न्यून होती है। यही विकास वाद है। विकासवाद का तात्पर्य उस स्थिति से जिस स्थिति में हम आवश्यक शक्ति को ग्रहण कर सकते हैं। अगर ध्वनि की तरंगें सीधे मस्तिष्क में प्रवाहित कर दी जाये तो एक क्षण में ही मस्तिष्क फट जायेगा परन्तु जब वे कानों के माध्यम से मस्तिष्क तक पहुँचती हैं तो वह मस्तिष्क के लिये अति उपयोगी सिद्ध होती है। ठीक इसी प्रकार अगर आप अंतरिक्ष में एक क्षण के लिये भी सूर्य किरणों के सामने पड़ जायेंगे तो सम्पूर्ण शरीर ही जल जायेगा।

कहने का तात्पर्य यह है कि दीर्घजीविता सभी तत्वों एवं जीवों में उनके विकास पर ही निर्भर करती है। जिस तत्व की जितनी जरूरत हो, जिस स्वरूप में उन्हें ग्रहण करना हो उतना ही उन्हें ग्रहण किया जाय अन्यथा फायदा कम नुकसान ज्यादा होगा। निचले धरातल पर इसे आप लिप्तता की संज्ञा प्रदान कर सकते हैं। लिप्तता ही संचय को जन्म देती है। संचय ही अल्प जीवन का प्रतीक है। जहाँ पर संचय होगा वहाँ जीवन भी अल्पकालीन होगा। वर्षा के जल से भरे बादल कितने समय तक ठहर सकते हैं। कहीं न कहीं तो उन्हें बरसना ही पड़ेगा। ज्यादातर लोग अत्यधिक भोजन करने से ही मरते हैं। इस पृथ्वी पर अल्प भोजन से मरने वालों की संख्या अगर एक दिन में दस होती है तो वहीं अति भोजन से स्वर्ग सिधारने वालों की संख्या लाखों में होती है यही अनुपात है। संचय की प्रवृत्ति ही लोभ, युद्ध जैसी मानवीय विडम्बनाओं को जन्म देती है। आपने ब्रह्माण्ड के सभी पिण्ड देखें होंगे। पिण्ड हमेशा वृत्ताकार संरचना ही लिये होते हैं। वृत्ताकार संरचना का तात्पर्य ही दीर्घायु से है। क्योंकि लुढ़कती हुई गेंद किसी भी तत्व से ज्यादा लिप्त नहीं होती है। शिव लिंङ्ग पर कितना भी आप दुग्ध समर्पित करें कुछ भी नहीं टिकता है। तभी तो वे महामृत्युञ्जय कहे गये हैं अर्थात मृत्यु के मुख से भी खींचकर लाने वाले महादेव। क्योंकि लिप्तता नही है। लिप्तता नहीं है तो फिर व्यवस्थाओं की आवृत्तियों में फँसने का तो सवाल ही नहीं उठता। इन्हीं विचारों को वैज्ञानिकों ने जब द्वैत रूपी यंत्र अर्थात पहिये के रूप में ढाला तब जाकर मनुष्य के शरीर ने असीमित गति का साक्षात्कार किया अगर रेल का पहिया या मोटर का पहिया पटरी, रोड पर या सड़क पर चिपकने लगे तो फिर चल चुकी रेल। जिस पर आप आरूढ़ होकर गति से साक्षात्कार करते हैं उसे तो आप वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर इस प्रकार बनाते हैं कि वह लिप्त न हो परन्तु शरीर रूपी यंत्र बैठी चेतना को भी तो गति प्रदान करनी होगी। गुणवत्ता

प्रदान करनी होगी वह तभी सम्भव है जब संचय की प्रवृत्ति से लिप्तता की प्रवृत्ति से स्वयं को प्रत्येक धरातल पर मुक्त रखें चाहे वह धरातल आध्यात्मिक ही क्यों न हो। आध्यात्मिक व्यक्तित्व कहलाने वाले तो कई बार सामान्य जनों से भी ज्यादा लिप्त होते हैं। उनमें तो सिद्धि प्राप्त करने की प्रकाण्ड लिप्तता होती है। इसीलिये इनका जीवन अत्यंत ही प्रदूषित और विषैला हो जाता है यहाँ तक की कई बार ये आत्महत्या जैसे मूर्खता-पूर्ण कार्य भी कर बैठते हैं चाहे इसे वे जो भी नाम दें। प्रत्येक तत्व अपना एक विशेष जीवन लिये हैं। जीवन विशेष उसकी शक्ति पर निर्भर करता है। शक्ति में परिवर्तन उसके परमाणुओं में परिवर्तन कर देता है परन्तु परिवर्तन तो निश्चित है। प्रत्येक चक्र या व्यवस्था एक दूसरे से जुड़ी हुई है। अगर समुद्र के अंदर शक्ति केन्द्र निर्मित होता है तो फिर वह प्रचण्ड तूफान के रूप में प्रकट होकर ही विसर्जित होगा और इस विसर्जन की प्रक्रिया जैविक संरचनायें भी विसर्जित हो जायेंगी। आप अपना जीवन काल अगर बढ़ाते हैं तो फिर प्रकृति के प्रचण्ड स्वरूपों को भी झेलना पड़ेगा। गेंहूँ की फसल एक मौसम की बात है परन्तु वटवृक्ष को तो सैकड़ों बार प्रकृति की प्रचण्डता के साथ-साथ शुष्कता एवं शक्तिहीनता को भी देखना पड़ेगा। यह आप तभी झेल पायेंगे जब जड़ें अंदर तक विकसित होंगी साथ ही साथ तनों से भी जड़ों का उत्पादन होगा। अर्थात आत्मिक शक्ति का विकास अत्यंत ही प्रबल होना चाहिये। ये तो प्रकृति के विषय हैं परन्तु वास्तविक जीवन में तो अनेकों मनुष्यों से, अपनों से और परिवार से भी अनेक प्रकार के उत्पात आपकों झेलने पड़ेंगे। उनके प्रहार झेलने के लिये आपको सतर्क रहना पड़ेगा नहीं तो फिर कोई और गोली इजाद करनी पड़ेगी जो इन प्रहारों से भी आपकी रक्षा कर सके। सांप या अन्य जहरीला जंतु आपको जीवन में कभी डसे या न डसे परन्तु मनुष्य रूपी विषैले प्राणी से आप कैसे बचेगे जो हर समय आपको अपने विष भुझे आलोचना, अपशब्द, द्वेष, ईर्ष्या इत्यादि रूपी अस्त्रों से प्रहार करने को सदैव तत्पर रहता है। आप जिस व्यवस्था में रह रहे हैं उस व्यवस्था से निकलने की कोशिश करने पर आपकी टांग खीचने वालों की कमी नहीं होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य यंत्र नहीं है। जब यंत्र नहीं है तो फिर नट-बोल्ट या बेल्डिंग के द्वारा आप उसे ज्यादा लम्बे समय तक जिंदा कैसे रखोगे। सीधी सी बात है समाज को ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिसमें कि मनुष्य के मस्तिष्क में विष का निर्माण कम से कम हो सके। उत्पन्न हो रहे विष को निष्कासित करने की प्रक्रिया भी मौजूद हो तभी लम्बा जीवन सम्भव हो सकता है। कृष्ण ने शरीर60 वर्ष धारण किया। बुद्ध भी 70 वर्ष के आसपास पृथ्वी पर चलायमान रहे आदि गुरु शंकराचार्य मात्र 36 वर्ष, ईसा भी 36 से 40 वर्ष के बीच एवं विवेकानंद भी 40 वर्ष के आसपास। किसी ने भी 100 वर्ष की आयु प्राप्त नहीं की। आप कल्पना करके देखिये अगर गाँधी 100 वर्ष जी लेते या फिर पैगम्बर मोहम्मद 100 वर्ष रुक जाते तो फिर स्थिति क्या होती। यहाँ पर गुणवत्ता ही प्रधान तत्व है। विलक्षणता को आप उम्र या काल के बंधन में नहीं बांध सकते। पूजा तो सिर्फ क्षण भर की होती है। क्षण के उस हिस्से की जिसमें आपके और ईष्ट के बीच कुछ भी नहीं होता यहाँ तक कि विचार भी नहीं। बाकी समय तो मात्र उस क्षण को प्राप्त करने की प्रक्रिया है। सवा लाख मंत्रों के जाप में एक लाख मंत्र तो केवल आपके अंदर मौजूद विचार, व्यथा, दुख और काम रूपी ताप में अंकुरित होने से पहले भुन जाते हैं। बचे हुये पच्चीस हजार मंत्रों में से केवल 5 ही अंकुरित हो पाते हैं और सब तो विभिन्न कारणों से अकाल मृत्यु प्राप्त कर लेते हैं या हो सकता है उनका उच्चारण ही सम्पूर्ण न हो। यही स्थिति मनुष्य के जन्म के समय भी होती है। लाखों शुक्राणुओं में से मात्र एक ही स्त्री के डिम्ब से संयोग कर सृष्टि क्रम को आगे बढ़ाता है। आप अपने जीवन की लाखों श्वासें ऐसे ही बस ले रहे होते हैं। दिव्य क्षण परिवर्तनकारी क्षण तो बिरले ही होते हैं। 24 घण्टों में से 10 घण्टे आप जीव रात्रि के रूप में व्यतीत करते हैं। बचे हुये 13 घण्टे अन्य दैनिक कार्यों में। इसके पश्चात् एक घण्टा जो बचता है उसमें से अगर आप कुछ क्षण निकालकर स्वयं के करीब पहुँचते हैं तभी आप दीर्घजीविता प्राप्त कर सकते हैं एवं मनुष्य रूप में जीवन व्यतीत करने का वास्तविक आनंद प्राप्त कर सकते हैं। आदि गुरु शंकराचार्य जी ने श्री यंत्र को सृष्टि क्रम में पूजित करने का विधान बताया। सृष्टिक्रम का तात्पर्य उस पूजन से है जिसमें कि बीज से वृक्ष बनने की प्रक्रिया निहित है। अर्थात श्री रूपी अमृतमयी शक्ति को अपने अंदर इस रूप में स्थापित करना कि वह कालान्तर अमृतमय कल्पवृक्ष बन सके और इस कल्पवृक्ष से अमृतमयी फल पैदा होकर आपको और आपके सानिध्य में रहने वाले जीवों को सम्पूर्ण आयु प्राप्त करा सके। आपके घर में एक फलदार वृक्ष लगा हुआ है। पड़ोसी अगर बार-बार आपसे फल मांगता है तो आप उसे दें परन्तु इसके साथ ही उसे उस फलदार वृक्ष का एक बीज भी दे दें। जिसे वह अपने घर में लगाकर स्वयं भी फल खाये और औरों को भी प्रदान कर सके। यही सृष्टि क्रम का तात्पर्य है। बीज तो बांटना ही होगा जब-जब आप ग्रहण करते हैं शरीर के अंदर ताप बढ़ता है। आप दृश्य देखते हैं, ताप का निर्माण होता है। अगर यह ताप या शक्ति निष्कासित नहीं होती है तो फिर समस्यायें बढ़ जाती है। ग्रंथियों की क्रिया ग्रहण करने पर ही प्रारम्भ होती है। यौन चिंतन ग्रहण करते ही यौन ग्रंथियाँ सक्रिय हो जाती है अन्यथा उनका कार्य सामान्य ही रहेगा। बुद्धि तो पिण्ड स्वरूप है। उसमें जो कुछ ग्रहण करके डालोगे उसी हिसाब से कार्य करेगी। उसे कार्य करने के लिए कुछ न कुछ बाहरी ऊर्जा की आवश्यकता तो होगी इसीलिये तीन स्थितियाँ पैदा होती है सुबुद्धि, कुबुद्धि और तीसरी अति

महत्वपूर्ण निर्विकार स्थिति। निर्विकार स्थिति भी वास्तव में एक व्यवस्था ही है परन्तु अत्यधिक श्रेष्ठ व्यवस्था इसमें ताप सदैव नियंत्रित रहना है। ताप, पाप और शाप दोनों का जन्मदाता है। जितना ज्यादा आप निष्कासन करेंगे ऊर्जा के किसी भी प्रकार का उतना ही जीवन रोग और शोक मुक्त होगा। जिन लोगों को सामान्य रूप से सर्दी जुकाम होता है वे कैंसर जैसी बीमारी से ग्रसित नहीं होते। कारण अल्पकालीन ज्वर, सर्दी-जुकाम, शरीर के सभी चक्रों को एक बार पुन: शुद्ध कर देता है परन्तु वर्षों तक शुद्ध न हो पाने की स्थिति में गम्भीर स्थितियाँ पैदा हो जाती है। दो स्त्री अगर घर में लड़-झगड़ रही हैं तो सामान्य बात है परन्तु अगर छ: महीने तक आपस में कहा सुनी नहीं हुई है तो समझ लो कि सातवें महीने में निश्चित ही भयानक भूचाल आने वाला है। व्यवस्था ही कुछ ऐसी है। हम जब जन्म लेते हैं तब एक भी मनुष्य निर्मित संसाधन हमारे साथ नहीं होता है। वस्त्र का एक टुकड़ा भी नहीं। परन्तु जन्म लेने के पश्चात् ही समस्त मानव निर्मित वस्तुयें, यंत्र सभी कुछ हमसे चिपकते जाते हैं और मृत्यु तक सभी यंत्र, सभी वस्तुयें हमारा पीछा नहीं छोड़ती हैं यही वस्तुयें, यही यंत्र हमें बड़ा परेशान करते हैं समस्त समस्याओं की जड़ यही सब हैं। इन्हीं के अनुसार हम अपने मानसिक स्तर को, शारीरिक आकृतियों को ढालने की कोशिश करते रहते हैं। हमारा मस्तिष्क इन सबके साथ जीने पर विवश है जो व्यक्ति दीर्घ जीवन जीते हैं वे इन यंत्रों और वस्तुओं से काफी हद तक निर्लिप्त भाव रखते हैं अन्यथा ये यंत्र हमें क्या चलायेंगे। ठीक इसके विपरीत हमारी अधिकांशत: ऊर्जा चट कर जाते हैं। आप किसी भी ऐसे व्यक्ति से मिलिये जिसकी आयु 100 वर्ष के लगभग हो वह यही कहेगा कि मैने जीवन में दवाइयाँ कम खाई हैं। अपने अंदर किसी यंत्र को नहीं लगा रखा है। मैं बहुत ज्यादा यंत्रों के पीछे नहीं दौड़ा हूँ, न ही मेरे आसपास दुनिया भर का कबाड़खाना मौजूद है।

यंत्रों की श्रृंखला कभी खत्म नहीं होती एक यंत्र खरीदो तो दूसरे यंत्र की जरूरत पड़ेगी। एक औषधि खाओं तो फिर उसके असर को कम करने के लिये दूसरी औषधि खाओं कुछ समय पश्चात् शरीर इतना ढीठ हो जायेगा कि औषधियाँ असर ही नहीं करेंगी। जैविक संरचना की मूल प्रवृत्ति यह है कि वो यंत्रों से घृणा करती हैं। आपके शरीर में अगर किसी दूसरे मानव का अंग लगा दिया जाय तो फिर उस अंग की स्वीकारोक्ती इतनी न्यून होती है कि अनेकों औषधियाँ मात्र उसे स्वीकार कराने के लिये ही सेवन करनी पड़ती है। ऐसी स्थिति में एक के बाद एक समस्यायें ही बढ़ती हैं।

हम दुर्गा सप्तशती में देवी से यही प्रार्थना करते हैं कि हे माँ मेरी गुप्त से गुप्त शत्रुओं से भी रक्षा करों। आज के युग में शत्रुता इतनी गुप्त और सूक्ष्म हो चुकी है कि नये-नये अनुसंधानों से पूरे के पूरे देश को नष्ट कर दिया जाता है। अमेरिका ने जब अपने परमाणु परीक्षणों के लिये लेटिन अमेरिकी द्वीपों को चुना तो उससे उन द्वीपों में रहने वाले निवासी बेचारे अकाल मौत से ग्रसित हो गये। ऐसी स्थिति में भी मृत्यु प्राप्त होती है। पाश्चात्य देशों द्वारा मात्र परीक्षण के लिये गरीब ऐशियाई देशों को चुना जाता है। वे गेंहूँ के साथ गाजर घास जैसे विनाशकारी बीज भेज देते हैं जिससे कि सम्पूर्ण जमीन ही बंजर होती जा रही है। उनके गुप्त परीक्षण महामारी के रूप में असंख्य लोगों की जान ले लेते हैं। उनके द्वारा भेजी गई परीक्षण औषधियाँ पूरे देश के मनुष्यों को अपंग बना देती है। लम्बा जीवन जीने के लिये आँखों के साथ-साथ तीसरे नेत्र को भी खुला रखना होगा।

अब सीधे आक्रमण के दिन तो लद गयें हैं परन्तु सम्पूर्ण संस्कृति को नष्ट करने के ऐसे-ऐसे अस्त्र विकसित हो गये हैं कि जिनमे उपग्रहों के द्वारा एक देश की सांस्कृतिक विरासत को ही पलटकर रख दिया हैं। रूस के पतन में वहाँ के शासकों की गलती के साथ-साथ पाश्चात्य देशों के इन दूरदर्शन कार्यक्रमों का भी बहुत बड़ा हाथ है जिसके द्वारा रूस जैसे साम्राज्य के लोगों की भी सोच पूर्ण रूप से परिवर्तित हो गई और बिना रक्त की एक बूंद बहाये शीत युद्ध का नायक टुकड़ों में बँट गया। सम्पूर्ण व्यवस्था ही विश्व स्तर पर बदल गयी। ऐसे आघात जीवन की सच्चाई है। आघातों को बिना झेले बंद कमरे में तो 100 वर्ष तक जीवन नहीं जिया जा सकता। बदलते स्वरूप के साथ बदलना ही दीर्घता की निशानी है जिसके अंदर स्वरूप बदलने की प्रक्रिया अत्यंत उत्कृष्ट होगी, जो कि अधिक लचीलापन लिये होगा वही दीर्घायु को प्राप्त होगा। विचारों में लचीलापन शरीर में लचीलापन एवं बुद्धि में लचीलापन स्वस्थता और दीर्घता की पहचान है। इसके विपरीत कट्टरपन, एकांगी सोच, संकीर्ण मानसिकता केवल चेहरे पर झुर्रियाँ और लाठी के सहारे चलने को ही जीवन की नीति बना देगी। आघातों को झेलने की शक्ति, जीवन में लचीलापन, विभिन्न आयामों की समझ, समग्र सोच, चिपके रहने की प्रवृत्ति से मुक्ति, उच्च श्रेणी की बौद्धिकता इत्यादि यह सब केवल आध्यात्मिक क्रियाओं के द्वारा ही सम्भव है। मनुष्य निर्मित ग्रंथों, दवाइयों, यंत्रों और विचारधाराओं से दीर्घता कभी प्राप्त नहीं की जा सकती।

एक बात स्पष्ट रूप से समझ लें वेदों के रचियता मनुष्य नहीं हैं। रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ कभी भी मनुष्य नहीं रच सकते। वे तो मात्र इन्हें ब्रह्माण्ड से ग्रहण करके गीता के रूप में आप तक संप्रेषित कर सकते हैं। इसी के साथ दीर्घ जीवन का रहस्य यही समाप्त होता है।

॥इति शुभम्॥

साधना सिद्धि विज्ञान की उपयोगिता

साधना सिद्धि विज्ञान आम पत्रिकाओं की तरह क्षणिक जीवन काल में बाधित नहीं है, इसमें वर्णित साधना पद्धति, साधनात्मक प्रयोग, लेख, स्त्रोत, दर्शन एवं विचार शाश्वत्ता के प्रतीक है। समय चक्र के किसी भी क्षण में पुस्तक में वर्णित सामग्री आपको पुरातन नहीं लगेगी। इस शपथ से साधना पब्लिकेशन समूह संकल्पित है।

साधना सिद्धि विज्ञान चिकित्सीय पत्रिका नहीं है बल्कि जहाँ चिकित्सक असमर्थ हो जाते हैं उससे ऊपर की आवृत्ति में साधना एवं सिद्धि का कार्य क्षेत्र शुरू होता है। साधना सिद्धि विज्ञान का प्रत्येक अंक माह, वर्ष एवं शताब्दि में बँधा हुआ नहीं है। आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा प्रचारित बहुआयामी, ब्रह्माण्डीय एवं दैवीय शक्तियों की उपासना एवं उनका सानिध्य ही इस पुस्तक की विशेषता है।

आने वाले दस वर्षों में सद्गुरु डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के अलावा हमारी धर्म भूमि में प्रतिष्ठित प्रत्येक ऋषि-मुनि, देवी-देवता, महापुरुष एवं अवतारो स्वरूपों के साथ-साथ वेद, तंत्र, अनुष्ठान, योग इत्यादि-इत्यादि की अनुभूतो आपको इस पत्रिका में मिलेगो।

प्रत्येक दिव्य शक्ति को प्राण प्रतिष्ठित करना साधना पब्लिकेशन समूह का शिव संकल्प है। व्यक्तिगत विकास से ही सामूहिक विकास सम्भव है। सद्कर्म, शिव शक्ति उपासना, यंत्र, तंत्र और मंत्र में पारंगतता, वेद ज्ञान, पूजा पद्धति, अनुष्ठान, हवन और सबसे ऊपर गुरु कृपा के समायोजन से ही मस्तिष्क के साथ-साथ शरीर की गुणवत्ता निर्मित होती है। द्वैत एवं अद्वैत का समन्वय ही गुणवान वेद युक्त नर नारियो की पहचान है।

"साधना सिद्धि विज्ञान" वर्ष 1, अंक 2, दिसम्बर 1999 पृष्ठ संख्या 80

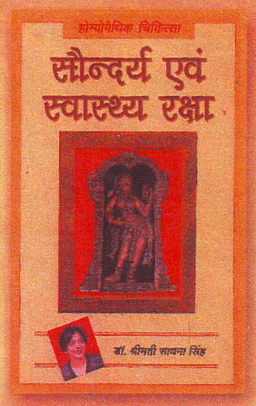

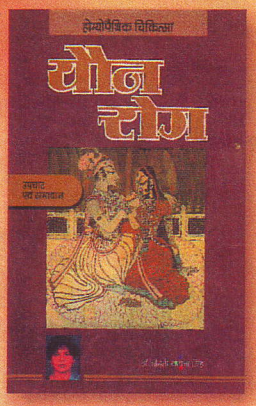

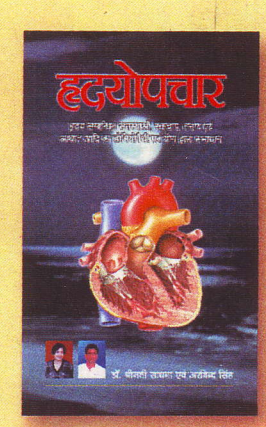

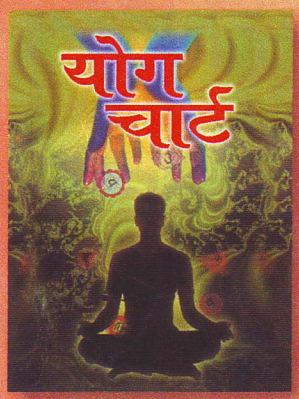

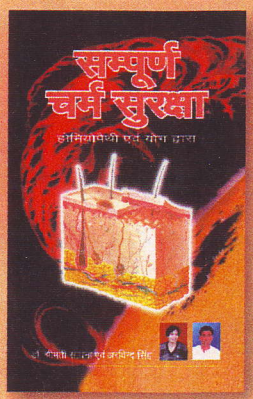

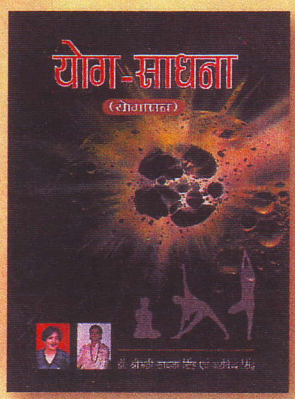

लेखक डॉ. श्रीमती साधना एवं अरविंद सिंह

सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य रक्षा	मूल्य 85 रुपये
यौन रोग	मूल्य 80 रुपये
सुदृढ़ एवं सुगठित पाचन संस्थान	मूल्य 65 रुपय
हृदयोपचार	मूल्य 65 रुपये
योग चार्ट	मूल्य 35 रुपय
सम्पूर्ण चर्म सुरक्षा	मूल्य 65 रुपये
योग साधना	मूल्य 160 रुपये

अपने नजदीकी पुस्तक विक्रेता से खरीदें या हमें लिखें

साधना पब्लिकेशन

शॉप नं. 3, प्लाट नं. 210, नफीस कॉम्पलेक्स, एम. पी. नगर, जोन-1, भोपाल-462 001 दूरभाष : 576346

नोट : वांछित पुस्तकों के मूल्य के साथ डाक व्यय 20/- अतिरिक्त भेजें।

PRINTED BY : SAHYOG OFFSET. PH. : 551868, 555573.